Published by
S. R. Suneja
Navketan Publications
New Delhi.

Hindi Translation of the Rice Sprout Song by Eleen Chang
published in English by Charles Scribner's Sons, New York
(Published with the permission of the author and Publishers).

अध्याय १

कस्बे में घुसते ही पहले-पहल जो इमारतें दीख पड़ती हैं वे बिल्कुल एक-जैसी सात-आठ छप्परदार टट्टियों की एक कतार हैं। हवा में कभी-कभी हल्की दुर्गन्ध का झोंका आ जाने पर भी वे सुनसान नजर आती हैं। उन की सफेद फूस की छतों पर तीसरे पहर की हल्की धूप चमक रही है।

टट्टियों के बाद दूकानें हैं। इन छोटी सफेद दूकानों की इकहरी कतार के ऊपर से पीछे की गहरे रंग की पहाड़ी दीख पड़ती है जिसके ऊपर कुहरे से ढकी नीले रंग की दो दूरस्थ चोटियां हैं।

गोल पत्थरों से जड़ी सड़क के दूसरी ओर जमीन क्रमशः ढालू होती हुई एक गहरे खड्ड में मिल गई है। सारी सड़क के साथ-साथ उस ओर पत्थरों का एक मुंडेर बनी है। एक स्त्री गन्दे पानी से भरा लाल तामचीनी का बर्तन लिए एक दूकान से बाहर आई और सड़क पार कर उसने वह पानी मुंडेर के दूसरी ओर फेंक दिया। यह काम उसने कुछ ऐसे दिल बहलाने वाले ढंग से किया मानों वह सड़क के किनारे पर नहीं, बल्कि दुनियां के किनारे पर खड़ी होकर गन्दा पानी फेंक रही हो।

प्रायः सभी दूकानों की मालकिनें दुबली-पतली और डरावनी शक्ल वाली गहरे पीले रंग की स्त्रियां थीं जिनके बाल कन्धों तक लम्बे थे और जिनके

सिरों पर चमकीले गुलाबी रंग की उनकी बुनी टोपियां थ । ये टोपियां उनके माथे पर भौंहों तक आई हुई थीं और उनसे बांयें कान पर मोर के रंग के ऊन के फूल लटक रहे थे । यह बताना मुश्किल था कि यह कहां का फैशन था । चीनी संगीत-नाटकों के डाकुओं की टोपियों के साथ उनको काफी खलने वाली समानता थी । एक दूकान में तिल पापड़ी और पत्थर की तरह सख्त काली तिल की मिठाइयां बिक रही थीं । इनके अलावा दूकान में दो तरह के छोटे-छोटे पैकेट भी मिलते थे जो बिना कुछ लिखे सादे सफेद कागज में लिपटे हुए थे । एक आदमी आया और उसने एक पैकेट खरीदा । पैकेट को उसने वहीं खोला और उसमें रखी हुई चीज को खाना शुरू कर दिया । इसमें छोटी-छोटी पांच तिल पापड़ियां थीं । दूसरे पैकेटों में तिलपापड़ियां नहीं तो तिल की लम्बी शक्ल की मिठाइयां रही होंगी ।

दूसरी दूकान में मोटे-पीले टायलट पेपर बिक्री के लिए रखे थे । दरवाजे के पास कांच के एक शो-केस में टूथ पेस्ट और दांत के मंजन के पैकेट रखे थे । इन सब पर चीन के फिल्मी सितारों की रंगीन तस्वीरें थीं । उनकी मुस्कराती हुई तस्वीरें, जो सुनसान सड़क की ओर देख रही थीं उस स्थान के वीरानेपन को और भी बढ़ा रही थीं ।

मुर्गियां काली मिट्टी में जड़े हुए सड़क के सफेद गोल पत्थरों पर अदा कदम रखती फ़िर रही थीं । एक आदमी कन्धे पर बंगी रखे, (जिसके दोनों सिरों पर टोकरियां लटक रही थीं) आया और वह भी काले तिल की मिठाइयां बेचने लगा ।

एक मोमबत्ती की दूकान भी थी जो सभी जगह होती है । इसमें लालटेनें भी बिकती थीं । छत की कड़ियों में लाल मोमबत्तियों के बड़े-बड़े गुच्छे उंगलियों की किस्म के अजीब फलों की भांति लटक रहे थे । अगली दूकान बिल्कुल खाली थी, सिर्फ एक छोटी लड़की एक मेज के पास बैठी ए

चमकीले हरे रंग के किरोसिन के टीन का हत्था घुमा रही थी जिससे उसके भीतर से घर की बनी सिगरेटें तैयार होकर निकल रही थीं।

सड़क के आर-पार धूप बिखरी हुई थी, मानों कोई बूढ़ा पीला कुत्ता रास्ता रोके पड़ा हो। धूप भी यहां बूढ़ी-सी हो गई थी।

एक राहगीर स्त्री ने, जिसके पांव लोहे के चीनी जूते में जकड़े हुए थे, फेरीवाले को रोका और उससे तिलपापड़ी के दाम पूछे। इसके बाद उसने उसे गौर से देखा और जोर से चिल्ला उठी, "अरे पद्मसम्भव, तुम यहां कहां? तुम्हारे मां-बाप कैसे हैं? और सब लोगों का क्या हाल-चाल है? तुम्हारी वह चाची तो अच्छी तरह से हैं?"

वह आदमी पहले भौंचक्का-सा रह गया। लेकिन तभी उसे ख्याल आया कि वह स्त्री उसकी चाची की रिश्तेदार है। उसे याद आया कि उसने उसे अपने दादा के अन्तिम संस्कार में देखा था। वह एक छोटी-सी औरत थी और उसका चेहरा भी छोटा, अन्दर धंसा हुआ, लाल और झुर्रीदार था और धूप में सुखाये हुए शकरकन्दी के गोल चकत्ते की भांति बाहर की ओर मुड़ा हुआ-सा लगता था। सिर पर उसने पुराने फैशन की पगड़ी पहनी हुई थी जो उसके माथे पर तिकोनी मेहराब बना रही थी। वह हमेशा ऐसे देखती, मानों उसकी आंखें धूप से चौंधिया रही हों और इतने जोर से बात करती, मानों मैदान के उस पार से बोल रही हो।

"मौसी, आज तुम्हारा इस कस्बे में कैसे आना हुआ?" उस आदमी ने पूछा।

"मैं अपनी भानजी के साथ यहां आई हूं," बुढ़िया ने ऊंची आवाज में कहा, "उसकी चोऊओं के गांव में एक चोऊ से शादी हो रही है। आज ही जिले के सरकारी दफ्तर में उनकी शादी दर्ज होगी। बेचारी के मां-बाप दोनों ही चल बसे हैं। सिर्फ एक भाई बचा है। उसकी भाभी भी काम के

सिलसिले में शहर चली गई है। इसलिए भाई के सिवाय यहां कोई नहीं है। और, तुम जानते हो, चोऊ लोग बड़े आदमी हैं और वे सभी आज आने वाले हैं। अगर हमारी तरफ से बहुत कम आदमी हों तो बड़ा भद्दा लगेगा। इसी से आना पड़ा।"

उसकी तरफ क्षण भर मुस्करा कर देखने के बाद उसने फिर कहा,"कैसा अच्छा संयोग है, जो तुम्हारे साथ इस प्रकार भेंट हो गई। हम अभी यहां आये थे और सड़क के किनारे की सराय में अपने पांवों की थकान मिटा रहे थे। मैंने उन दोनों से कहा कि तुम यहीं रहो और मैं देखकर आती हूं कि क्या चोऊ गांव के लोग यहां पहुंचना चाहते, क्योंकि दुलहिन का बहुत उत्सुक दीख पड़ना अच्छी बात नहीं होगी।

"क्या दूल्हा यहां पहुंच गया है ?"

"वह यहां आ चुका है। मैंने कुछ चोऊ लोगों को जिले के सरकारी दफ्तर के दरवाजे की सीढ़ियों पर बैठे देखा है। अच्छा जाऊं। उन्हें देर तक प्रतीक्षा में रखना भी अच्छा नहीं होगा। और तुम भी अपना धन्धा देखने के बजाय सारे दिन यहां खड़े बातें न करते रहो। तुम्हारा धन्धा तो अच्छा चल रहा है ? तुमने मिठाई की क्या कीमत बताई ?"

इस बार आदमी ने उसे कीमत बताने से इन्कार कर दिया। उसने मिठाई की दो डंडियां उठाकर जबरदस्ती उसके हाथ में थमा दीं और कहा, "लो, इन्हें लेती जाओ।"

उसने नाराजगी-सी दिखाते हुए उन्हें लौटा दिया और कहा, "नहीं, नहीं, यह तुम्हारी बेजा बात है। मैंने यहां वर्षों बाद तो तुम्हें देखा है। तुमसे मैं इस तरह कोई चीज कैसे ले सकती हूं ?"

"किन्तु यह तो कुछ भी नहीं है मौसी !"

"नहीं, नहीं, यह नहीं हो सकता। इसके अलावा मेरे दांत भी तो नहीं हैं, फिर यह मिठाई मेरे किस काम आयगी ?"

"बच्चों के लिए घर लेती जाओ।"

"नहीं, नहीं, अभी इसे वहीं रखो।"

इस तरह बार-बार उन दोनों में इस हाथ से उस हाथ जाने से वह चिपचिप। चमकीले काले रंग की मिठाई, जिस पर कहीं-कहीं सफेद रंग भी था, उस आदमी के हाथ में गलने लगी। जब उसके हाथ चिपचिपे हो गये तो वह कुछ नाराज और उत्तेजित-सा हो गया और उसके लिए मुस्कुराते रहना कठिन हो गया। वह अपनी इच्छा के विरुद्ध सिर्फ एक फर्ज अदा कर रहा था और उसे वह पूरा निभाना चाहता था।

अन्त में मिठाई उस स्त्री के हाथ में पहुंच ही गई। उस आदमी के अधिक उत्कृष्ट सौजन्य से परास्त हो कर उस वृद्धा ने मानों दुःखित हृदय से उससे विदा ली और मुड़कर चल दी। उसके पीठ फेरते ही मुस्कान भी उस आदमी के चेहरे से गायब होकर बुढ़िया के चेहरे पर चली गई। वह आदमी उदास और थका-सा चेहरा लिए अपनी बहंगी उठा कर चला गया और वह स्त्री भी प्रसन्नता से अपने आप में मुस्कराती हुई धीरे धीरे चली गई।

वह दुकानों और टट्टियों के पास होती, कस्बे के छोर को पीछे छोड़कर सड़क के किनारे यात्रियों के लिए बनी सफेद पुती हुई सराय में घुस गई।

"अच्छा बताओ, आज मेरी किससे मुलाकात हुई" उसने दूर से ही चिल्लाकर कहा, "तुम मेरी चचेरी बहन को जानते हो जिसने आड़ू घाटी गांव में शादी की थी? मैंने यह मिठाई बेचने वाला एक आदमी देखा और वह रिश्ते में उसका भतीजा निकला। बहुत वर्षों से मैंने उसे नहीं देखा था। अचंरज के मारे मेरे मुंह से तो उसका नाम तक निकलना मुश्किल हो गया।"

"अच्छा; पर क्या चोऊ लोग यहां पहुंच गये हैं?" उसके भानजे स्वर्णमूल ने अधीरता से पूछा। वह दहलीज में खड़ा उसकी प्रतीक्षा कर रहा

था। वह लम्वा-तड़ंगा जवान था ; मजबूत हाड़, सुन्दर चेहरा और पीली मिट्टी का-सा रंग। उसकी रूईदार जाकट में से जो पुरानी हो जाने से घिस कर पतली हो गई थी और जिसका नीला रंग भी हल्का पड़ गया था, उसके कन्धे उभरे हुए दीख पड़ते थे।

"वे आ गये हैं, मैंने उन्हें देखा है, वे आ गये हैं।"

"तो अब हम चलें ?" सुवर्णमूल ने अपनी वहन स्वर्णपुष्प की ओर, जो दुलहिन बनने वाली थी, मुंह फेर कर कहा।

स्वर्णपुष्प ने शायद उस की वात सुनी नहीं। वह उसकी ओर पीठ किये वैठी थी और अपने रूमाल को थूक में भिगो रही थी, ताकि वह सुवर्णमूल की छोटी वच्ची के, जिसे वे अपने साथ लाये थे, हाथ साफ कर सके। वच्ची बड़ी उद्विग्न हो रही थी, क्योंकि उसे यह समझ नहीं आ रहा था कि वे यहां क्यों रुके हुए हैं। वह वेंच पर कभ, चढ़ती कभी उतरती और पंखे के आकार वाली खिड़की को हाथ लगाने का प्रयत्न करती, जिससे उसके हाथ विल्कुल मैले हो गये थे। बाद में यह निश्चित था कि वह वुआ की सारी नई पोशाक पर धूल मल देती। उसकी वुआ ने सुर्ख रंग क. छींट का रूईदार सूती चोंगा पहन रखा था और इसी चोंगे से उसे दूसरे दिन अपने विवाह संस्कार में विवाह की पोशाक का भी काम लेना था।

अपनी वहन से कोई उत्तर न पा सुवर्णमूल असहाय-सा उसकी ओर देखता रहा। हाथ उसने पीछे की ओर अपने नितम्वों पर रखे हुए थे।

वड़ी मौसी हाँफती हुई सराय में आई। "तुम आते क्यों नहीं ?" वह चिल्लाई।

"आओ चलें," सुवर्णमूल ने अपनी वहन से कहा, "दकियानूसी मत वनो।"

"दकियानूसी कौन है ?" पीठ फेरे हुए ही उसने कहा, "पर तुम वड़ी

मौसी से बैठने और कम से कम दम लेने के लिए तो कहो। वे इतनी दूर आने-जाने से थक गई होंगी।"

"आ जाओ, आओ," बड़ी मौसी ने कहा, "शरमाओ मत। आजकल क्वांरियों के लिए शरमाने का रिवाज ही नहीं रहा।"

"शरमाता कौन है?" कह कर स्वर्णपुष्प चिढ़कर उठ खड़ी हुई और आगे-आगे होकर शहर की तरफ चल पड़ी। उसकी आयु यद्यपि अठारह वर्ष की थी तो भी अपनी बच्ची की-सी चंचलता के कारण वह उससे छोटी मालूम होती थी। उसका एक दाँत थोड़ा-सा आगे निकला हुआ था, जिसने उसके दोनों होंठ अलग-अलग रहते थे, पर वह इतना आगे निकला हुआ नहीं था कि उसकी आकृति खराब लगती। उसके बाल सामने की ओर उठे हुए थे, लेकिन उनकी एक पतली झालर-सी माथे पर लटक आई थी और ऐसा लगता था कि बाल उसकी आंखों के आगे आ जाते हैं जिससे वह निरन्तर तिरछी निगाह से देख रही थी और कुछ परेशान-सी प्रतीत होती थी।

वह अपने इस छोटे-से जुलूस के आगे-आगे थी और वह वृद्ध स्त्री उनके पीछे-पीछे इस कदर सटकर चल रही थी, मानों उन्हें भय था कि वह किसी भी क्षण भाग जा सकती है। अपनी छोटी बच्ची को गोद में लिए सुवर्णमूल उनके पीछे-पीछे चल रहा था। जिले के सरकारी दफ्तर के नजदीक आ जाने पर वृद्ध महिला अनायास ही सुवर्णपुष्प के पास आ गई और उसके कोहनी पकड़ कर उसे अपने पीछे पीछे ले चली, मानों भावी दुलहिन की आंखों पर पट्टी बंधी हुई हो।

"बड़ी मौसी, यह दकियानूस छोड़ो, वह खुद चल सकती है," सुवर्णमूल ने कहा।

"दकियानूसी! दकियानूसी!" बड़ी मौसी गुनगुनाई, "इन नये लोगों के आने से पहले मैंने ये शब्द कभी नहीं सुने थे।"

जिले के सरकारी दफ्तर के सामने बेंचों और फर्श पर बैठे लोगों में हलचल मच गई। "वे आ गये ! दुलहिन आ गई !" यही कानाफूसी उन लोगों में होने लगी। कुछ लोग सुवर्णमूल का अभिनन्दन करने के लिए मुस्कराते हुए आगे आये। पचास वर्ष से अधिक आयु की एक वृद्ध महिला, जो बहुत चतुर प्रतीत होती थी और दूल्हे की विधवा माता थी, आगे बढ़कर बड़ी मौसी के पास आई और दोनों हाथों से उन्हे पकड़ लिया और बोली, "माफ करना बहन, तुम्हें इतनी दूर से चलकर आना पड़ा।" दूल्हा कुछ दूर खड़ा था और धीमे-धीमे मुस्करा रहा था। दुलहिन पर सीधी निगाह किसी की नहीं थी, हालांकि यह नहीं कहा जा सकता कि उसे कोई देख नहीं रहा था। वह कुछ मुस्कराई, किन्तु सम्भवत: किसी खास व्यक्ति को देखकर नहीं; और फिर उसने निरुद्देश्य इधर-उधर देखा।

अभिवादन का रस्म हो चुकने पर वे सब अन्दर गये। उनमें कानाफूंसी के स्वर में यह विवाद चल पड़ा कि कानपू अर्थात् साम्यवादी पार्टी के स्थायी सदस्य के पास, जो सरकारी दफ्तर का कर्त्ता-धर्त्ता था, कौन जाय और उसे अपने आगमन के प्रयोजन की सूचना दे। स्वभावत: वर पक्ष को तरजीह मिलनी चाहिए और संयोग से वर की मां की आयु भी दोनों पक्षों के लोगों में सबसे अधिक थी। किन्तु उसने आग्रह किया कि यह मर्द का काम है और सुवर्णमूल को ही जाना चाहिए। लेकिन सुवर्णमूल भी अपनी इन्कारी पर डटा रहा। अन्त में दूल्हे का सबसे बड़ा भाई उन सबका प्रवक्ता बन कर अधिकारी के पास गया। अपना काम बताने के बाद वे सब एक डैस्क के चारों ओर जमा हो गये और कानपू ने उपयुक्त फार्म निकाल लिया। लोगों ने वर-वधू को आगे कर दिया और वे सिर झुकाए डैस्क के सामने खड़े हो गये।

"तुम्हारा नाम क्या है ?" कानपू ने नौजवान से पूछा।

"विपुलेश चोऊ।"

"तुम कहां के रहने वाले हो ?"

"चोऊ गांव का।"

"तुम किससे विवाह करना चाहते हो ?"

वह हल्की आवाज में तेजी से बोला, स्वर्णपुष्प तान से।"

"तुम उससे शादी क्यों करना चाहते हो ?"

"क्योंकि वह काम कर सकती है।"

यही सवाल जवाब स्वर्णपुष्प के साथ भी दोहराये गये। यह पूछे जाने पर कि "क्यों तुम उससे शादी करना चाहती हो ?" उसने वही निश्चित उत्तर दिया, "क्योंकि वह काम कर सकता है"। यह उसे पहले से रटा दिया गया था। अगर कोई और उत्तर दिया जाता तो और पूछताछ होती और एक मुसीबत उठ खड़ी होती।

वर और वधू ने फार्मों के निचले हिस्से पर अपने अंगूठों के निशान लगाये और तब उन्हें कानूनन विवाहित घोषित कर दिया गया लेकिन जब तक उनकी पुराने ढंग से भी, जिसके वे अभ्यस्त थे शादी नहीं हो जाती तब तक वधू को अपने मायके में ही रहना था। सरकारी दफ्तर के बाहर चोऊ और तान ने एक दूसरे से विदा ली।

"कल की दावत के लिए जल्दी आना," दूल्हे की मां ने बार-बार बड़ी मौसी तान से कहा।

"अब तुम जल्दी घर चली जाओ और कुछ आराम करने की कोशिश करो। कल तुम्हें बहुत व्यस्त रहना है," बड़ी मौसी ने कहा।

चाहे लोगों से अलग होकर चारों तान दृश्य देखते हुए धीरे-धीरे कस्बे से होकर निकले। स्वर्णपुष्प बिल्कुल चुप थी और छोटी बच्ची का हाथ पकड़े थी। वे लोग कस्बे के एक मात्र होटल के पास से गुजरे। यह होटल ऊंचा और लकड़ी का बना था, जिसमें एक ऊंची छत वाला कमरा था, जो

सामन की तरफ बिल्कुल खुला था। लकड़ी पर रोगन नहीं था और वह धारीदार तथा चमकीले नारंगी रंग की थी। अन्दर के हिस्से में कुछ-कुछ अन्धेरा था, जहां धूल से भरे सूअर के मांस के वासी टुकड़े और ताजा सूअर के मांस के वड़े-वड़े टुकड़े छत की कड़ियों से लटके हुए थे। उनके अलावा करारे और क्रीम के समान मटमैले रंग के सोयावीन के दूध से बने पनीर के टुकड़े, लम्बी सफेद गोभी और हल्के पीले रंग की मांस भरी हुई मछलियों की सूखी आंतें भी भोजन खाने वालों के सिरों के ऊपर लटक रही थीं।

दरवाजे के एक दम साथ मिट्टी की भट्टी के सामने, जिस पर सफेदी पुती थी, रसोइयां अपनी जगह वैठा था। लेकिन भट्टी का मुंह वाहर की ओर था। एक वड़ी काली कढ़ाई में वड़ी नजाकत से वह सेवइयां और दूसरी चीजें डाल रहा था। उससे ऐसी सी-सी की आवाज उठ रही थी जैसी कि समुद्र के किनारे उतरते हुए ज्वार के समय लहरों से उत्पन्न झाग से उठती है। एक नवयुवती डाक के हरकारों की-सी हरी पतलून पहने सड़क पर झुकी हुई थी और भट्टी में लकड़ियां झोंक रही थी।

वच्ची दरवाजे के पास आकर खड़ी हो गई और वहां से उसने हिलने का नाम भी नहीं लिया। जव स्वर्णपुष्प ने उसे परे खींचना चाहा तो वह चीखकर रो पड़ी और पीछे की ओर जोर लगाते हुए करीव-करीव जमीन पर लेट ही गई।

"रोओ मत," वृद्ध महिला ने कहा, "कल तुम्हें वहुत अच्छी-अच्छी चीजें खाने को मिलेंगी। कल तुम्हारी वुआ की शादी होगी और हम उसकी दावत में चलेंगे। हम सुअर का मांस खायंगे, मछली खायंगे; किन्तु अगर तुमने चिल्लाना वन्द नहीं किया तो हम तुम्हें साथ नहीं ले चलेंगे।"

किन्तु इससे भी वच्ची डरी नहीं। यह एक परेशानी में डालने वाला दृश्य था, क्योंकि उस समय रसोइया होटल के भीतर से उन्हें देख रह था

और भट्टी के सामने बैठी पतलून वाली लड़की भी उनकी ओर देखने लगी थी। सुवर्णमूल बच्ची को उठाने के लिए झुका और लातें चलाती और जूझती बच्ची को परे ले गया। वह तेजी से शहर से बाहर आ गया। पप्पू सुबक-सुबक कर रो रही थी।

"रोओ मत," प्यार से उसने कहा, "तुम्हारी मां घर आने वाला है। वह तुम्हारे लिए खानों को अच्छी-अच्छी चीजें लायगी। अपनी मां की याद है, न ?"

पप्पू की मां शंघाई में धाय का काम कर रही थी किन्तु कई मास पूर्व उसने सुवर्णमूल को लिखा था कि वह अपने मालिक को नोटिस देकर जमीन पर काम करने के लिए घर आ जायगी। भूमि सुधारों के बाद सुवर्णमूल अब जमीन का मालिक बन गया था। किन्तु चूंकि शहर में वह जो पैसा कमा रही थी उसकी उन्हें अब भी आवश्यकता थी, इसलिए वह गांव लौटना टालती जा रही थी। सुवर्णमूल अपनी बच्ची से चाहे जो कहे, परन्तु इसमें संदेह था कि उसकी पत्नी नव वर्ष के दिन घर में उपस्थित हो सकेगी।

उन्होंने बच्ची का नाम आह चाओ या पप्पू रखा था। आह चाओ नाम चाओ ती का संक्षिप्त रूप था। दोनों नाम भाई को सम्बोधन करने के लिए प्रयुक्त होते हैं। ये नाम इस आशा से रखे गये थे कि शायद इनके पुकारने पर उसके बाद उनके घर में लड़के का जन्म हो। किन्तु उनकी मां की अनुपस्थिति के कारण उसके ये नाम पिछले कुछ वर्षों से सार्थक नहीं हो रहे थे।

"रोओ मत पप्पू, रोओ मत," सुवर्णमूल धीमे-धीमे उससे कहता रहा, तुम्हारी मां शीघ्र ही घर आ जायगी और तुम्हारे लिए अच्छी-अच्छी चीजें लायगी।"

इसका भी उस पर कोई प्रभाव पड़ता दिखाई नहीं दिया। किन्तु उस

दिन शाम को उसने उसे स्वर्णपुष्प से यह पूछते सुना, "बुआ जी, अम्मा घर कब आ रही हैं ? पिता जी कहते हैं, अम्मा जल्दी ही आने वाली हैं।"

यह सोचकर सुवर्णमूल बहुत शर्मिन्दा हुआ कि वह अपनी पत्नी के बारे में सोचता हुआ पकड़ा गया है और उसकी बहन यह समझेगी कि वह अपनी पत्नी के वापस आने के बारे में बहुत आतुर है। यह सांझ के भोजन के बाद की बात है, जब कि वह कमरे की ओर पीठ किये दरवाजे में खड़ा अपना लम्बा पाइप पी रहा था।

तभी उसने अपनी बहन का उत्तर सुना, "हां, तुम्हारी अम्मा घर आ रही है। तुम्हारी मां आ जायगी तो तुम मुझे भूल जाओगी।" वह कुछ दुःखी-सी प्रतीत हुई।

सोने के लिए बिस्तर में लेटने के बाद सुवर्णमूल ने देखा कि उसकी बहन के कमरे में बत्ती अब भी जल रही है।

"बहन, स्वर्णपुष्प, जल्दी सो जाओ," उसने कहा, "कल तुम्हें तीन आर चलना पड़ेगा।"

"क्या तुम अभी सोये नहीं ? तुम्हें तो कल इससे दुगुना चलना पड़ेगा। तुम्हें तो जाकर लौटना भी है।"

बत्ती जलती रही। अपने कमरे में घूमते रहने की उसकी आवाज उसे सुनाई दे रही थी और उसे महसूस हो रहा था कि उसकी कोई चीज खोई जा रही है।

अध्याय २

सुबह गांव के लोग वधू को देखने के लिए सुवर्णमूल के दरवाजे के इर्द-गिर्द आकर एकत्र हो गये। स्वर्णपुष्प लोगों के प्रदर्शन के लिए बीच में बैठी थी और एक चुनी हुई वृद्ध महिला उसके बालों में कंघी कर रही थी और उसके चेहरे का शृंगार कर रही थी। वस्तुतः आज कल जब कि बाल छोटे रखे जाते हैं, बहुत कुछ नहीं करना होता और चूंकि स्वर्णपुष्प ने पाउडर और सुर्खी काफी लगा रखी थी, इसलिए उस वृद्ध महिला को उसे सिर्फ कहीं-कहीं थोड़ा-बहुत संवारना ही पड़ता था। लेकिन यह रस्म आवश्यक थी क्योंकि इससे यह शुभ कामना प्रकट की जाती थी कि वधू उतनी ही सन्तानवती हो, जितनी कि वह वृद्ध महिला है, जिसे उस अवसर पर वृद्ध महिला कहा जाता था। बड़ी मौसी इस काम के अयोग्य करार दे दी गई थीं क्योंकि वह अपना एक मात्र पुत्र युद्ध में खो चुकी थीं। उसे सैनिक अपने साथ ले गये थे और तब से उसका कोई पता नहीं था।

ठीक समय पर वधू पैदल ही तीन मील दूर चोऊ गांव के लिए चल पड़ी। एक मौसेरा भाई आगे-आगे चल रहा था और एक छोटा-सा घंटा बजाता जाता था जो वधू के आगमन की सूचना था। उसके पीछे सुवर्णमूल पप्पू को गोद में लिए हुए और एक हाथ में एक बिना जली लालटेन लिए चल रहा था, क्योंकि उसे काफी रात गये वापस लौटना था। उनके दोनों हाथ

भरे हुए थे इसलिए वधू अपना सामान खुद उठाये हुए थी। अपने अत्याधिक रूई भरे लम्बे चोंगे पहन कर गोल-मटोल-सी स्वर्णपुष्प अपने वक्ष पर एक बड़ा लाल कागज़ का नकली फूल लगाये थी, वैसा ही जैसा कि 'श्रमवीर' या कोरियाई युद्ध के लिए रंगरूट भरती करने के लिए होने वाली सभाओं में नये चुने गये आदमी लगाया करते हैं।

उनका वह छोटा-सा जुलूस जब गांव से गुजर रहा था तो घंटा लय के साथ बजता जाता और सब जगह स्त्रियां और बच्चे पुकार-पुकार कहते, "आओ, दुलहिन को देखो, आओ दुलहिन को देखो।" गांव के सिरे पर एक बड़ी भीड़ ने विदाई दी। बड़ी मौसी सामने खड़ी हो कर मंगल वचन कह रही थीं। उन्हें शादी की दावत में अपने पति के साथ जाना था।

"इसके बूढ़े मौसा कहां हैं ?" उन्होंने अपनी गर्दन घुमाकर पीछे देखते हुए कहा,

"उन्होंने वधू को विदा होते नहीं देखा।"

द्ध महाशय एक छोटी-सी पत्थर की दीवार पर बैठे थे, जिस पर दो तख्ते रखे थे। वस्तुतः यह सड़क के किनारे खुली जगह में बना एक पाखाना था। जब वधू का जुलूस पास से गुजरा तो धूप में पीठ सेकते और एक लम्बा पाइप पीते हुए उन्होंने उसकी ओर देख कर भद्रता से सिर हिलाया और मुस्करा दिये।

"बड़े मौसा, दावत में जल्दी पहुंच जाना", सुवर्णमूल ने उन्हें पुकार कर कहा।

"बस, मैं आ रहा हूं, अभी आ रहा हूं", उन्होंने उत्तर दिया।

बूढ़ा अपनी चिकनी ठोढ़ी, नाजुक अन्डाकार चेहरे, छरहरे बदन और अपने रूईदार चोंगे के ऊपर पहनी नीले काम की स्कर्ट के हवा से फूल

जानें के कारण एक लड़की-सी प्रतीत होता था। उसकी आंखें सफेद और घूरती हुई-सी थीं, जो बीमारी के कारण आधी अन्धी हो गई थीं और उन्हें ठीक तरह से देखने के लिए सिर को इस प्रकार घुमाना पड़ता था, मानों किसी को आंखें मार रहा हो।

वह और बड़ी मौसी सूर्यास्त से पूर्व चोक गांव पहुंच गये। अपने पोते-पोतियों को साथ लेते गये और पुत्र वधू को घर की देख-भाल के लिए पीछे छोड़ गये। शादी के मेहमान पहले ही दावत खाने के लिए बैठ चुके थे। वर और वधू को बीच की एक मेज पर एक दूसरे के साथ सबसे अधिक सम्मान के स्थान पर बैठाया गया था। दोनों ने अपनी-अपनी छाती पर एक बड़ा लाल फूल लगा रखा था। खिड़की से अस्त होते हुए सूर्य की रश्मियां कमरे में आ रही थीं। इस रश्मिपथ के बीच बैठी वधू गुलाबी और सफेद रंग से चित्रित चीनी मिट्टी की एक पुतली-सी नजर आ रही थी। उसे देखकर ऐसा प्रतीत होता था मानों उसमें एक अवास्तविकता और फिर भी स्थायित्व का भाव हो।

सुवर्णमूल इस परिवार का नया सम्बन्धी था, इसलिए वह दूसरी मेज के सिरे के सम्मान स्थान पर बैठा। बड़े मौसा और बड़ी मौसी तीसरी मेज पर ले जाये गये और काफी देर तक नम्रता से समझाने-बुझाने पर उन्होंने आदर का स्थान ग्रहण करना स्वीकार कर लिया। चार युवतियां इधर-उधर घूम फिर कर खाना परोस रही थीं, अवश्य ही वे घर की बहुएं होंगी। बड़ी नजाकत से बड़े मौसा अपनी चावल की तश्तरी की ओर देखते और थोड़ी देर बाद उसमें से चावल उठाकर मुंह में देते।

इस महत्वपूर्ण अवसर के लिहाज से खाना निहायत घटिया था, किन्तु दूल्हे की मां मेजबानी निभाना खूब जानती थी, इसलिए वह सब अतिथियों के पास जाती और उन्हें बताती कि क्या चीज बढ़िया बनी है और उनसे इस त्रुटि के लिए और कभी उस त्रुटि के लिए माफी मांगती। वृद्धावस्था

और पांवों के जूतों में जकड़े होने पर भी वह आश्चर्यजनक चुस्ती से चल-फिर रही थी। यह देखकर कि बूढ़ा चावल के सिवाय कुछ नहीं खा रहा था और वह भी बहुत थोड़ा, वह एक बड़ी काली और कुछ-कुछ चमगीदड़ की-सी तितली की भांति मानों पंख फड़फड़ाकर उसके पास पहुंची।

"आपके खाने लायक चीजें भोजन में अधिक नहीं हैं, मुझे सचमुच गरीबों का यह खाना परोसने के लिए बड़ी शर्मिंदगी है। पर आप कम-से-कम चावल तो भरपेट खाइये, आप खाली पेट घर नहीं जा सकते।"

उसने बारीक कटे हुए सूअर के मांस और नर्म बांस की जड़ की सब्जी की एक तश्तरी मेज से उठाई और उसे निहायत सफाई के साथ उसकी आंख बचाकर उसके चावल के कटोरे में उलट दिया। बूढ़ा नर्म स्वभाव का व्यक्ति था किन्तु नर्मी की भी तो हद होती है। गुस्से के साथ वह खड़ा हो गया और ऊंची आवाज में बोला, "मैं इसे कैसे खाऊं ? मुझे तो इसमें चावल का एक दाना भी नज़र नहीं आता ! बताइये मैं कैसे खाऊं ?"

क़िन्तु अन्त में वह शान्त हो गया और हल्की नाराजगी के भाव से सूअर के बांस और बांस की लकड़ी रसेदार सब्जी की तह के नीचे से कुरेद-कुरेद कर चावल निकालने लगा।

विवाह की दावत अभी आधी ही निबटी थी कि चाऊ गांव का कान पू भी उसमें शामिल होने के लिए आ गया। कामरेड फेई गम्भीर दीख पड़ने वाला नौजवान था। उसका चेहरा गोल, गाल फूले हुए और रंग बिल्कुल ताजा था। सुवर्णमूल के गांव के कामरेड वोंग जैसे पुराने सरकारी अफसरों की नकल में उसने भी अपनी रूईदार वर्दी को खूब मैली हो जाने दिया था ताकि यह दिखा सके कि जनता की सेवाएं अत्यन्त व्यस्त रहने के कारण उसे अपनी निज की फिक्र करने का वक्त ही नहीं है। उसके कालर के नीचे एक गहरे 'वी' अक्षर की शक्ल में तेल का चमकीला धब्बा लगा था। और पार्टी के पुराने आन्दोलनकारियों की भांति चेहरे का पसीना पोंछने

के लिए उसने अपने कमर वन्द में एक तौलिया खोंसा हुआ था। इन लोगों ने यह आदत युद्ध के दिनों में जापानी सिपाहियों से सीखी थी।

सुवर्णमूल ने भी यह आदत अपना ली थी और अपनी रुईदार पतलून पर बांधे इजारबन्द में उसने एक छोटा-सा तौलिया खोंस रखा था। इस सफेद तौलिये का सिर्फ एक जरा-सा सिरा पीठ की ओर उसकी जाकट में से निकला हुआ दीख पड़ता था, किन्तु उसे आत्मगौरव अनुभव कराने के लिए इतना ही काफी था। तौलिया उसे उसकी पत्नी ने शंघाई से भेजा था और वह अभी तक बिल्कुल नया था, क्योंकि उसने उसे इसके सिवाय किसी अन्य काम में कभी इस्तेमाल नहीं किया था। उसके नीचे चार लाल अक्षर छपे थे जिनका अर्थ था "सुप्रभात"।

सभी लोग कामरेड फेई को जगह देने के लिए उठ खड़े हुए। कुछ देर तक शिष्टाचार और तकल्लुफ चलने के बाद अन्त में बुढ़िया अपनी जगह से एक ओर को हट गई ताकि वह उसके पति के साथ मेज के सिरे पर बैठ सके। भोजन में शराब नहीं थी, किन्तु फिर भी इस जाड़े में भी कमरा असाधारण रूप से गर्म होने और खाली पेट में भरपूर भोजन पहुंच जाने से सब लोगों में तरोताजगी और कुछ-कुछ मस्ती नजर आती थी।

कामरेड फेई दोस्ताना और मिलनसार ढंग से पेश आ रहा था। वह हर अतिथि से पूछता कि उसकी फसल कैसी हुई है, इस साल उसके यहां कितना अनाज हुआ और कितना पटसन। सुवर्णमूल को फसल कटाई के दिनों में कड़ी मेहनत करने के लिए 'श्रमवीर घोषित किया था। बड़ी मौसी ने इस बात का खूब फायदा उठाया। उसकी शान देखते ही बनती थी। वह हर किसी के बारे में कुछ न कुछ टिप्पणी करती। कामरेड फेई को लक्ष्य कर उन्होंने सभी तरह की टिप्पणियां कीं जिनका मौजूदा बातचीत के साथ शायद सीधा सम्बंध न भी हो, तो भी वे हमेशा समयानुकूल और नपी-तुली थीं। "ओह, अब तो सब अच्छा ही अच्छा है! गरीब गरीब नहीं रहे हैं। अब

हालत पहले से वहुत वदल गई है। अध्यक्ष माओ न होते तो हमें यह दिन देखना नसीव न होता ! केमिन्तांग के हमारे कामरेड न आते तो कौन जान कितने दिन हमें और दुःख भोगने पड़ते !" वड़ी मासी ने गलती से कुंचान्तांग साम्यवादियों के साथ प्रारम्भिक जमाने के केमिन्तांग क्रान्तिकारियों को गड़वड़ा दिया था, जिन्होंने उस जमाने में जवकि वह एक छोटी वच्ची थी, मांचू राजवंश का शासन उलटा था। इसलिए वह वार-वार साम्यवादियों को केमिन्तांग और कभी-कभी कुओमिन्तांग, अर्थात् वे राष्ट्रवादी जिन्हें फारमोसा भगा दिया गया था, भी कह रही थीं। किन्तु उस वुढ़ापे में यह गलती क्षम्य थी और सव मिलाकर उन्होंने कामरेड फेई पर यह रोव डाल लिया था कि वह अत्यधिक प्रगतिशील वृद्धा है।

उन्होंने दूल्हे की मां को और अधिक खाने के लिए जोर दिया। वोलीं, "तुम और सव लोगों की देखभाल में वहुत ज्यादा व्यस्त हो ! तुम खुद अव तक भूखी हो !" घर की मालकिन ने जव अपनी थाली में वहुत-सा भोजन डाल लिया तो वह पप्पू से वोलीं, "ये तुम्हें कितना प्यार करती हैं ! आज रात तुम यहीं रहना, समझीं ? तुम्हारी वुआ यहीं रहेंगी और तुम उसके साथ रहना चाहती हो, ठीक है न ? कल क्या तुम इसलिए नहीं रोयी थीं कि वह तुम्हें छोड़कर जा रही है।

छोटी लड़की चुपचाप खाने में मस्त रही। उसकी काली आंखों में किसी तरह की व्याकुलता नहीं थी।

वड़ी मौसी ने उसे डराने की कोशिश की। "हम तुम्हें यहीं छोड़े जा रहे हैं। तुम अपने पिता के साथ घर नहीं जाओगी। तुम सोचती हो यह वड़ा आसान है—पेट भरा, मुंह पोंछा और चल दीं ? तुम्हें तो हमने इस घर को वेच दिया है।"

और सभी लोग हंसने लगे, और दूल्हे की मां वोलीं, "सुनती हो, अव से तुम्हें यहीं रहना पड़ेगा। तुम अव अपने घर नहीं जाओगी।"

वच्ची ने कुछ भी नहीं कहा। अगर उसे छ संदेह और भय हुआ भी होगा तो कम से कम उसने उनका कोई चिन्ह प्रकट नहीं किया। लेकिन भोजन समाप्न होने पर वह सुवर्णमूल के पास गई और उसके आस-पास ही फिरने लगी, उसे उसने आंखों से ओझल नहीं होने दिया।

असली तमाशा दावत के वाद शुरू हुआ जब कि मेहमान नवविवाहित दम्पती के साथ दुलहिन के कमरे में गये और उसे परेशान करने को सभी तरकीवें करने लगे। पुराने जमाने में यह सचमुच ही तमाशा होता था, जवकि औचित्य के अधिकतर नियम शिथिल कर दिए जाते और चाचों और चाचों के भी चाचों को अपने परिवार में विवाह करके आने वाली नई दुलहिन को परेशान करने की छूट होती। कहावत थी कि "इन तीन दिनों में जवान और वूढ़े में कोई अन्तर नहीं होता।" किन्तु आम तौर पर दूसरे दिन ही फिर सामान्य स्थिति लौट आती।

उस समय ऐसा लगा, मानो गांव के सरकारी अफसर की उपस्थिति के कारण लोग तमाशा करने में हिचकिचा रहे हों। किन्तु कामरेड फेई स्पष्टतः चाहता था कि सव लोग खूव मनोरंजन करें और इसमें वह कभी-कभी सवका नेतृत्व भी करता। आहिस्ता-आहिस्ता अतिथियों की झिझक दूर हो गई और किस नेजोर से कहा "हम चाहते हैं दूल्हा और दुलहिन एक-दूसरे का हाथ पकड़ें।" वड़ी मौसी दुलहिन की तरफ से वोल रही थीं, वह उसकी तरफ से वहाने-वाजी और सौदेवाजी करतीं। काफी गर्मागर्म वहस के वाद जीत मेहमानों की हुई, किन्तु दुलहिन और दूल्हा अव भी उनकी फरमायश पूरी करने के लिए नहीं हिले। इसलिए उनके हाथ पकड़कर उन्हें मिलाने का काम वड़ी मौसी को ही करना पड़ा।

इसके वाद किसी ने फरमायश की कि दुलहिन दूल्हे की गोद में वैठे और उसे "वड़ा भय्या" कहकर पुकारे। हर कोई यह वात सुनकर खूव हंसा। दूल्हे ने निरुपाय होकर कमरे से निकल भागने की कोशिश की, किन्तु उसे

पकड़कर पलंग के किनारे दुलहिन की वगल में फिर अपनी जगह पर वैठा दिया गया। इस वार इस फरमायश पर सौदेवाजी में और भी अधिक समय लगा।

जिस आदमी ने यह फरमायश की थी वह नाराजगी के स्वर में वोला, "अच्छी वात, दुलहिन मेरी वात नहीं रखना चाहती।"

"नाराज मत होओ, चाचा" वड़ी मौसी उसे उसी तरह सम्वोधित करती हुई वोलीं जिस तरह दुलहिन करती, "दुलहिन तुम्हें एक प्याला चाय वना देगी।"

"चाय कौन मांगता है।"

दुलहिन टस से मस नहीं हुई। वह उसी तरह विना एक भी शव्द वोले और मुस्कराये वहीं वैठी रही। मामला तव तक वहीं अटका रहा जव तक कि कामरेड फेईने यह सुझाव नहीं दिया कि समझौते के तौर पर वह उन्हें गाना सुनाये।

"ठीक है, ठीक है," सव लोग चिल्लाये।

वड़ी मौसी ने फिर सौदेवाजी की और एक गाने पर समझौता करा दिया। अन्त में सुवर्णपुष्प मेज के पास खड़ी हो गई और दीवार की ओर मुंह कर उसने पा लु यानी प्रसिद्ध आठवीं सेना का जिसकी वीरता के कारण आम लोग सभी साम्यवादी सैनिकों को उसी सेना का सिपाही समझने लगे थे, प्रमाण गीत सुनाया।

"एक और, एक और!" कामरेड फेई ने ताली वजाते हुए कहा और वाकी सवने भी उसकी इस मांग का समर्थन किया।

"अच्छी वात है, क और सही। किन्तु उसके वाद दुलहिन को कुछ आराम करने दिया जाय। अव काफी वक्त हो गया है और शायद हम सवके लिए भी घर जाने का समय हो गया है।"

अतिथियों ने कोई वायदा नहीं किया। किन्तु अन्त में दुलहिन को हार माननी पड़ी और इस वार उसने अपनी फटी और हल्की आवाज में "हे ला ला" गीत गाया जो उसने कुछ ही समय पूर्व "शरत् कालीन स्कूल" में सीखा था।

"हे ला ला ला !
हे ला ला ला !
लाल मेघ छाये गगन में, आ या !
लाल कुसुम खिले उपवन में, आ या !"

कामरेड फेई ने आगे बढ़कर उस की वाहें पकड़ लीं और बोला, "इधर श्रोताओं की ओर मुंह करो।"

जब उसने उसका हाथ झटक कर परे कर दिया तो उसने उसे फिर पकड़ लिया और एकाएक हंसने लगा। उसकी हंसी बड़ी विकट और स्पष्ट थी और उसमें एक आश्चर्य की ध्वनि थी। थोड़ी देर तक उससे अपने आपको छुड़ाने की चेष्टा करते हुए दुलहिन ने उसे जोर से मेज पर धक्का दे दिया जिसकी टक्कर से चाय का एक प्याला फर्श पर गिर पड़ा और चकनाचूर हो गया।

"सुइ-सुइ पिग-आन ! तुम्हारा हर वरस सुखकर और सुरक्षित हो," बड़ी मौसी तुरन्त ही, मानों स्वचालित यन्त्र की भांति 'सुइ' शब्द पर, जिसका अर्थ "तोड़ना" भी है, श्लेष करती हुई बोलीं।

कामरेड फेई कुछ देर तक हक्का-बक्का-सा दिखाई दिया, मानों निश्चय न कर पा रहा हो कि क्या रवैया अपनाये। उसका क्रोध स्पष्ट रूप में प्रकट होने से पूर्ण ही बड़ी मौसी बोल उठी "अरे, भला वहू इतनी गुस्सैल क्यों है ? यह सब तो हंसी-मजाक में हो रहा था ! तुम जानती नहीं हो, विवाह के दिन लोग जितना हंसी-मजाक करेंगे उतनी ही तुम्हारी खुशहाली बढ़ेगा ?

तुम्हारी किस्मत अच्छी है कि कामरेड फ़ेई तुम्हारी तरह बचपन नहीं करते। यदि वह तुम्हारी हरकतों को गम्भीरता से लें तो वह सचमुच नाराज हो सकते हैं।"

इसके बाद वह सास की ओर घूम कर बोली, "नाराज मत हो, बहन। हमारी लड़की के मां-बाप बचपन में ही मर गयें और इसीलिए जैसा कि तुम देख रही हो, वह तौर-तरीका किसी से नहीं सीख सकी। अब से उसे तौर-तरीका सिखाना तुम्हारा ही काम है। पर इस बार उसे माफ कर दो, मेरी बात रख लो। कामरेड फेई क़ी भांति उसे क्षमा कर दो, वह बेचारे जरा भी नाराज नहीं हैं।"

फेई अपनी टोपी सीधी करता हुआ ज़रा-सा मुस्कराया।"इस दुलहिन का मिजाज सचमुच ही गर्म है। दूल्हा जरा संभलकर रहे। नहीं तो उसे जरूर ही उसके तलुए सहलाने पड़ेंगे।" यह कहकर वह हंसा।

यह घटना वहीं खत्म हो गई, किन्तु सास का चेहरा अब उतर गया था। उनके परिवार को सारे अतिथियों के सामने शर्मिन्दा होना पड़ा था। प्रत्यक्ष रूप से दुलहिन को दोष नहीं दिया जा सकता था, किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि सारा दोष वह अपने ऊपर ले आयी थी। यह भी डर था कि कान पू भविष्य में कभी उनसे इसका बदला ले। निःसन्देह सास उस समय कुछ कह नहीं सकती थी, क्योंकि यह दुलहिन का घर में पहला दिन था। किन्तु वातावरण में खिचाव पैदा हो गया और जल्दी ही अतिथियों का जमाव खत्म हो गया।

पप्पू को गोद में लेकर सुवर्णमूल बड़ी मौसी और बड़े मौसा और उनके पोते-पोतियों के साथ घर चल पड़ा। चांद निकला हुआ था, इसलिये उन्होंने अपनी लालटेनें नहीं जलाई। जब गांव काफी दूर पीछे छूट गया और वे सुनसान खेतों में से गुजर रहे थे, सुवर्णमूल बूढ़े से बोला, "वह कामरेड फेई भला आदमी नहीं है।"

वृद्ध ने गहरी सांस लेकर कहा, "दुनियां में हमेशा अच्छे और बुरे दोनों किस्मों के आदमी होते हैं।"

बुढ़िया तसल्ली देती हुई बोली, "वह बेचारा अकेला होगा। गांव का कान पू साल भर में कभी भी घर नहीं जा पाता। इसके बाद उसने कहा, "और वह स्वर्णपुष्प की सास—वह सुघड़ स्त्री मालूम होती है पर मुझे लगता है, शायद कुछ तेज मिजाज की है।"

"इसकी आजकल कुछ चिंता नहीं—स्त्रियों की असोसियेशन जो बन गई है," स्वर्णमूल ने कहा।

"हां, सो ठीक है, स्त्रियों की असोसियेशन जरूर है। और अब बहुओं की असोसियेशन बनाने की भी चर्चा है" बड़ी मौसी ने, जो स्वयं सास थीं कड़वी मुस्कराहट के साथ कहा, "आजकल सास बनना आसान बात नहीं है।"

कुछ देर सोचकर सुवर्णमूल बोला, जो हो, यह सब गांव के कान पू पर निर्भर है।"

वृद्ध युगल ने इस पर कुछ नहीं कहा। उन सबको झाड़ू घाटी गांव की उस स्त्री का मामला याद आ रहा था जो तलाक की मांग कर अपने सास ससुर के क्रूर व्यवहार की शिकायत करने गई थी। गांव के कान पू ने जो पुराने दकियानूसी ख़यालात के कारण नये विवाह नियमों को बहुत गम्भीरता से नहीं लेता था, उसे एक पेड़ से बांधकर पीटा।

पुरानी सरकार ने पहले लोगों को इस प्रकार का प्रचार करके खूब डराया था कि साम्यवादी शासन में कई-कई व्यक्ति एक ही पत्नी का उपयोग करेंगे, नैतिक सदाचार शिथिल हो जायगा और तलाक आसानी से होने लगेंगे। इसलिए इस कान पू ने जो कदम उठाया, उससे लोगों को भरोसा हो गया था कि पुरानी परम्पराएं कायम रहेंगी। निःसन्देह तलाक की मांग करना एक अत्यन्त अनुचित कार्य था किन्तु लोगों का यह भी खयाल था कि कान पू द्वारा उस

स्त्री के वापस घर भेज दिए जाने पर उसके सास-ससुर ने भी उसे रस्सी से बांधकर और पीट-पीट कर तीन मोटी वेंतें उसके वदन पर तोड़कर कुछ ज्यादती ही की थी। उसका ख्याल था कि एक वेंत ही उसके वदन तोड़ना काफी होता।

पोते-पोतियों के दल में से एक छोटा वच्चा चलते-चलते फिसलकर पगडंडी से दूर जा पड़ा और रोने लगा वूढ़ा-वूढ़ी उसकी टांग मसलने के लिए गए और सुवर्णमूल पप्पू को लिए हुए जो उसकी गोद में सो गई थी, आगे आगे चलता रहा। सिर के ऊपर चन्द्रमा चमक रहा था, ताजे छिले हुए कमल डोडे की भांति सफेद और शीतल ; और निरभ्र नीरंग काला आकाश एक विशाल निर्जन प्रदेश की भांति उसे चारों ओर से घेरे हुआ था। टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडी अंधेरे में जरा-जरा दीख रही थी। रास्ते के दोनों ओर नीचे के खेतों में जहां-तहां छोटे-छोटे और मानो नीचे की ओर झुके हुए मकान थे जिनमें विना दफनाये तावूत पड़े थे। जो लोग अपने परिवार के मृत व्यक्तियों को, खर्च उठाने के असमर्थ के कारण दफनाना स्थगित कर देते थे वे उन्हें रखने के लिए ये छोटे-छोटे घर वनाते जिनकी लम्वाई-चौड़ाई वड़ी नहीं होती और जिनकी छतें वाकायदा काली खपरेल से छतें और दीवारें सफेद चूने से पुती होतीं। अत्यन्त सादे होने के कारण ये घर खिलौनों जसे नहीं दीख पड़ते थे। खेतों के वीच में वे कुत्तों के लिए वनाये गये घरों की तरह खड़े थे।

वह अभी आधा रास्ता भी तय नहीं कर पाया था कि उसका सारा खाना हजम हो गया और उसे फिर भूख लगने लगी। इस वक्त भूख वुरी नहीं लगती थी, पेट विल्कुल खाली और हल्का अनुभव होने से उसे ऐसा प्रतीत होता था मानों वह आसानी से सिर नीचे और पांव ऊपर कर चल सकता है और चांद के चारों ओर दौड़ने का खेल खेल सकता है। उसे पेट के इस अतल गड़े पर कुछ आश्चर्य हो रहा था जिसे वर्ष के वाद वर्ष निरंतर घोर श्रम करके भी वह भर नहीं सकता था।

पप्पू एकाएक बोली, "पिता जी, क्या हम अभी घर नहीं पहुंचे ?"

"मुंह बन्द करो, हवा बहुत तेज चल रही है। खूब अच्छी तरह बन्द कर लो।"

घर की ओर, जो उसके लिए अन्धकार और सन्नाटे के सिवाय और कुछ नहीं था, बढ़ते हुए उसे अपनी पत्नी की पहले हमेशा से अधिक याद आने लगी। अभी चोऊओं के यहां दुलहिन को परेशान करना देखकर उसे अपने विवाह का वही दृश्य याद आ गया था। मेहमानों ने तमाम बंधी-बधाई फरमायशें की थीं, बल्कि उनकी फरमायशों की इन ग्राम लोगों की फरमायशों से अधिक ऊबा देने वाली थी, शायद इसलिये कि उसकी दुलहिन असाधारण सुन्दरी थी। यही नहीं, अन्त में लोगों के चले जाने के बाद भी कुछ लोग खिड़की के नीचे खड़े होकर उनकी बातें सुनने और नव विवाहित जोड़े को डराने के लिए पटाखे छोड़ने के लिए वहीं रुक गये थे।

लोग हमेशा कहा करते थे कि उसकी पत्नी उन सबमें सबसे सुन्दर है। और जब वह बहुत लम्बे अरसे तक शहर में अकेली रही तो शायद उन्होंने यह भी सोचा हो कि उसके लिए चिन्तित होना स्वाभाविक है। शहर में काम करने के लिए जाने वाली स्त्रियां अकसर अपने पतियों को कुछ धन देकर उनसे तलाक की मांग किया करती थीं। जो हो, कम से कम उसने इस सम्भावना की बात कभी नहीं सोची थी। इसका कारण चाहे अत्याधिक विश्वास हो, या अत्याधिक भय या और कुछ, किन्तु यह सही है उसके विचार उस जगह तक पहुंचने से पहले ही रुक जाते थे।

शायद वह उससे अधिक चिन्तित था जितना कि वह महसूस करता था, और उसे उस पर बहुत अधिक समय तक हैरानी भी होती रही थी, इसीलिए उसे अपनी पत्नी की घर लौट आने की बातों से भी पूरा विश्वास नहीं हुआ था। उसके जाने के बाद से ही वह अपने आप पर शर्मिन्दा था। वह सोचता,

मैंने जरा-से पैसे के लिए उसे अपने से दूर भेज दिया है। उन्निद्र रातों में कितनी ही बार उसने सोचा था कि वह भी अवश्य उससे घृणा करती होगी और उनके सम्बन्ध शायद पहले के-से फिर कभी न होंगे।

उसका ख्याल हर समय उसके भीतर इस तरह जलता रहता था, मानों वह अपने दोनों हाथों को मिलाकर उनके भीतर एक छोटी-सी हल्की ज्वाला लिये हुए हो और उसकी लपलपाती लौ उसकी हथेली को जला रही हो। आखिरी बार उसकी उससे जो भेंट हुई थी, उसे वह किसी भी तरह याद नहीं करना चाहता था। यह उन दिनों की बात है जब कि सिपाही सब जगह लोगों को पकड़ कर मोर्चे पर भेज रहे थे और नौजवानों के लिए देहात सुरक्षित नहीं था। इसलिए वह काम की तलाश और अपनी पत्नी से भेंट के लिए शंघाई गया। इससे पहले वह देहात से बाहर नहीं गया था। इसलिए उसे बड़ी विचित्रता और झिझक महसूस होती रही, बहुत बड़ा शहर है, पहाड़ों की तरह ऊंची इमारतें हैं और सवारियों की प्रचंड दौड़-धूप है, और हर कोई उसे देखकर या तो उसका मजाक बना रहा है या उस पर हंस रहा है। जीवन में पहली बार उसका ध्यान अपने घुटे हुए सिर और बिना माप के अत्याधिक तंग कपड़ों की ओर गया। उसने अपने ठहरने के लिए एक चचेरे भाई का घर खोज निकाला, जो एक गली में चौकीदार का काम करता था। दोपहर बाद हर रोज वह अपनी पत्नी चन्द्रगन्धा से मिलने उसके मालिक के घर चला जाता। जब उसे समय मिलता तो वह रसोईघर में आ जाती और दोनों बाहर के द्वार की ओर मुंह कर चिकनी मेज पर आमने-सामने बैठ जाते। वह गांव के सब लोगों के बारे में और पास-पड़ोस के देहात के अपने रिश्तेदारों के विषय में पूछती और वह फीतों में लिपटी अपनी उंगलियों से आगे की ओर झुककर और अपने घुटने चौड़े फैलाकर सामने की ओर देखते हुए हल्की मुस्कान के साथ उत्तर देता। बातचीत बिल्कुल नीरस होती, किन्तु फिर भी उन्हें किसी न किसी तरह उसे जारी रखना ही पड़ता, क्योंकि हर वक्त कोई न कोई उनके आसपास होता और उनका बिना बातचीत किये

मुंह बंद रख कर पास-पास बैठा रहना भद्दा प्रतीत होता। उसे बहुत बातें करने की आदत नहीं थी, उसे लगता मानो जीवन में कभी भा उसने इतनी बातें नहीं कीं।

सीमेंट के फर्शवाली रसोई का दरवाजा बाहर गली में था। जब तक वह शंघाई में रहा, अक्सर वर्षा होती रही इसलिए चन्द्रगन्वा उसके छाते को सुखाने के लिए खोल कर चिकने दीखने वाले गहरे लाल रंग से पुते छोटे दरवाजे पर लगी छोटी लकड़ी की छड़ों पर उसका हत्था फंसाकर लटका देती। नारंगी रंग के मोमजामे का छाता उस हल्के अन्धेरे में अस्त होते सूर्य की भांति बड़ा और चमकीला होता था। लोग रसोई घर में आते रहते और वह बातें बन्द कर उनकी ओर देख कर मधुरता से, और ऐसा लगता मानों क्षमा प्रार्थना के भाव से, मुस्करा देती। जब-तक वह उठती और लोगों को गुजरने के लिए रास्ता देने को छाते को वहां से हटा देती।

किसी कारण से सभी लोग पीछे के दरवाजे का ही उपयोग करते और सामने के दरवाजे पर स्थायी रूप से ताला लगा रहता। चन्द्रगन्वा ने उसे बताया कि गली में सब घरों का यही हाल है। हीरे-जवाहरात से सजी भद्र महिलाएं अपने भड़कीले रेशमी कपड़ों और ऊंची एड़ी के सुनहरी काम के जूतों में पार्टियों के लिए जाते समय अन्धेरे रसोईघरों से ही गुजरतीं और बच्चे गोद में लिये धायें भी यहीं से भीतर-बाहर जातीं।

वह अक्सर वहीं खाना खाता। कभी-कभी जब वह खाना खाने के लिए बहुत देरी से आता तो वह नाराजगी के साथ कड़ाई में तेल डाल कर उसे ठंडा चावल तल देती। उसने उसे अपनी मालकिन के बारे में कुछ नहीं बताया, जो अब नियम पूर्वक अपने चावल और कोयले के भंडार की देखभाल करती और जोर-जोर से हैरानी जाहिर करती कि किस तेजी से सामान खत्म होता जा रहा है और इस प्रकार यह संकेत देती कि सामान की अब नई चोरी होने लगी है। मालिकों को यह बात कभी पसन्द नहीं आती थी कि

धायों के सम्बन्धी आयें और उनके पास रसोईघर में बैठें। और यदि यह सम्बन्धी धायों के पति ही हों तो उनकी यह नापसन्दगी नाराजगी में बदल जाती थी। चन्द्रगन्धा को अभी तक वह दिन याद था जब कि एक धाय ने एक रात अपने पति के साथ एक छोटे होटल में बिताई और इस बात को लेकर खूब चर्चा और हंसी हुई।

उसने सुवर्णमूल को इनमें से कोई बात नहीं सुनाई। फिर भी वह यह अनुभव किये बिना नहीं रहा कि उसकी उपस्थिति उसके लिए परेशानी और असुविधा का कारण बनी हुई है। एक पखवाड़े के बाद जब वह कहीं भी काम पाने में असफल रहा तो उसने उससे कहा कि वह घर लौट रहा है। उसके दिये हुए पैसे से वह रेल का टिकट खरीदने गया। उसकी यात्रा बिल्कुल व्यर्थ सिद्ध हुई, उसकी पत्नी के परिश्रम से उपार्जित धन का अपव्यय यात्रा। जो पैसा बचा उससे उसने अपने लिए सिगरेटों का एक पैकेट खरीद लिया। ऐसा करने का खयाल उसके दिल में यों ही आ गया और इस के लिए उसने कोई सफाई नहीं दी।

गाड़ी पर सवार होने से पूर्व वह आखिरी बार उससे मिलने गया। वहां उस समय कुछ लोगों के भोजन की दावत में आने की आशा की जा रही थी और भोजन में बतख का शोरबा परोसने का अयोजन किया गया था। चन्द्रगन्धा रसोईघर में एक पुराने दान्तों के बुरुश से बतख के दुर्गन्ध भरे उजले नारंगी रंग के जालीदार पांव साफ कर रही थी। वह पास की बेंच पर अपनी पोटली रखकर नीचे बैठ गया और सिगरेट जला ली। पिछले पखवाड़े में उन्होंने अपनी बातों के सभी स्रोत खाली कर दिये थे, और अब कहने के लिए कुछ बाकी नहीं रहा था। उस नीरवता में उसे बर्तन धोने के हौज के नीचे रखे जूठन और कचरे के ढेर में आश्चर्यजनक ढंग से फड़फड़ाने की आवाज सुनाई दी।

"यह क्या था ?" उसने पूछा।

यह एक मुर्गी थी जिसे पांव बांधकर वहां डाल दिया गया था और गोश्त पकाने के वर्त्तन में जाने की राह देख रही थी।

गाड़ी म अभी कई घन्टे का देर थी । इस वीच, जाने के समय की प्रतीक्षा में वैठे रहने के सिवाय और कोई काम नहीं था। चन्द्रगन्धा ने किसी नई वात के अभाव में, वे सभी वातें जिनकी आशा की जा सकती थीं, वार-बार कहती थीं और उस से कहा था कि वह घर जाकर सवको उसकी याद दिलाये। वत्तख के पांव साफ करने के वाद उसने सेम की फलियों से दाने निकाले। तव उसे यह देखकर निहायत हैरानी हुई कि वह गलती से दाने फेंक रही है और फलियों के छिलके अपने पास रख रही है। भाग्य से उस समय आसपास कोई नहीं था और सुवर्णमूल का भी ध्यान उधर नहीं गया।

सेम की फलियां छीलने और सब्जियों की जड़ें निकालने के वाद उसने झाड़ू से फर्श साफ किया और सारा कचरा वर्त्तन साफ करने के हौज के नीचे रखे कचरे की वाल्टी में फेंक दिया।

जव सुवर्णमूल जाने के लिये उठा तो अपने चोंगे से हाथ पोंछते हुए शून्य भाव से मुसकराती हुई वह दरवाजे तक उसके साथ गई। अपना छाता खोल कर वह पीले-भूरे रंग के सीमेंट के फर्श की गली में उतर गया जहां अव भी वूंदें पड़ रहीं थीं। उसके हृदय की हालत उसके पांवों के तलुओं से कुचली वस्तु के समान जर्जर हो रही थी। वह सोच रहा था, अच्छा होता वह कभी शहर न आता।

अध्याय ३

सुवर्णमूल पप्पू को बिछौने पर सुलाने से पूर्व पेशाव कराने बाहर ले गया। बहन स्वर्णपुष्प का विवाह हो जाने के बाद उस नन्हीं लड़की के साथ वही अकेला रह गया था, इसलिए उसको उसकी देखभाल करनी पड़ती थी। वह अभी तक इसका अभ्यस्त नहीं हुआ था ।

बाहर, ताजी ठंडी हवा उसकी नाक में सनसनी पैदा कर रही थी । सिर के ऊपर की पहाड़ी चन्द्रिकास्नात आकाश के हल्के नीले-सलेटी पर्दे पर एक स्थिर काली कली के छाया चित्र की भांति प्रतीत होती थी । सुवर्णमूल पप्पू को अपनी बाहों में झूले की भांति लिटाए हुए था । उसने अपने हाथ उसके झुके हुए घुटने के नीचे इस ढंग से रखे थे कि उसका छोटा-सा धड़ उसके शरीर से दूर नीचे की ओर लटक गया था। किन्तु उसने पेशाब नहीं किया इसलिये वह उसे पेशाव कराने के लिए 'शी-शी-शी' करने लगा। वस्तुतः पप्पू जमीन पर बैठने लायक हो गई थी, किन्तु उसने सोचा कि ठंडी हवा जमीन के पास सबसे अधिक घनी और इसलिए नुक्सान देह होती है।

कुत्ते बुरी तरह भोंक रहे थे। इधर कुछ समय से जब भी वह कुत्तों का भोंकना सुनता तभी उसे खयाल होता कि कहीं उसकी पत्नी तो नहीं आ रही। बच्चे को उठाये-उठाये ही उसने सड़क की ओर सिर घुमाया। एक लालटेन की नारंगी रंग की गोल रोशनी आहिस्ता-आहिस्ता झूलती हुई मोड़ से ऊपर की ओर आ रही थी। लालटेन पर अंकित लाल रंग का बड़ा-सा अक्षर परिचित आयताकार शक्ल का था और उसने सीख रखा था कि यह अक्षर 'चोऊ' शब्द का द्योतक है इसका अर्थ था कि चोऊ गांव से कोई आ रहा है। वह उसकी बहन नहीं हो सकती थी क्योंकि अभी कुछ दिन पूर्व ही वह घर जा चुकी थी। और यह भी सम्भव नहीं था कि वह ऐसे वक्त आये।

फिर भी वह कोई स्त्री थी और हिलती हुई लालटेन के पीछे चल रही थी। उसने बांह में फंसा कर कन्धे पर एक बड़ी सफेद गठरी लटकाई हुई थी। जब लालटेन झूलकर उसके चेहरे की तरफ गई तो उसे कुछ ऐसी चीज नजर आई जिससे वह एकदम इतनी तेजी से घूमा कि बच्ची ने गर्मागर्म पेशाब से उसका पांव भिगो दिया। क्षण भर में ही उसे नीचे उतार कर वह अपनी पत्नी की ओर सड़क पर लपका।

काफी नजदीक पहुंचकर यह निश्चय करने के लिए कि यह वही है, वह उसे पहचान कर मुस्कराई। और उसने भी मुस्कराते हुए दूर से ही कहा।

"पहले मैंने समझा था कि कोई चोऊ गांव से आ रहा है।"

"जब मैं चोऊ गांव पहुंची तो अन्धेरा होने लगा था, इसलिए मैं धीमा हो गया। वह बहन के यहां चल गई और वहां से लालटेन मांग लाई," चन्द्रगन्धा ने कहा।

"अच्छा, तुम उनके यहां गई? तुम बहन से मिली?"

"हां, उसकी सास बड़ी भली है। उसने बहुत जोर दिया कि मैं भोजन वहीं करूं। ओह बड़ी मुश्किल हुई।"

वह उसके साथ-साथ चलने लगा। उसका एक मोजा, जा भीगकर तर बतर हो गया था, बरफ की भांति ठंडा था और उसके पांव के ऊपरी हिस्से से चिपट गया था। किन्तु वह इस ठंडे अनुभव के लिए बड़ा कृतज्ञ था क्योंकि उससे सिद्ध हो गया था कि वह सपना नहीं देख रहा था।

"तुमने बहनोई को भी देखा ?" उसने पूछा।

"उसकी तबियत अच्छी नहीं थी। मैं उसके कमरे में नहीं गई क्योंकि वह लेटकर आराम कर रहे थे।"

"तबियत ज्यादा खराब तो नहीं थी, क्यों ? और बहन कैसी थी ?"

"वह मजे में है।" उसे इसमें कोई विचित्रता नहीं लगी कि इतने लम्बी समय तक एक दूसरे से न मिलने पर भी वह उसके अपने बारे में, जिसे वह अकसर देखता था, पूछ रहा था। वह जानती थी कि ऐसा क्यों है।

"क्या पप्पू सो गई है ?" उसने बातचीत का सिलसिला जमाने के लिए पूछा।

वह घूमा और पप्पू को पुकारने लगा। किन्तु बच्ची नहीं आई। उसे स्वयं जाकर उसे खींच लाना पड़ा।

"अरे, इतनी बड़ी हो गई !" चन्द्रगन्धा कुछ परेशानी के साथ हंसी। उसने उसे अच्छी तरह देखने के लिए लालटेन नीचे की। पप्पू रोने से बचने के लिए एक ओट को सिमट गई किन्तु चन्द्रगन्धा लालटेन को उसने और नजदीक करती गई। अन्त म लड़की मुड़-तुड़कर अपने पिता के हाथ से निकलकर घर की ओर भागी। चांदनी से नील-धवल आंगन उसने पार किया। घर के लोग टोकरियां बुनने के लिए जो लम्बे बांस इस्तेमाल करते थे, वे घर के सामने पड़े। उन पर से गुजरते हुए उसकी ठोकर लगने से जोर की खड़-खड़ की आवाज हुई। इस पर कुत्ते और भी जोर से भोंकने लगे।

"देखो, कहीं अन्धेरे में ठोकर मत खा जाना," चिल्लाती हुई चन्द्रगन्धा सके पीछे भागी। बांस उसके उल्टे-सीधे पड़ते पावों के नीचे फिर खड़-खड़ करने लगे। सुवर्णमूल के पुरखों के इस पुराने सफेद मकान में उन्हें विरासत में डेढ़ कमरा मिला था। उनके साथ के कमरों पर बड़े मौसा के परिवार का दखल था। उसी समय बड़ी मौसी तीखी आवाज में खिड़की के पीछे से बोलीं "सुवर्णमूल, क्या तुम्हारी बहू घर आई है?"

"हां, मैं हूं मौसी!" चन्द्रगन्धा ने उत्तर दिया, "तुम कैसी हो, बड़ी मौसी? और बड़े मौसा कैसे हैं?"

"आ हा, मैं अभी तुम्हारी ही बात कर रही थी। मैंने तुम्हारे बूढ़े मौसा से कहा था, 'आज क्या वार है? क्या बात है, वह अभी तक वापस नहीं आई।"

तेल का दिया खिड़की में लगे कागज के पीछे हिला और उसके साथ ही परछाइयां भी एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने लगीं। बूढ़ा खांसा और बच्चे रोते हुए जाग उठे।

"नहीं, नहीं, उठो मत बड़ी मौसी, बिछौने पर लेट गई हो तो पड़ी रहो चन्द्रगन्धा ने कहा, "मैं कल सुबह आकर तुम्हें नमस्कार कर लूंगी। रहस्यमय भैया की बहू का क्या हाल है?"

"मैं मजे में हूं बहन," परिवार की पुत्र वधू ने उत्तर दिया।

"हम अभी जागे हुए हैं। और मैं अभी तुम्हारी ही बात कर रही थी," बड़ी मौसी ने दरवाजा खोलते और जूते में जकड़े पांवों से बाहर आते हुए कहा। बूढ़ा भी बाहर आया, उसके हाथ में टोकरी में मढ़ी हुई बदन सेकने की अंगीठी थी, जिसमें सफेद राख के नीचे कुछ जलते हुए अंगारे थे। इससे सस्ते में ही हाथ-पांव गर्म हो जाते थे।

"अन्दर आओ और बैठो," चन्द्रगन्धा ने आग्रह किया।

इस प्रकार वे सब लोग सुवर्णमूल के कमरे में चले गये । हिरण्मय की पत्नी भी आ गई । सब लोगों के लिए वहां बैठने को काफी कुर्सियां नहीं थीं, किन्तु बड़ी मौसी ने चन्द्रगन्धा को अपने साथ बिछौने पर बैठने के लिए मजबूर किया । "हां, वह," वह कुछ हंसती-सी गहरा सांस लेकर बोली, "मैं हमेशा कहती थी, "कैसी निठुर हो गई है—गई को तीन बरस हो गये और एक बार भी नहीं आई !' इधर बच्ची इतनी बड़ी हो गई है !" उसने पप्पू को जो नीले और सफेद रंग के सूती पलंग पोश के पीछे छिप गई थी, खींच लिया । मुंह छिपा कर बच्ची पलंग के पाये से ही कसकर लिपटी रही ।

"बोलो मां," बड़ी मौसी ने कहा ।

"मां !'' हिरण्मय की पत्नी ने कहा, "कहो मां, पप्पू ।"

बुढ़िया ने बच्ची की पीठ पर एक थप जमाई और दोप देती हुई-सी बोली, "देखो तो लड़की कितनी बड़ी हो गई है," मानों उसने कोई कसूर किया हो ।

सुवर्णमूल उन लोगों की परछाइयों से अकेला-सा अजीब-सी हालत में खड़ा था । यह ख्याल उसके दिमाग में फिर लौट आया कि इस बात का स्वप्न उसने पहले भी लिया है कि एक दिन वह घर लौट आयगी और ये सब परिचित चेहरे धुंधली पीली रोशनी में उसके चारों ओर भीड़ करके जमा हो जायेंगे । कभी-कभी उसे लगता कि वह भी इस भीड़ में शामिल है और कभी-कभी लगता कि वह इसमें शामिल नहीं है, जैसा कि उस समय, जबकि बातचीत और हंसी के शोरगुल में वह अपनी बात न सुना पाता ।

बड़े मौसा अपनी अंगीठी में राख को बांस की तीलियों से कुरेदते मुस्करा रहे थे । चन्द्रगन्धा के सिर से एक फुट ऊपर एक जगह देख रहे हों, ऐसे दिखाते हुए उन्होंने उससे पूछा, "नाल शहर में कब पहुंची ?"

"दोपहर के करीब ।"

सुवर्णमूल ने सोचा, शहर से १५ मील चल कर आने के बाद इन्सान को एक घूंट पानी तो पिलाना ही चाहिए। वह अंगीठी के पास गया। आग बुझ चुकी थी किन्तु केटली में एक कटोरा भर पानी बचा हुआ था। पानी का कटोरा लिए हुए लौट कर वह कमरे में बैठे और इतने लोगों के बीच में कुछ परेशान-सा खड़ा हो गया। वह अपनी पत्नी के पास जाकर और उसे पानी देकर यह प्रदर्शित नहीं कर सकता था कि यही उसके ध्यान का एक मात्र लक्ष्य है। कुछ अजीब ढंग से वह बड़े मौसा के पास गया और उन्हें कटोरा थमा दिया: सब लोग हंस पड़े। बड़ी मौसी ने झपट कर कटोरा ले लिया और उसे चन्द्रगन्धा के पास पहुंचा कर उसे लेने के लिए मजबूर किया।

"देखो, तुम्हारे सुवर्णमूल को तुम्हारा कितना ध्यान है?" वह बोली।

सभी लोग हंस पड़े। यहां तक कि हिरण्मय की पत्नी भी, जो हमेशा उदास और दुःखी दीख पड़ती थी, इस हंसी में शामिल हो गई। उसका चेहरा लम्बा था और उसमें हड्डियां उभरी थीं। उसके नयन लम्बे और कटीले थे किन्तु उसका जीवन दुःखी था। उसे लोगों के सामने दिखावे के लिए काफी मुस्कराना पड़ता था, किन्तु उसकी मुस्कराहट हमेशा कठोर और अनिच्छापूर्ण लगती थी और जब कभी वह सचमुच खुल कर हंसती, जैसा कि वह इस समय कर रही थी, उसके चेहरे पर एक ऐसी घृणा की छाप नजर आती जो असत्य और उद्विग्न करने वाली थी।

"ये दोनों हमेशा एक दूसरे को प्यार करते रहे हैं," बड़ी मौसी ने जोरों से हंसते हुए कहा, "हमेशा एक साथ—मानों दोनों ने एक ही पतलून पहनी हुई हो। उन्हें इतने बरस तक एक दूसरे से अलग रखना सचमुच पाप है।"

"ला, बड़ी मामी की बात सुन," चन्द्रगन्धा ने शिकायत के स्वर में

कहा," कई बरस बाद यहां उनसे मुलाकात हुई है और एक दम ही उन्होंने बेकार की बात शुरू कर दी है।"

"अच्छा, अच्छा, मुझसे तंग आ गई हो, क्यों ? आओ चलें, जब हम यहां भाते ही नहीं, तो हमें ठहरना नहीं चाहिए। दोनों को घुल-मिलकर बातें करने दो।"

"हमारे पास घुल-मिल बातें करने को धरा ही क्या है ? हम नये ब्याहे तो हैं नहीं, इतनी बड़ी तो हमारी बच्ची हो गई है," चन्द्रगन्धा ने बड़ी मौसी को पकड़कर बैठाने का प्रयत्न करते हुए कहा। किन्तु बड़ी मौसी अपनी जिद पर अड़ी रही। वह कहती रहीं "आओ चलें, हम क्यों दाल-भात में मूसरचन्द बनें ?"

इस परिचित मजाक पर नम्रता से हंसते हुए सुवर्णमूल ने भी अतिथियों को रोके रखने में सहायता दी और अन्त में दबाव मानकर वे अपनी-अपनी जगह बैठ गये। छेड़-छाड़ और हंसी-मजाक बदस्तूर चलता रहा। सुवर्णमूल को लगा, जैसे उसके ब्याह की रात की तरह ही, जबकि लोगों ने दूल्हे-दुलहिन से मजाक किये थे, यह सब हो रहा है। और सचमुच उसकी पत्नी बिछौने पर ऐसी बैठी थी और उसका सिर मसहरी के दोनों पर्दों के नीचे इस तरह थोड़ा-सा झुका हुआ था, जैसे नई दुलहिन हो। उसकी सुन्दर आंखें और भौहें चित्रकार की कूची से अंकित लगती थीं, उसका चेहरा उज्ज्वल रुपहले सफेद रंग का था, नीचे कुछ चौड़ा और माथे के पास संकरा। उसे देखकर उसे लगा मानों वह एक टूटे छोटे-से मन्दिर की कोई अज्ञात देवी हो। उसे याद आया कि उसने एक उपेक्षित मन्दिर में इसी तरह की एक मूर्ति फटे और मैले पीले पर्दों के पीछे खूब नजाकत के साथ बैठी देखी थी। वह इतनी सुन्दर लग रही थी कि उसके लिए यह याद रखना भी मुश्किल हो गया कि वह उसकी पत्नी है और कितनी ही बार उसने शराब में धुत होने या जूए में पैसा गंवा आने पर उसे पीटा भी है।

चन्द्रगन्धा ने मौसम का जिक्र छेड़ दिया। सुवर्णमल को लगा कि किसी और विषय पर बात करना चाहती है। उसे यह सोचकर एकाएक टीस हुई कि शायद वह उसके बारे में और अधिक छेड़ा जाना पसन्द नहीं करती।

"इन जाड़ों में अभी एक बार भी वहां बरफ नहीं पड़ी," चन्द्रगन्धा ने कहा, "यहां देहात में क्या हाल है ?"

"इस साल बारिश बहुत अच्छी हुई," बड़ी मौसी बोली।

"अब तक बरफ पड़ी है। ?"

"जन्त्री के मुताबिक अभी बरफ पड़ने का समय नहीं आया।"

"अगर बसन्त के पहले दिन के बाद बरफ पड़ी तो बहुत बुरा होगा। और इस साल बसन्त जल्दी आ रही," चन्द्रगन्धा ने कहा।

बड़े मौसा ने थोड़ी देर तक बेचैनी भरी चुप्पी के बाद प्रतिवाद-सा करते हुए कहा, "कुछ ही दिनों में बरफ पड़ना अनिवार्य है, मेरी हड्डियों का दर्द कह रहा है।"

बड़ी मौसी ने ऊंची आवाज में कहा, "अगले साल की फसल जरूर अच्छी होगी, अब की बारिश खूब हुई है।"

"जरूरत से ही ज्यादा," चन्द्रगन्धा ने मन में कहा, किन्तु ऊपर से वह चुप रही। उसे यह बात किसी भी तरह समझ में नहीं आई कि सब लोग मौसम की तरफदारी इतने जोरों से क्यों कर रहे हैं, मानों वह उनका बेटा हो। वह निराशावादी परम्पराओं में पली थी। ईर्ष्यालु देवताओं के भय से या जमींदारों सरकारों और उनके एजेंटों के असीम शोषण से आत्म-रक्षा के लिए देहात के लोगों ने आपस में भी सिर्फ मौसम या फसल को दोष देने के सिवाय और कभी मुंह नहीं खोला। यह उनका स्वभाव बन गया है।

और वे इस वर्ष की फसल की प्रशंसा कर रहे हैं। उनके अनभ्यस्त कानों को यह सब मूर्खतापूर्ण, अविनीत और अत्यन्त रुचिपूर्ण लगा।

बड़ी मौसी ने जोर से एक गहरी सांस ली और बोली, "ओह अब तो गांवों में खूब आनन्द है ! गरीबों के दिन फिर गये हैं ! देवताओं ने भी मदद की है–ऐसी अच्छी फसल कभा नहीं हुई ! सुवर्णमूल की बहू, तुम जरा देर से आई हो, नहीं तो अपनी आंखों से अपने सुवर्णमूल को आदर्श श्रमिक बनाये जाते देखती। मंच पर वह शान से बैठा था और एक बड़ा-सा लाल फूल उसकी छाती पर लटक रहा था–हमारे परिवार के किसी लड़के की ऐसी इज्जत नहीं हुई ! जिला सरकार के कामरेड ने खुद अपने हाथों से उसकी छाती पर फूल लगाया !"

यदि किसी और को यह सम्मान दिया गया हो तो चन्द्रगन्धा की व्यावहारिक प्रकृति उसे बहुत बड़ा सम्मान न समझने देती। किन्तु अब वह पुलकित हो उठी और गर्व करने लगी उसने सुवर्णमूल पर एक नजर डाली। वह यथाचित रूप से नम्र बना खड़ा था, ऐसा दिखा रहा था जैसे इस सम्मान की चर्चाओं से उसका मन डूब गया है।

"यह नहीं कि सिर्फ इसी समय में इसकी प्रशंसा कर रही हूं," बूढ़ी मौसी बोलीं, "तुम्हारे बड़े मौसा से मैं हमेशा कहती रही हूं कि मानों या न मानो तुम सब तान लागों में होनहार लड़का सिर्फ सुवर्णमूल है।"

चन्द्रगन्धा ने मुस्कराते हुए कहा, "बड़ी मौसी के मुंह से ही यह अच्छा लगता है।" उसने उनसे जमीन के बंटवारे के विषय में पूछा। इसके बाद उन्होंने उसे बताया कि किस प्रकार जमींदार का सारा फरनीचर, सारे कपड़े-लत्ते, घर के सारे बर्तनों की एक सूचि बना ली गई थी जिससे हर कोई निकाल कर उसमें से हिस्सा ले सका। बड़े मौसा के परिवार को एक बड़ा गुलदान और एक लड़की का रेशमी चोंगा मिला और सुवर्णमल को एक बड़ा आयना।

"आयना कहां है ?" चन्द्रगन्धा ने कमरे में चारों ओर नजर दौड़ाते हुए पूछा;

"वह बहन के दहेज में चला गया," सुवर्णमूल ने उत्तर दिया।

"तुम्हें बढ़िया आयना मिला था, सर्वोत्तम किस्म का सुवर्णमूल की "व —" बड़ी मौसी ने कहना शुरू किया। किन्तु आयने का जिक्र छिड़ जाने पर हिरण्यमय की बहू को भी, जो आमतौर पर डरपोक और झिझकने वाली थी, इतना उत्साह और जोश आया कि उसने अपनी सास को वाक्य भी पूरा नहीं करने दिया।

"हां, सचमुच ही वह बड़ा शानदार था, बहन," वह उत्साह से बोली, एक इंच चौड़ा काली लकड़ी का चौखटा और उस पर स्वस्तिक का चिन्ह खुदा हुआ। दो फुट से कम ऊंचा किसी तरह नहीं होगा—"

"इससे भी ज्यादा, कहीं ज्यादा" बड़ी मौसी बोलीं।

"और जिस दिन दहेज भेजा गया, उसके कोनों पर लाल और हरे फीते बंधे हुए थे—ओह, कैसा सुन्दर था!"

अंगीठी को कुरेदते हुए बांस की तीलियों से चन्द्रगन्धा की ओर इशारा कर बूढ़ा बोला, "तुम लोगों के हाथ सबसे अच्छा माल लगा।"

"हां, सभी कहते थे कि तुम सबसे ज्यादा किस्मत वाले रहे," बड़ी मौसी बोलीं।

सुवर्णमूल ने अपनी पत्नी से पूछा, "क्यों, अभी जब तुम बहन के घर गईं, तुमने वह देखा नहीं?"

"मैं बहन के कमरे में नहीं गई, क्योंकि ननदोई साहब की तबियत अच्छी न होने से लेटे हुए थे," चन्द्रगन्धा ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया।

"किसी दिन जाकर जरूर देखना," हिरण्मय की पत्नी ने कहा।

उसने उसे अभी देखा तक नहीं और सुवर्णमूल ने उसे उठाकर बहन को दे दिया। बेशक, अगर उससे इस बारे में सलाह ली गई होती तो वह ना कभी न करती, किन्तु उससे सलाह ली तो जानी चाहिए थी। वह मुस्कराती

रही किन्तु भीतर ही भीतर नाराज थी और वात करने की उसकी प्रवृत्ति क्रमशः कम होती जा रही थी।

ठीक समय पर उसकी चुप्पी वड़ी मौसी की नजर में आ गई। "अव हम सचमुच जा रहे हैं," कहती हुई दांत निपोर कर वह खड़ी हुई, "अगर हम और रुके रहे तो हमारी पीठ पीछे हमें कोसा जायगा।"

"कैसी वात करती हो, वड़ी मौसी? कुछ देर और वैठो" कहते हुए चन्द्रगन्धा ने उसकी वांह पकड़ ली।

"नहीं, सचमुच तुम थक गई होगी। जल्दी सो जाओ। चलो अच्छा, हुआ, आखिरकार नौजवानों का जोड़ा फिर मिल तो गया। यह मिलन कोई आसान वात नहीं! उन दो तारों—ग्वाले और वुनने वाली स्त्री—की तरह जो आकाश गंगा के उस पार साल में एक बार मिलते हैं।"

मेहमान हंसी की एक नई फुहार के वीच एक-एक कर वाहर निकल गये। जव इन्हें रोकने की सव कोशिशें वेकार हो गईं तो मेजवानों ने दरवाजे तक जाकर उन्हें विदाई दी। रोशनी हल्की जल रही थी। दीये में और तेल डालने के वजाय सुवर्णमूल ने लालटेन में से एक लाल मोमवत्ती का टुकड़ा निकाला और नीले किनारे वाली एक तिड़की हुई तश्तरी में उसे जलाकर खड़ा कर दिया। यह फिजूल खर्ची थी, किन्तु वह विवाह की रातों को लाल मोमवत्तियां जलाना पसंद करता था।

दरवाजा भीतर से वन्द करने के वाद चन्द्रगन्धा ने उसकी ओर घूमकर धीमी आवाज में कहा, "मैं तुमसे पुछूं-पुछूं करती रही, किन्तु इतने लोगों के सामने पूछ नहीं सकी। यह क्या वात है कि फसल इतनी अच्छी हुई है, फिर भी वहन के घर में लोग सिर्फ चावल की लप्सी खा रहे थे?"

सुवर्णमूल कुछ नहीं वोला, वह मोमवत्ती जलाने में ही व्यस्त रहा।

"चोऊ लोग वहुत गरीव मालूम पड़ते हैं," चन्द्रगन्धा ने कहा, "हमें जोड़-जुड़ावा मिलाने वालों ने ठग लिया है।"

सुवर्णमूल अधीरता से हंसा । "जोड़-जुड़ावा मिलाने, वालों ने ठग लिया" से तुम्हारा क्या मतलब है ! यहां तो हर परिवार की यही हालत है । हम भी लप्सी ही खा रहे हैं ?"

चन्द्रगन्धा हक्की-वक्की रह गई । "पर क्यों ? इतनी अच्छी फसल होने पर भी हमारे पास चावल तक क्यों नहीं है ?"

उसने अपना सिर जोर से खिड़की की ओर झटका । अपनी बांह हिलाए बिना ही उसने उसे चुप रहने का इशारा किया । किन्तु वह सीधी खिड़की की ओर गई और उसके रोकने से पहले ही उसने धक्का देकर उसे खोल दिया । उसी समय बाहर आंगन में बांसों की खड़खड़ाहट हुई और पास और दूर सब जगह कुत्तों ने भोंकना शुरू कर दिया । चांदनी आंगन को बिल्कुल छाया में छोड़कर सफेद दीवार पर फैली हुई थी । खिड़की से बाहर झुककर उसने आंगन को अच्छी तरह देखा । वहां कोई नहीं था ।

"यह कौन था ?" उसने खिड़की बन्दकर कानाफूसी के स्वर में कहा ।

उसने ऐसा दिखाने का प्रयत्न किया जैसे कि यह मामूली बात हो । "आवारा लफंगे हमेशा ही रहते हैं, जिनके पास दूसरों की खिड़कियों के नीचे कान लगाकर सुनने के सिवाय और कोई काम नहीं होता ।"

वह जानती थी कि सांझ को दिल बहलाने के लिए लोग ऐसा किया करते थे । गाँव का जीवन नीरस था । किन्तु उसने उसकी ओर देखा और कहा, 'तब इसमें डरने की क्या बात है ? मैंने ऐसी कौन सी बात कही है जो गलत हो ?"

वह परेशान प्रतीत हुआ । "इस बारे में पीछे बात करना, समझीं । अब बिछौने पर पड़ रहो ।"

उसने उसकी ओर ताककर देखा । इसके बाद वह अपनी गठरी खोलने चली गई । उसने मोजों का जोड़ा और सिगरेटों का पैकेट निकाला जो वह

शंघाई से उसके लिए लाई थ। । उसकी आदत का जानने के कारण, उ३ ने जान बूझकर उसके लिए वही चीज़ें चुनी थीं जो वह अपनी बहन को नहीं दे सकता था । सुवर्णपुष्प के लिए वह मुंह पोंछने का तौलिया और खुशबूदार साबुन की टिकिया लाई थी । ये चाजें वह चोऊ गांव से होकर आते हुए रास्ते में ही उसे भेंट कर आई थी ।

पप्पू के लिए वह बादाम की टिकिया लाई थी । किन्तु अब वह लम्बे पैदल सफ़र के कारण खुद भूखी थी । उसने तेल के धब्बों वाला अखबार के कागज में लिपटा पैकेट खोला ।

"पप्पू, तुम मुझे नाम लेकर पुकारो," वह छोटी लड़की से बोली, "नहीं तो तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा ।"

टिकिया भुरभुरी, गोल और पुराने सोने के-से रंग की थी । पप्पू ने उन्हें अपनी दीप्तिहीन काली आंखों से अच्छा तरह परखा ।

"मुझे मां कहो । सिर्फ एक बार ।"

यह अत्याचार था, किन्तु पप्पू इस चुप्पी के आगे, जिसने उसे चारों ओर से घेरा हुआ था और जो हर मिनट अधिकाधिक बढ़ती और दुर्लंघ्य होती जा रही थी, अपने आपको विवश अनुभव कर रही थी ।

अन्त में चन्द्रगन्धा ने कहा, "अच्छा, अच्छा, रोओ मत । तुम रोओगी तो मैं तुम्हें कभी प्यार नहीं करूंगी ।"

उन दोनों ने टिकियां खाईं और एक उसने सुवर्णमूल को दी ।

"तुम खाओ," वह बोला ।

"मैं यह तुम लोगों के लिए लाई थी ।"

"पप्पू के लिए बचाकर रख लो ।"

"तुम खाओ भी । बहुत हैं ।"

वड़ी अनिच्छा से उसने वह ले ली और वड़े आत्मसंयम के साथ उसे खाया। मोमवत्ती की रोशनी में उसने देखा जिस हाथ से वह खा रहा है, वह कांप रहा है। एक क्षण तक उसके मन में विल्कुल निश्चलता छाई रही और उसके वाद उसमें क्रोध और करुणा का भाव भर गया। उसकी अनु-पस्थिति में संसार ने उसके साथ क्या किया है ?

पप्पू ने अपनी टिकिया खतम कर लीं। इस अजनवी के भय को छोड़कर और किसी भी चीज़ से वह वची खुची टिकिया अगले दिन के लिए रखने को राजी नहीं हो सकती थी। अपनी लड़की को सुलाने के लिए जव चन्द्रगन्धा ने उसके कपड़े उतारे ता वह अचरज से वोली, "अरे, इस रूईदार जाकट को देखो, इतनी फट गई और फिर भी इसकी मरम्मत नहीं की गई ! अरे राम, इतनी मैली ! और उन वटनों को देखो ! एक भी सावत नहीं !" उसके असन्तोप का लक्ष्य उसके पति की वहन थी, उसकी अनुपस्थिति में दरअसल इस तरह के काम उसी के जिम्मे थे। किन्तु वच्ची ने उसका लक्ष्य अपने आप को समझा। उसकी आंखें डवडवा आईं और उसके कांपते हुए होंठ रोने के लिए खुल गये।

"फिर रोती हो," चन्द्रगन्धा ने आश्चर्य से पूछा, "अव क्या हो गया ?" उसने उसके भीगे हुए गाल अपने मुंह से लगा लिए और वोली, "हां, क्या वात है ? वताओ मां को।"

पप्पू ने कोई उत्तर नहीं दिया। चन्द्रगन्धा ने उसे उठाकर विछौने पर डाल दिया और उसके रूईदार जूते खोल दिये। "ठण्ड नहीं लगती ? लपेटी हुई रजाई में घुस जाओ, जल्दी। मां को वताओ, क्यों रो रही हो। अभी तक उन टिकियों की वात सोच रही हो ? तो जल्दी सो जाओ ताकि कल सुवह जल्दी उठ सको और उन्हें खा सको।"

चन्द्रगन्धा विछौने के किनारे पर वैठ गई और पप्पू के कपड़े रजाई पर फैलाने लगी। सुवर्णमूल आकर उसके पास वैठ गया। उसने उसकी जाकट

के कोने में जहां सीवन उघड़ गई थी उंगली डाली और उसके कपड़े का परीक्षा करने लगा। वह सूती कपड़ा था जिस पर छोटे जामनी और सलेटी रंग के खाने बने थे और लाल रंग की धारियां थीं। वह ज़रा-सा मुस्कराया। यह बताना मुश्किल था कि उसने उसे बहुत नफीस या बहुत मंहगा समझा था। वह उससे मायूस हुआ, जैसा कि वह लगता था।

उसने अपने ठंडे हाथ उसकी जाकट की स्कर्ट में डालकर गर्म किये। इस ठण्डे स्पर्श से वह छटपटाई, "मेरी ठण्ड से जान निकल रही है!"

"ठण्ड लग रही है? तो जाओ, सो रहो।"

वह और नजदीक आ गया। अपना एक हाथ उठा कर वह उसके सिर के ऊपर आहिस्ता-आहिस्ता ले गई। उसका हाथ खुदरा था, उसकी घुटी हुई खोपड़ी के बालों के साथ वह रगड़ खाता था।

वह कानाफूंसी करती हुई बोली, "सब कहते थे, देहात में बड़ा अच्छा है, बड़ा अच्छा है, बड़ा अच्छा है। शहर अब गरीब हो गये हैं और लोगों की नौकर रखने की हैसियत नहीं रही, फिर भी वहां नौकरों को बर्खास्त करने की इजाजत नहीं है। इसलिए मेरी मालकिन हमेशा मुझसे कहती थीं, "अब देहात में बड़ा सुख है। अगर मैं तुम्हारी जगह होती तो मैं घर चली जाती और जमीन का काम करती। अब मैं महसूस करती हूं कि मुझे उसने बेवकूफ बनाया है।"

उसे इस बात का दुःख है कि वह वापस आ गई, सुवर्णमूल ने सोचा। अभी वह घर पहुंची ही है कि उसने अफसोस भी करना शुरू कर दिया है। साथ रहने का उसके लिए वह अर्थ नहीं है जो उसके अपने लिए है। वह हल्की मुस्कान के साथ बोला, "हां, इस समय देहात में जमाना खराब है। नहीं तो मैं बहुत पहले ही तुम से घर लौटने को कहता। मैं सोचता हूं, क्या तुम इसकी अभ्यस्त हो सकोगी।"

"अभ्यस्त हो सकूंगी !" उसकी आवाज गुस्से से तीखी हो गई, "तुम सोचते हो मैं शहर में आराम की जिन्दगी बिता रही थी ?" उसने उसकी ओर ताका। क्या उसे इस बात अभ्यास नहीं मिला कि शंघाई में क्या हालत थी ?

वह चुप रहा। वह और भी बहुत कुछ कह सकती थी, पर आखिरकार, यह उसका घर पर पहला दिन था। उसने नीचे झुककर पप्पू का एक रूईदार जूता उठा लिया और उसे जरा झाड़ा और फिर अपने हाथों इधर-उधर करके मोमबत्ती की रोशनी में उसकी परीक्षा करने लगी।

"बहन ने बनाये थे ?" उसने आलोचना के स्वर में पूछा।

"नहीं, उसकी नानी ने उसके लिए बनाए थे।"

"ओह," उसने सन्तोष के साथ मन में सोचा, "कोई आश्चर्य नहीं। यह उसकी बहन के हाथ का काम लगता भी नहीं।" उसके बाद बोली, "तब मेरी मां की नजर अभी खराब नहीं हुई, वह ऐसी लायक है। कल मैं मां को देखने घर जाऊंगी।"

"बेहतर है अपने ऊपर अभी—ज्यादती मत करो, वहां जाने और आने का मतलब और दस मील होगा।"

पप्पू एकाएक बोल उठी, "पिता जी, मैं भी जाना चाहती हूं।"

"अभी सोई नहीं ?" सुवर्णमूल ने पूछा।

चन्द्रगन्धा उसकी रजाई सीधी करने के लिए झुकी और उसने उसके गाल सूंघे। "झटपट सो जाओ। अगर तुम नहीं मानोगी तो मैं तुम्हें साथ नहीं ले जाऊंगी।"

किन्तु काफी समय तक पप्पू नहीं सो सकी। कमरे में बादाम की टिकियों की साक्षात् उपस्थित उसके भीतर हलचल मचा रही थी।

चन्द्रगन्धा अपने दुखते घुटनों पर मुक्कियां मारने लगी। "मुझे लगता है, मैं अधिक दूर तक घूमने की आदी नहीं हूं। अब तो बिलकुल आदत छूट गई है।"

वह खूब जोरों से हंसा, उसे चिढ़ाने का उसे एक मौका मिल गया था। और तुम कहती हो, कल तुम अपनी मां के यहां जाओगी! मैं जानती हूं तुम भी यों ही हो।

उसने अपनी जाकट खोनील शुरू की, तभी एकाएक उसे ख्याल आया कि जेब से पैसा निकाल कर गिन लूं। वह जरूर जानना चाहता होगा कि उसके पास क्या बचा है, किन्तु उसने कुछ नहीं बताया और उसने भी पूछना नहीं चाहा। बहुत ज्यादा हो भी नहीं सकता था, क्योंकि उसकी मदद के लिए प्रति मास पैसा भेजा करती थी। उसे फिर लज्जा की ताड़ना अनुभव हुई।

उसे गिनने में काफी समय लगा, मानो हिसाब ठीक मिल न रहा हो। वह उसे गिनते हुए नहीं देखना चाहता था। एकाएक वह उठ खड़ा हुआ और ट्रंकों की ओर जो रिवाजी तौर पर बिछौने के एक तरफ ठिकाने से लगाकर रखे हुए थे, चल गया।

उसने नजर ऊपर उठाई। "इस रात के वक्त तुम ट्रंक किस लिए खोल रहे हो?"

खामोशी से उसने कागज का एक बड़ा तख्ता निकाला और मेज पर उसे फैला दिया और इसकी पैसे की गिनती समाप्त होने की धैर्य से प्रतीक्षा करता हुआ उसकी ओर देखने लगा। उसके बाद उसने जमीन के कागजात उसके सामने रख दिये और मुस्कराते हुए बोला, "देखो।"

वे बड़ी सुन्दर हाथ की लिखावट में लिखे थे और उन पर बड़ी से बड़ी मुहरें लगी थीं। वह अंक पहचानता था और इशारा करके दिखाया कि कहां

उसका नाम लिखा था। रोशनी में उसके सिर एक साथ नीचे झुके हुए थे और वे उसका अध्ययन कर रहे थे।

वह बड़ी प्रसन्न हुई। उसने उसे समझाया, "यह हमारी जमीन है, बिलकुल हमारी अपनी। अभी फिलहाल हालत अच्छी नहीं है, क्योंकि लड़ाई चल रही है। जब लड़ाई खत्म हो जायगी, तब सब ठीक हो जायगा। वो दिन गुजर जायंगे। और जमीन तो हमेशा ही बनी रहेगी।"

इस प्रकार उसकी जाकट के अन्दर अपनी बाहें डाल कर और उसे अच्छी तरह चिपट कर बैठे होने पर उसकी पत्नी के लिए भविष्य की कल्पना करना जो धूप में फैले अपरिसीम धान के खेतों की भांति सुन्दर भावी पीढ़ियों तक फैला हो, आसान था और उसमें असीम धैर्य भी था।

किन्तु उसने अनुभव किया कि उसे उसकी बाहों से छुटकारा पाने के लिए कोशिश करनी पड़ेगी।

"पप्पू अभी तक सोई नहीं," उसने कहा।

"वह सो गई है।"

"अभी तो वह बातें कर रही थी।"

"वह सो गई है।" फिर वह बोला, "तुम पहले तो कभी उससे इतनी नहीं डरी।"

"तब वह बिल्कुल नन्हीं थी।"

वह उसकी गर्दन के पीछे एक काले निशान की ओर देख रहा था। इसके बाद उसने उसे छूआ और बोला, "मैं समझा था यह खटमल है।"

"नौका में बड़े खटमल थे।"

"पर यह तिल है। अरे, यह तिल तुम्हें कब निकल आया ?"

"मैं कैसे जान सकती हूं पीछे की ओर तो मेरी आंखें हैं नहीं।"

"पहले तो यह नहीं था।"

"शायद इन तीन सालों में निकल आया हो, क्या यह सम्भव नहीं ?"

वह शर्म से हंसा। "हां, ठीक है, तीन साल हो गये हैं।"

तिड़की हुई तश्तरी पर अब मोमबत्ती की सिर्फ कुछ बूंदें रह गई थीं—छोटे लाल आलुबुखारे के फूल की मोम से चिकनी पंखड़ियों जैसी। फूल के भीतर से एक पतली लौ निकल कर ऊपर उठ रही थी और हवा में कांप रही थी।

पप्पू अपनी नानी के घर बादाम की टिकिया खाने का ख्वाब देख रही थी उसके पिता और बुआ स्वर्णपुष्प भी वहां थे, और भी बहुत-से लोग थे किन्तु उसकी मां अभी तक उसके लिए इतनी अजनबी था कि उसके ख्वाब में प्रवेश नहीं कर सकती थी।

अध्याय ४

खपरैल की छत पर जमी ओस की बूंदें सुबह की धूप में पिघल रही थीं। पहाड़ी का एक बड़ा-सा काला टुकड़ा घर की छत के ऊपर लटकता-सा खड़ा था। पहाड़ी पर हर पेड़ धूप में साफ दीख रहा था। उसके तने पतली सफद लकीर जैसे लगते थे किन्तु फिर भी एक दम अदृश्य नहीं थे और सिर्फ हल्के हरे पत्ते ही स्पष्ट दिखाई देते थे, जिसमे हरेक वृक्ष पहाड़ी को छायादार गहराई पर तैरता हुए एक चपटा काई का टुकड़ा सा नजर आता था।

चन्द्रगन्धा ने ऊपर पहाड़ी की चोटी की ओर देखा, जहां छोटे-छोटे वृक्ष आकाश की पृष्ठ भूमि पर काले नजर आ रहे थे। चोटी के पास पहाड़ी गुफा की भांति बीच से कुछ सिकुड़ गई थी। वहीं एक छोटे सफेद बादल मानों घोंसला बना कर पड़ा हुआ था। पिछली रात घर की ओर लम्बा पैदल सफर करते हुए उसे वहां रोशनी दीखी था और उसे आश्चर्य हुआ था कि यह बत्ती है या कोई सितारा। यदि वहां पहाड़ी की चोटी पर सचमुच कोई मकान है तो यह सफेद बादल अवश्य रसोई का धुआं होगा। उसने सोचा निश्चय ही वह तेजी से घुल रहा है, आमतौर पर बादल जिस गति से विलीन होते हैं, उससे कहीं ज्यादा तेजी से।

कल रात अन्धेरे में घर आते हुए उसका पांव किसी गली के कुत्ते की टट्टी पर पड़ गया था। उसने अपना कपड़े का जूता एक गीले चीथड़े से पोंछा और सूखने के लिए सायवान के नीचे डाल दिया। सबसे अच्छा तो उसे शराब से साफ करना होगा, उसने सोचा पास के घर में जाकर कुछ शराब उधार मांग लाऊं। बड़े मौसा हमेशा शराब के शौकीन रहे हैं।

किन्तु तभी उसे ख्याल आया, इन दिनों जब चावल खाने का ही पूरा नहीं पड़ता तो उसकी शराब कौन खींचता होगा ? और उसने जूता उठाया और उसे गीले कपड़े से रगड़ने लगी।

कल यहां आकर जो कुछ उसने जाना, यदि उसका पहले ही उसे पता होता तो वह शंघाई में ही रह जाती और स्वर्णमूल को भी वहीं अपने पास बुलाने का प्रयत्न करती। निःसन्देह शंघाई जाने के लिए अनुमति पत्र प्रयत्न करना बहुत कठिन था। किन्तु गांव लौटते समय प्रायः दर्खास्त देने के साथ ही उसे सड़क से यात्रा का अनुमति पत्र मिल गया, क्योंकि मजदूरों को खेती के लिए जमीनों पर लौटने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा था। यही कारण है कि शंघाई की सड़कों पर बहुत कम पांव गाड़ी चालक नजर आते थे और रिक्शा खींचने वाले तो एक दम ही गायब हो गये थे। किन्तु फिर भी अगर कुछ लोग अभी तक शहर में डटे हुए थे, तो कोई वजह नहीं कि वह और सुवर्णमल भी वहां न रह सकते।

यदि अब वे दोनों वापस शंघाई, जायं, तो पप्पू को फिलहाल अपनी नानी के पास रहना पड़ेगा। वे हर मास कुछ पैसा भेजते रहेंगे और उसकी नानी इस इन्तजाम से खुश हो जायगी। किन्तु सुवर्णमूल कभी जाने के लिए राजी नहीं होगा, खासतौर से अब जब कि उसे जमीन मिल गई है। एक बार गांव छोड़ देने पर वे जमीन से हाथ धो बैठेंगे।

और यदि उन्हें शहर में रोजगार न मिला तो ? तब वह किसी गली में बैठकर नाईलोन के मोजों की मरम्मत का काम कर सकती है। शायद वह

इसके लिए आवश्यक सामान का थैला खरीदने को अपनी पिछली मालकिन से पैसा उधार ले सके। नाईलोन मोजे पहनने का शंघाई में अभी तक चलन था। या तो यह पिछला बकाया माल था या चोरी से वहां लाया जाता था। गर्मियों में जब कोइ मोजे नहीं पहनता, वह और सुवर्णमूल कहीं भी खुले कपड़े इस्त्री करने की दुकान खोल सकते हैं और अपने मुंह में पानी भर कर उसे फुहार की तरह कपड़े पर छिड़क कर इस्त्री करने का काम कर सकते हैं। उसे याद था कि पिछली गर्मियों में इन दुकानों ने अच्छा पैसा बना लिया था, क्योंकि वे नियमित लांड्रियों की दूकानों से कम पैसा वसूल करती थीं और इस जमाने में हर कोई पैसा बचाने की कोशिश करता था।

यदि और सब तरकीबें असफल हो गई तो उन्हें नई सिगरेटें बनाने के लिए सड़कों व गलिओं में फेंके हुए अधजली सिगरेटों के टुकड़े इकट्ठे करने, बिक्री के लायक चाजें इकट्ठी करने के लिए कूड़ेदान फरोलने, चढ़ाई पर गाड़ियों को चढ़ाने में मदद देने के लिए पुलों के आसपास चक्कर लगाने और कभी-कभी भीख मांगने और यहां तक कि माल बेचने वालों से खाने की चीजें छीनने का भी, जो लोगों के बटुए छीनने जैसा गम्भीर अपराध नहीं था, सहारा लेना पड़ेगा। वे सुवर्णमूल के चचेरे भाई पर, जो चौकीदार का काम करता था, इस बात के लिए जार डाल सकते हैं कि वह उन्हें अपनी गली में चटाई की झोपड़ी डालने दें। जब तक यह मालूम हो कि यह हालत अस्थाई है तब तक उसे बर्दाश्त किया जा सकता है। क्योंकि किसी भी क्षण उनका भाग्य बदल सकता है।

तभी उसे वह याद आया, जो एक दिन गली में घूमते हुए उसने देखा था। वह बाजार की ओर जा रही थी कि उसने देखा सब लोगों की निगाहें एक ही ओर हैं और वे कानाफूंसी के स्वर में कह रहे हैं, "देखो, देखो ! वे आवारागर्दों को पकड़ रहे हैं !" दो पुलिसवाले एक आदमी की बांह पकड़े उसे सड़क के किनारे खड़े एक ट्रक की ओर घसीटे लिये जा रहे थे। पुलिस वाले

१५८०

सहिष्णुता के भाव से मुस्करा रहे थे। मानो उन्हें अपने शैतान छोटे भाई से निवटना पड़ रहा हो। फटे चीथड़े पहने उनका कैदी भी, जिसके पांव धरती से ऊपर उठे हुए थे और पहले कन्धे भी ऊंचे हो रहे थे, खिसियानेपन से मुस्करा रहा था। वह उत्सुकता से उसे देखने लगी। वह जानती थी कि उसे यह जरूर पता होगा कि उसे हुएई नदी के किनारे पर चल रहे किसी वड़े काम के श्रम कैम्प में भेज दिया जायगा। वहां उसे किसी नये वांध पर कैदियों और जवर्दस्ती भरती किये गये मजदूरों के साथ कमर तक गहरे पानी में खड़े होकर काम करना पड़ेगा। उसे हुएई नदी के वारे में सब पता था। उसकी अपनी गली में ऐसी औरतें रहती थीं जिनके पतियों का बलात् श्रम से सुधार किया जा रहा था।

किन्तु यहां उसके गांव में वह सब दूर की वातें हैं। वह घर में लौट आई अपने वाल संवारने के लिए उसने आयना खड़ा करके रख दिया। उसने अपने चमकीले काले वालों पर नजर डाली जो कन्धों तक कटे हुए और आगे की तरफ फ्रांसीसी फैशन में संवारे हुए थे। यह छोटा अंडाकार आयना, जो वह अपने साथ लाई थी वहुत पहले ही ठीक वीचों वीच से टूट गया था और मोम से चिकने किये लाल ऊन के डोरे से उसके दोनों टुकड़े वांवे हुए थे। साधारणतः वह इसका कुछ खास ख्याल नहीं करती थी, किन्तु आज जव उस डोरे से वचने के लिए वह अपना मुंह कभी ऊपर और कभी नीचे करने लगी तो उसमें भुंभलाहट पैदा हुए विना नहीं रही। जव वह तान के घर में नई दुलहिन वन कर आई थी, तव से आज तक उनके घर में एक भी अच्छी दीखने वाली चीज नहीं आई। अव उन्हें एक अच्छा आयना मिला था, किन्तु वह भी सुवर्णमूल नें उठाकर दे दिया और उसे अव भी इस टूटे शीशे को इस्तेमाल करना पड़ रहा है।

"भाभी", किसी ने वाहर से पुकारा। यह हिरण्मय की वहू थी जो वाहर से झांक रही थी।

"आओ बहन, भीतर आओ बैठो।"

"सुवर्णमूल भैया कहां हैं ?"

"पहाड़ पर लकड़ी काटने गये हैं।"

हिरण्मय की बहू को तहजीब का बड़ा खयाल था, इसलिए जब उसे मालूम हो गया कि सुवर्णमूल घर पर नहीं हैं तभी वह भीतर आई।

"बाल संवार रही हो ?" वह बोली, "ओहो, तुम्हारा आयना टूट गया है।" इससे उसे तुरन्त दूसरे आयने की याद आ गई जिसका कि चन्द्रगन्धा को डर था। उसकी मुर्झाई आंखों में चमक आ गई और नीचे झुक कर काना-फूंसी करती हुई बोली, "तुम किसी दिन चोऊ गांव जरूर जाना और अपना आयना देखना। सचमुच बड़ा सुन्दर है।" सावधानी से इधर-उधर देखकर उसने अपनी आवाज और धीमी कर ली, "असल बात यह है, अगर तुम मुझसे पूछो, तुम लोग उसे अपने लिए रख सकते थे। आजकल जब अपना ही पेट नहीं भरता तो दहेज की कौन फिकर करता है ? अब तो दुलहिनें पालकी में भी नहीं जातीं। विवाह के लिए सब पैदल जाती हैं। हां, सचमुच दस मील, बीस मील, कितना भी दूर हो।" वह हंसी। अपने जीवन में वह बहुत सौभाग्यशालिनी नहीं थी, किन्तु कम से कम इस एक बात का वह गर्व कर सकती थी कि शादी के समय वह फूलों से सजी पालकी में लाई गई थी। "तुम्हारी स्वर्णपुष्प भी पैदल गई थी। इसी से कहती हूं, जमाना बदल गया है। फिर दहेज की फिकर क्यों ?"

चन्द्रगन्धा मुस्कराई। वह जानती थी हिरण्मय की बहू बड़ी भोली थी और सचमुच ही उसे उसकी तरफ से नाराजगी थी। फिर भी उसे यह बात बहुत बुरी लगी—मानों सभी जगह अनुभव करते हैं कि सुवर्णमूल का अपनी पत्नी की अपेक्षा बहन के प्रति अधिक पक्षपात था।

"बहन", बड़े प्यार से उसे सम्बोधित करते हुए वह बोली, "सचमुच जमाना बदल गया है। किन्तु तुम जानती हो, हमारी स्वर्णपुष्प जब वहां

गई तब अपनी ससुराल में वही एक मात्र बहू नहीं थी। उससे पहले जितनी बहुएं उसकी ससुराल में आईं वे सभी दहेज लाईं थीं। अगर हम उसे बिना दहेज के भेज देते तो हम भले ही कह देते कि जमाना बदल गया है किन्तु उन लोगों का शायद इससे भिन्न ख्याल होता। इससे क्या उसे मुसीबतों का सामना न करना पड़ता ?"

हिरण्मय की पत्नी ने जोर से सिर हिलाया किन्तु यह स्पष्ट था कि उसने उसकी बात समझी नहीं थी। चन्द्रगन्धा की बात खतम होने पर वह और नजदीक झुक कर उसके कान में बोली, "अवश्य ही उस समय, तुम समझती ही हो, मुझे बाहरी व्यक्ति होने के कारण कुछ कहने का हक नहीं था। और तुम भी घर पर नहीं थी।"

चन्द्रगन्धा बुरी तरह चिढ़ गई और भी ऊंची आवाज में किन्तु और भी मधुर मुस्कान के साथ बोली, "किन्तु सचमुच ही, मैं यहां थी या नहीं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैंने हमेशा ही उनसे कहा है, 'तुम्हारी एक ही बहन है। हम गरीब ही सही, पर उसका विवाह तो धूम धाम से होना चाहिए।" दुर्भाग्य से उसका विवाह इन दिनों हुआ जबकि सभी मुसीबत में हैं और हमारे पास उसे देने के लिए कोई अच्छी चीज नहीं थी।"

हिरण्मय की पत्नी हक्की-बक्की रह गई और उसे कुछ चोट भी पहुंची। उसे देने के लिए कोई अच्छी चीज नहीं थी ! इस औरत के कहने से तो लगता है जैसे उस आयने की कोई कीमत ही नहीं थी।

चन्द्रगंधा ने उससे गांव के लोगों के बारे में पूछा और वे कुछ देर तक गप-शप करती रहीं। किन्तु बात चीत थोड़ी ही देर में खतम-सी हो गई। किन्तु फिर भी हिरण्मय की पत्नी के उठने के कोई लक्षण नजर नहीं आये। जाहिर था कि उसके मन में कोई बात है।

"मेरी सास और ससुर ने मुझे तुमसे कहने के लिए भेजा है—"वह रुक-रुक कर कहने लगी और उसका चेहरा सुर्ख हो गया, "क्योंकि वे तुम्हारे

बड़े-बुजुर्ग हैं, इसी से उन्हें अपने मुंह से कहने में संकोच होता है, किन्तु—"

वे पैसा उधार लेना चाहते थे। उनकी फसल अच्छी हुई थी, किन्तु उसका बहुत बड़ा हिस्सा सरकारी अनाज देने में निकल गया था। इन दिनों सिर्फ एक ही टैक्स या उसका नाम था सरकारी अनाज, किन्तु वह बहुत भारी था। और उन्हें अपने रेशम के कोए और चाय की पत्तियां भी सरकार को कौड़ियों के भाव बेच देनी पड़ी थीं।

"और हमारे पटसन के बारे में भी हमारी किस्मत फूट गई," हिरण्मय की बहू ने कहा।

उसने बताया कि किस प्रकार बूढ़ा सहकारी स्टोर को बेचने के लिए पटसन शहर ले गया था। वह बहुत तड़के ही वहां पहुंच गया, जबकि वहां का कान पू अभी सो ही रहा था। नींद में खलल पड़ने के कारण नाराज होकर ऊंघते हुए उसने अपना सिर रजाई के भीतर से निकाला और बूढ़े से पटसन का एक तार अपने हाथ में रखने को कहा।

"घटिया किस्म का है," उसने एकदम फैसला सुना दिया।

बूढ़ा निराश होकर घर लौट आया। उसके बाद गांव के एक और आदमी ही ने उन्हें बताया कि कान पू को यह भी पता नहीं रहता कि वह किस बारे में बात कर रहा है और कभी-कभी जब अस्वीकृत पटसन दुबारा उसके पास भेजा जाता है तो वह स्वीकार कर लिया जाता है, बल्कि साधारण किस्म से भी उत्कृष्ट घोषित कर दिया जाता है।

इसलिए बूढ़ा अपनी बहंगी के सहारे पटसन के दो बड़े बंडल लटका कर फिर शहर ले गया। उस दिन सहकारी दफ्तर किसानों से ठसाठस भरा था जो अपना पटसन लाये थे और सारे कान पू बेहद व्यस्त थे। उनमें से एक माल को देखता हुआ उसके पास से गुजरा और जल्दी से बूढ़े के पटसन पर एक तिरछी नजर डाल कर और उसे ठोकर मार कर अधीरता से बोला,

"घटिया माल है, ले जाओ, ले जाओ !" और इस उद्देश्य से कि बूढ़ा फिर यही माल न ले आये, उन्होंने उसके सफेद पटसन पर बाल्टी भर लाल पानी उंडेल दिया। यह नया कानून था।

बढ़ा अपना रंग के धब्बों से भरा और चूता हुआ पटसन लेकर सहकारी दफ्तर से बाहर आया और अपना माल लेकर पुल पर बैठ गया। रात तक वह वहीं बैठा रहा और रह-रह कर आहें भरता रहा। तब उसने सुवर्णमूल को अपनी भरी हुई बंहगा कन्धे पर रखे सहकारी दफ्तर से निकलते देखा। सुवर्णमूल के पटसन पर भी लाल धब्बे पड़े हुए थे। साथ ही उसका मुंह भी लाल सुर्ख हो रहा था। पुल के ऊपर पहुंच कर उसने गुस्से में अपना माल धारा में फेंक दिया।

"क्या कर रहे हो ?" बूढ़े ने चिल्ला कर कहा, "यहां नहीं। यहां लोग तुम्हें देख लेंगे।"

एक कान पू उसके पीछे-पीछे बाहर आया था और चिल्ला कर उसे डांट रहा था, "तुम क्या समझते हो, क्या कर रहे हो ! किसे फंसाने की कोशिश कर रहे हो ?"

"मैंने उसे इसलिए फेंक दिया, क्योंकि यह माल अब बेकार हो गया था," सुवर्णमूल ने चिल्लाकर उत्तर दिया, "तुम नहीं लेना चाहते थे तो मैं उसे कहीं और बेच सकता था। किन्तु अब जब तुमने उसे लाल रंग से खराब कर दिया है, तो मैं उसे किसे बेचूं ?"

"मैं जानता हूं, तुम्हारी नियत क्या है !" कान पू ने चिल्ला कर कहा, "तुम शोर-गुल मचा कर सरकार से उसकी कीमत वसूल करने का यत्न कर रहे हो, ठीक है न ? मैं तुम लोगों को जानता हूं ! और बुड्ढे, तुम वहां क्या कर रहे हो ?" वह बूढ़े की ओर घूम कर चिल्लाया, "तुम अभी तक यहां क्यों हो ? तुम सारे दिन यहां बैठे रहे हो। तुम किसे फंसाने की कोशिश कर रहे हो ? तुम सब बदमाश हो !"

सारा किस्सा सुनकर चन्द्रगन्वा ने कहा, "सुवर्णमूल ने यह बात मुझे नहीं बतायी।"

"उसे उस समय बहुत गुस्सा आ रहा था," हिरण्मय की पत्नी ने कहा।

उसके बाद उसने उसे उस वक्त के बारे में बताया जब कि हरेक आदमी सेना के लिए जूते बनाता था—हर परिवार को पचास या अस्सी जोड़े बनाने पड़े थे। वे लोग इसके लिए दिन-रात काम करते थे। हिरण्मय की पत्नी ने बताया कि हजार तहों वाले फटे कपड़े के तलों में से मोटी सन की रस्सी गुजारने से उसकी उंगलियों से खून बहने लगा था। सरकार द्वारा उन्हें जूते के ऊपरी हिस्से के लिए सिर्फ एक आम किस्म के मजबूत कपड़े की और उसके भीतर अस्तर लगाने के लिए और भी पतले कपड़े की कीमत दी गई थी। तले बनाने के लिए हर चीज पैसे से खरीदनी पड़ती थी, यहां तक कि सनक रस्सियां और फटे कपड़े भी बड़ी मात्रा में खरीदने पड़ते थे।

कान पू बारी-बारी से हर घर में जाता और जहां काम पिछड़ जाता वहां उसे आगे बढ़ाने के लिए जोर डालता और जहां काम अच्छी तरह चल रहा होता, वहां लोगों से बीस जोड़े और बनाने को कहता। "तले मोटे और मजबूत बनाओ," वह कहता, "हमारे योद्धा ये जूते पहनकर हजारों मील दूर कोरिया जायंगे, जहां वे अमरीकी शैतानों से लड़ रहे हैं। यदि हम ने अमरीकी साम्राज्यवादियों को यालू नदी से पीछे नहीं धकेल दिया तो वे यहां हमारे दरवाजे पर आ धमकेंगे। और पहली चीज यह होगी कि तुम्हारी जमीन तुमसे छिन जायगी।"

"बेवकूफ !" बड़ी मौसी ने कान पू के जाते ही भुनभुना कर कहा था, "अमरीकी शैतान इस छोटे गांव में कभी नहीं आयंगे। इसके अलावा इन विदेशी शैतानों के लिए हमसे छीनने को बचा ही कुछ नहीं !"

जब जूते बन चुके तो लड़ाई के मोर्चे के सहायता कोष में धन देने की बारी आई। एक के बाद एक हमेशा कोई न कोई चीज लगी रहती। किन्तु सबसे खराब "विमान व बड़ी तोप कोष" आन्दोलन था जिसमें कि चोऊ गांव को इस गांव को चुनौती देने के लिए कहा गया था। हिरण्मय की पत्नी इन नये शब्दों को अच्छी तरह समझ नहीं सकी थी फिर भी पिछली रात सुवर्णमूल ने इन चीजों का जितना अच्छा विवरण दिया था, उससे कहीं स्पष्ट विवरण उसने दिया। सुवर्णमूल जगह-जगह अटकता और बात को टालता था, किन्तु इसलिए नहीं कि वह उसे ये सब बताना नहीं चाहता था, बल्कि इसलिए कि ये सब चीजें उसके अपने मन में मिलकर गड़बड़ा गई थीं।

"भाभी, जो कुछ मैंने तुम्हें बताया है वह तुम सुवर्णमूल से मत कहना," सावधान करते हुए हिरण्मय की पत्नी ने कहा, "मेरे सास-ससुर को भी नहीं। अगर उन्हें मालूम हो गया कि मैंने यह सब तुम्हें बता दिया है तो डर के मारे वे मर जायंगे।"

चन्द्रगन्धा जानती थी कि वे सुवर्णमूल से डरते हैं, क्योंकि वह आदर्श श्रमिक है। "यदि मैं जानती कि यहां देहात में यह हाल है तो मैं कभी लौटकर न आती," उसने गहरी सांस लेकर कहा। अब अपने दुःखों की कहानी सुनाने की उसकी बारी थी। "हम लोगों की क्या हालत है, तुम जानती हो, बहन। सारा परिवार उसी पर निर्भर था, जो थोड़ा-बहुत मैं शहर में कमा लेती थी। और वहां मुझे अपने कपड़ों, जूतों, मोजों और बिछौने की फिकर करनी पड़ती। और शंघाई में चीजें इतनी महंगी हैं। मैं भला पैसा कैसे बचा सकती थी ?"

"जो हो, हमसे तो अच्छी हालत थी," हिरण्मय की पत्नी ने फिर चन्द्रगन्धा के पास मुंह ले जाकर कानाफूसी करते हुए कहा, "लोग कहा करते हैं, 'गरीब धनियों पर निर्भर करते हैं और धनी भगवान पर' पुराने जमाने में जब अकाल पड़ता था, तब कम से कम कुछ चावल उधार लेने के

लिए जमींदार के पास जा तो सकते थे।" तभी उसे आंगन में दुहरे दरवाजों के खुलने की आवाज सुनाई दी और देखने के लिए वह बाहर भागी।

यह सुवर्णमूल था जो लकड़ियां लिये आ रहा था। उसने कन्धों पर एक बहंगी उठाई हुई थी जिसके दोनों ओर पत्तेदार टहनियों के दो बहुत बड़े बोझ लटके थे जिनसे सब ओर लकड़ियां निकल रही थीं और जिनकी ऊंचाई डेढ़ आदमी जितनी थी। वह ऐसा दीख पड़ता था, मानो उसके कन्धों पर एक विशाल दैत्याकार पक्षी बैठा हो जिसने रोयेंदार पंख फैलाये हुए हों। अनेक बार कोशिश करने के बाद वह दोनों बोझों को आगे-पीछे होकर भीतर आ गया।

उसके लौटने पर हिरण्मय की पत्नी खिसक गई। किन्तु सुबह का सारा वक्त गांव के लोग चन्द्रगन्धा को कुशल क्षेम पूछने उसके घर आते रहे और हरेक ने उससे पैसा उधार लेने की कोशिश की, उन सबने बहुत थोड़ा मांग की, और वे सब बिना किसी आशा के आये थे और बिना किसी विद्वेष के वापस चले गये।

चन्द्रगन्धा डर गई। उसने सुवर्णमूल से कहा, "हरेक आदमी मेरे पास जिस ढंग से पैसे के लिए आ रहा है, उससे तुम सोचते होगे, मैं बहुत पैसा बना कर लौटी हूं।"

"ऐसा तो हमेशा ही होता है," उसने मुस्कराते और हमेशा की भांति सफाई देते हुए कहा, "जब भी कोई बाहर से लौट कर आता है, तब हरेक आदमी हमेशा यही सोचता है कि उसने खूब पैसा बनाया है।"

वह चाहता था कि वह उनके लिए काफी चावल धोए ताकि वे दोपहर को अच्छी तरह से पका हुआ चावल खायें।

"नहीं, सचमुच ही हमें ऐसा नहीं करना चाहिए," चन्द्रगन्धा ने कहा, "इतना कम चावल रह गया है। अगर हम अभी से ध्यान रखेंगे तो इससे हमारी वसन्त ऋतु भी नहीं निकलेगी।"

"कभी-कभी ऐसा चावल खा लेने में भी क्या हर्ज है।"

"पर आज ही क्यों ? आज न नये साल का दिन है और न कोई त्यौहार और तुम्हारा जन्म दिन भी गुजर चुका है," उसने आंधा-सी हंसी हंसते हुए कहा। वह उसके मुंह से यह सुनना चाहती थी कि आज उसका घर आगमन का पहला दिन है और इसीलिए यह खुशी मनाने की जरूरत है।

किन्तु वह सिर्फ परेशान-सा नजर आया और दृढ़ता से बोला, "कारण कोई नहीं। मैंने कितने ही अर्से से अच्छा पका ठोस चावल नहीं खाया है और मेरा वैसा चावल खाने का जी कर रहा है।

अन्त में वह मान गई। किन्तु जब उसने चावल निकालने के लिए मिट्टी के बर्तन में गहराई तक हाथ डाला तो उसका हाथ रुक गया। उसने दोनों के बीच का रास्ता निकाल कर चावल की गाढ़ी लस्सी बनाने का समझौता कर लिया।

दोनों के खाना खाने बैठने से पूर्व सुवर्णमूल दरवाजा बन्द करने के लिए गया। "यदि लोग हमें इस तरह खाते देखेंगे तो उन्हें पैसा उधार मांगने के लिए और भी कारण नजर आने लगेंगे।"

"इस भरी दुपहरिया में दरवाजा बन्द कर लें," वह बोली, "लोग क्या सोचेंगे ? वे हंस-हंस कर अधमरे हो जायंगे।"

इसलिए सुवर्णमूल बाहर की तमाम आवाजों की आहट लेता हुआ, खुले दरवाजे के पास खड़ा होकर खाने लगा। इसके बाद एकाएक वह गम्भीर हो गया। "झटपट इसे यहां से हटा दो", उसने धीरे से कहा, "कामरेड वोंग आ रहा है।"

उसके यह कहने से पहले ही बाहर से दूसरी जनपद भाषा की अपरिचित ध्वनि में किसी की खूब ऊंची आवाज सुनाई देने लगी थी, "सुवर्णमूल भीतर है ?"

अपना कटोरा चन्द्रगन्धा के हाथ में थमाकर सुवर्णमूल जल्दी से बाहर आंगन में निकल आया। चन्द्रगन्धा ने दोनों के कटोरे बिस्तर पर तकिये के सहारे रख दिये, जहां कि वे पर्दों की आड़ में छिप गये। चावल की लप्सी होने के कारण, फिर चाहे वह गाढ़ी ही हो, उसे इस बात का ध्यान रखना पड़ा कि कहीं वह उलट और बिखर न जाय। इसके बाद वह पप्पू से कटोरा छीनने के लिए उसकी ओर मुड़ी। किन्तु पप्पू ने कटोरा छोड़ने से इन्कार कर दिया और चन्द्रगन्धा डर गई कि कहीं चिपचिपी और गर्मागर्म लप्सी बच्ची के हाथ पर न उलट जाय। तब तक सुवर्णमूल कामरेड वोंग के साथ भीतर आ चुका था।

वोंग चालीस से अधिक उम्र का ठिगना आदमी था, किन्तु उसकी टोपी के नीचे उसका दुबला चेहरा अब भी नौजवानों का-सा लगता था और उसकी मुसकराहट भी आकर्षक थी। अपनी पतलून से जिसमें रुई की मोटी तह भरी थी, वह असलियत से अधिक तकड़ा नजर आता था और कसे हुए कमरबन्द के कारण उसकी पोशाक खूब फूली हुई प्रतीत होती थी।

"अरे, स्वर्णमूल की बहू है क्या ?" उसने प्रसन्नता से कहा, "खाओ, खाओ, तुम लोग खाना खाओ। मैं बेमौके आ गया हूं।"

उन्होंने बार-बार कहा कि उनका खाना खत्म हो चुका है। पप्पू ने डरते हुए अपना कटोरा कुर्सी पर रख दिया। वोंग उसकी ओर दांत निपोरते हुए कहा, "अपनी लप्सी जल्दी खत्म कर लो, कहीं ठन्डी न हो जाय। अरे, अब तो तुम और भी बड़ी हो गई हो।" उसने उसे पकड़कर अपने सिर से भी ऊंचा उठा लिया। पप्पू अब भी गम्भीर और डरी हुई दीखती रही, हालांकि भीतर ही भीतर वह पुलकित-सी हो रही थी।

"कृपा कर बैठ जाइये, कामरेड वोंग," चन्द्रगन्धा ने मुस्कराते हुए कहा। वह अंगीठी की ओर तेजी से गई और उसके लिए गर्म पानी का एक

कटोरा ले आई। "हम लोगों के यहां तो चाय की पत्तियां भी नहीं हैं। लीजिए कामरेड वोंग एक कटोरा पानी तो पी लीजिए।"

"फिकर मत करो, वहन।" मुझे ऐसा मत महसूस कराओ कि मैं कोई वाहरी आदमी हूं।" वोंग गर्म पानी के लिए धन्यवाद के तौर पर अपनी कुर्सी से जरा-सा ऊपर उठा। "कल रात ही आई हो ? सफर के वाद जरूर थक गई होगी।"

चन्द्रगन्धा ने उसे सड़क से यात्रा का अपना अनुमति पत्र दिखाया।

"खूव, खूव," वोंग ने उसे पढ़ते हुए कहा, "वहुत अच्छा, 'उत्पादन के लिए देहात वापसी' वहुत ठीक।" उसने अपनी एक टांग ऊपर उठाई और किसानों के ढंग से उसे वेंच पर रख लिया। "सुवर्णमूल की वहू, इस वार यहां लौटकर तुमने जरूर देखा होगा कि देहात अव पहले से वदल गया है। तुम जानती हो, गरीव लोग अव उठ खड़े हुए है। सरकार अव जनता की अपनी सरकार है। सव तुम्हारे अपने ही आदमी है। तुम्हारी कोई भी राय हो, तुम हमें वता सकती हो। अव डरने की कोई जरूरत नहीं तुम जानती हो दुनियां वदल गई है।"

इसके वाद उसने सुवर्णमूल की तारीफ की और कहा, "अव तुम भी वापस आ गई हो वहुत अच्छा है। अव तुम दोनों ऊपज को संभालने में सहयोग दोगे। ऊपज वढ़ने के साथ-साथ तुम संस्कृति का भी अध्ययन करोगे। अभी इन्हीं जाड़ों में, जवकि काम काफी नहीं रहता, हर आदमी शरत् स्कूल में पढ़ने जाता है। शहर से हमें पढ़ाने लिए तरुण अध्यापक आते हैं। वहन, आजकल मर्द-औरत दोनों, एक वरावर हैं तुम दोनों को भी एक दूसरे का मुकावला करना चाहिए। वह श्रम का आदर्श है तो तुम अध्ययन का आदर्श वनो।" सभी लोग सुनकर हंस पड़े।

कुछ देर वाद कामरेड वोंग उठा और चला गया। सुवर्णमूल और चन्द्रगन्धा उसे विदाई देने आंगन तक गये। जव वे लौटे तो वह वोली, "काम-

रेड वोंग सचमुच ही अच्छा आदमी है। उसने पानी तक नहीं छुआ। पुराने जमाने के अफसरों की तरह नहीं कि हमेशा कभी यह चीज मांग रहे हैं और कभी वह, एक बार दरवाजे के भीतर घुस आयं तो उस वक्त तक टलने का नाम नहीं लेंगे जब तक उन्हें खिलाने के लिए एक मुर्गा हलाल न किया जाय।''

किसी अजनबी ने इससे पूर्व ढंग से, इतनी आत्मीयता के साथ बातचीत नहीं की थी, और उसमें एक औरत के रूप में नहीं,एक इन्सान के रूप में इतनी दिलचस्पी नहीं ली थी। वह बहुत प्रभावित हुई।

"कामरेड वोंग भला आदमी है," सुवर्णमूल ने कहा।

किन्तु उसने देखा कि सारे दिन वह चिन्तित रहा क्योंकि कामरेड वोंग ने गाढ़ी लप्सी का वह कटोरा देख लिया था।

उसने उसे समझाया कि पप्पू ने कटोरा छोड़ने से इनकार कर दिया और जब उसने उससे छीनने की कोशिश की तो उसे डर लगा कि कहीं गर्मागर्म लप्सी लड़की के हाथ पर न गिर जाय। इसके बाद उसका मिजाज गर्म हो गया और बोली," सब तुम्हारा ही कसूर है। तुम्हीं ने ज्यादा चावल डालने की जिद की थी।"

"अगर तुमने सचमुच मेरी बात सुनी होती और ठोस चावल पकाया होता तो सब ठीक-ठीक रहता। ठोस चावल के गिरने का डर नहीं होता।"

अच्छा, मेरा ही कसूर सही", और वह भुनभुनाई- "खाना भी तुम्हीं चाहते हो और फिर डर भी तुम्हीं को लगता है।'

"मैं ठोस पका चावल खाना चाहता था, यह चिपचिपी लुगदी नहीं।"

"तो मत खाओ, तुम्हें कौन मजबूर कर रहा है ?"

सने ठंडी लप्सी फिर पतीली में उलट दी और उसे गर्म किया। सुवर्णमूल अपना हिस्सा चुपचाप खत्म कर दिया।

भोजनके वाद वह कपड़े धोने के लिए नदी पर गयी। पत्थर की सीढ़ियों पर वैठकर वह कपड़ों का डंडे से पीटने लगी एकाएक दूसरे किनारे की पहाड़ियों से ढोल की जोर की आवाज उठी। उसे याद आया कि किस तरह विवाह करके शुरू में इस गांव में आने के वाद पहले-पहल इस नदी के किनारे कपड़े धोने के लिए आने पर वह चौंक उठी थी। यह विश्वास करना सम्भव नहीं था कि यह धीमी ढम-ढम की आवाज उसी के कपड़े पीटने की आवाज की गूंज है। उसे हमेशा ऐसा लगता था कि कोई अत्यन्त महत्व की चीज उस किनारे पर हो रही है, वहां ऊंची पहाड़ी के ऊपर जंगल की गहराई में। ऐसा प्रतीत होता मानों पुराने जमाने के देवगण लड़ रहे हैं।

दो वत्तखें नजदीक ही नदी में तैर रही थीं। हल्के हरे पानी में उनकी खुमानी के से पीले रंग की टांगें फीते की भांति पीछे-पीछे लटकती-सी मालम होती थीं।

"मां, नानी आई है!" दूर से ही चिल्लाती हुई पप्पू भाग कर आई।

वह कल माँ के यहां जाने की सोच रही थी, किन्तु स्पष्टतः ही मां को उसके लौट आने की खवर मिल चुकी थी और वह इन्तजार नहीं कर सकी थी। नाव पर उसे अपने गांव के दो आदमी मिले थे, अवश्य ही उन्हीं ने उसे उसके आने की वात वताई होगी।

कपड़े निचोड़ कर वह तेजी से घर की ओर चल पड़ी।

उसकी मां अकेली न रहे, इसलिए सुवर्णमूल उसके पास वैठा था।

चन्द्रगन्धा को उसकी मां ने कभी वहुत पसन्द नहीं किया। किन्तु कई वर्ष से एक दूसरे को न देख पाने के कारण, जव दोनों मिलीं तो दोनों ने ही कुछ आकुलता-सी अनुभव की। उसकी मां वूढ़ी हो गई थी। उनमें परिवार के लोगों और रिश्तेदारों में हुई पैदाइशों, मौतों और शादियों की चर्चा हुई। उसकी मां ने एक चचेरे भाई का जिक्र किया जो "खून की उल्टियों" की वीमारी से मर गया था। वह वीमार इसलिए हो गया था कि गांव के कान पुओं ने उसके

पांव बांध कर उसे लाठी से पीटा था। उसने किस्सा अच्छा तरह शुरू किया, उसके बाद रुकी और गहरी सांस लेकर सिर्फ़ इतना ही बोला, "तुम्हारा कामरेड वोंग अच्छा आदमी है।"

कुछ देर बाद सुवर्णमूल आंगन में चला गया और अपना लम्बा पाइप पीता हुआ दरवाजे के पास जो खड़ा हुआ, ताकि वे दोनों अकेली रह सकें, क्योंकि हमेशा ऐसे समझा जाता है कि मां और बेटी के पास एक दूसरे से कहने को अवश्य ही कुछ गुप्त बातें होंगी। उसे पूरा निश्चय था कि उसकी मां उससे पैसा मांगेगी। वे दोनों बहुत देर तक अन्दर रहीं।

जब उसकी मां जाने लगी तो वे उसे गांव के सिरे तक छोड़ने गये। इस पहाड़ी इलाके में सूर्यास्त होते ही तापमान एक दम तेजी से गिर जाता है। सलेटी-हरे बांस के जंगल से एक ठंडी हवा की लहर आ रही थी। पति और पत्नी पप्पू को हाथ से थामे बुढ़िया को सड़क पर अदृश्य होते खड़े देखते रहे। सुवर्णमूल का अनुमान था कि चन्द्रगन्धा ने अपना सारा पैसा मां को उधार दे दिया है और इस बात से वह खुश नहीं है।

अध्याय ५

जिस दिन वह अपने पति से मिलने के लिए राह चल कर आई थी उसे गुजरे अभी एक सप्ताह भी नहीं बीता था कि चन्द्रगन्धा पूरी तरह से यहां जम गई मानों वह कभी यहां से बाहर गई ही नहीं थी।

सुबह सुवर्णमूल ने आंगन में काम किया। बांसों को बीच से चीरा और फिर उसकी बारीक खपच्चियां बनाईं। इसके बाद उसने कुछ देर आराम किया। भीतर से वह दो बड़ी टोकरियां घसीट लाया और एक कुर्सी लाकर उनके सामने बैठ गया और अपना लम्बा पाइप पीने लगा। दोनों टोकरियां देखने में सुन्दर थीं, वे बांस चीर कर और उसकी बारीक खपच्चियों से एक बड़े सफेद और हल्के हरे रंग के वर्गाकार बक्से की तरह बुनी गई थीं।

इसके बाद ज़मीन पर बैठकर, हत्थे बनाने के लिये उसने बांस की लम्बी पतली खपच्चियां टोकरियों के भीतर से गुजारीं। काम करने से उसे गर्मी लगने लगी, इसलिए उसने अपनी रूईदार जाकट उतार ली और कुर्सी पर रख दी।

एक छोटा मौसेरा भाई, जो पहाड़ी लौटा था, अपने कन्धे पर आठ या नौ गज लम्बे और हिलते हुए बांसों का एक बोझ रखे आया। आंगन में आकर उसने तड़ाक से जोर की आवाज के साथ बांस जमीन पर पटक दिये। सुवर्णमूल ने आंख उठाकर भी नहीं देखा।

चन्द्रगन्धा बाहर आयी और सायबान के नीचे बैठकर सुवर्णमूल की उतारी जाकट ठीक करने लगी। दोनों का मुंह सूर्य की तरफ था, सुवर्णमूल कुछ

अविक आगे बैठा था। सूर्य आहिस्ता से बादलों के भीतर घुसता और फिर वैसे ही आहिस्ता से निकल आता। जमीन पर कितनी ही बार धूप निकली और कितनी ही बार छाया हुई। किन्तु पति-पत्नी में एक बार भी बातचीत नहीं हुई।

ऊपर से सूर्य की गर्मी आने के कारण चन्द्रगन्धा को कमर में खुजली होने लगी। उसने अपनी जाकट ऊंची कर ली जिससे उसके शरीर की पीली त्वचा बहुत सी नजर आने लगी। उसने बदन खुजलाया जिससे त्वचा का रंग लाल-सा हो गया। तभी उसे कुछ सन्देह हुआ और उसने स्वर्णमूल की जाकट उठा ली। उसे फैला कर उसने ध्यान से देखा। वहां कुछ नहीं था। तब एक आस्तीन उलट कर वह उसकी मरम्मत में लग गई।

जब सुवर्णमूल एक टोकरी का हत्था खतम कर चुका तो एक पांव भीतर डालकर और उसे अन्दर से दबा कर हत्थे से उसे ऊपर उठाने की कोशिश की। हत्था मजबूत रहा। उसी समय बड़े माला अपने हाथ आस्तीन में छिपाये तेजी से आ रहे थे, किन्तु नई टोकरा सामने देखकर वह रुक गये और एक पांव भीतर डालकर उन्होंने भी हत्थे की परीक्षा की। उसे सन्तोष जनक पाकर एक शब्द भी कहे बिना वह आगे बढ़ गये। अन्य रिश्तेदार भी आंगन में से गुजरे। हर एक ने रुक कर और टोकरी पर पांव रखकर हत्थे की परीक्षा की और उसके बाद बिना कोई टिप्पणी किये चला गया।

चन्द्रगन्धा खाने के कटोरे और लकड़ी की तीलियां बाहर लाई और उन्हें खुले में मेज पर रख दिया। मेज के बीचों-बीच उसने नमकीन सब्जियों के काले से चपटे टुकड़ों का बर्तन रखा और एक तरफ एक ऊंची लकड़ी की बाल्टी रख दी जिसमें चावल की लप्सी थी। पप्पू भी न जाने कहां से मेज के पास आ गई।

"आओ, खाना खा लो," सुवर्णमूल ने खुशमिजाजी से बच्चों को बिल्कुल अनावश्यक रूप से बुलाया क्योंकि उसकी लड़की पहले ही अपना स्टूल ले आई

थी। अपनी खाने की तीलियों से पहले-पहल सब्जी का जो टुकड़ा उसने उठाया उसे उसने उसके कटोरे में रख दिया।

चन्द्रगन्वा सब्जी को मुश्किल से ही हाथ लगाया होगा। औरत का स्वादिष्ट चीजों में बहुत ज्यादा दिलचस्पी लेना भद्दा समझा जाता है। किन्तु जब सुवर्णमूल अपना कटोरा फिर भरने लगा तो उसने जल्दी से दो बार उसमें से थोड़ी-बहुत ले ली।

एक पीला कुत्ता मेज के नीचे गिरे खाने की चीजों को जिनका वास्तव में वहां बिल्कुल अभाव था, ढूंढ़ता हुआ सुवर्णमूल की कुर्सी के नीचे घुस गया। उसकी मोटी पूंछ ठीक सुवर्णमूल के पीछे हिल रही थी, मानों खुद सुवर्णमूल की पूंछ हो।

बड़ी मौसी पास से गुजरी। उन्होंने गर्दन आगे बढ़ाकर अच्छी तरह यह देखने की चेष्टा की कि वे क्या खा रहे हैं। इसके बाद एक भी शब्द कहे बिना वह आगे बढ़ गई। हाल में ही उनमें एक तरह का मनमुटाव-सा हो गया था क्योंकि बड़ी मौसी को सन्देह था, और शायद वह ठीक ही था, कि हिरण्मय की बहू चन्द्रगन्वा से हमेशा उनके अन्याय और हर वक्त की डांट-डपट के लिए उसकी शिकायतें करती है।

छोटी-छोटी तस्वीरें सफेद दीवार पर ऊंचाई पर जो काली स्याही से बनी टंगी थी। एक तस्वीर ऑर्चिड फूलों के गुच्छे की टहनी की थी जिसके चारों ओर पंखे की आकृति की एक किनारी थी। दूसरा तस्वीर में म्यान में पड़ी एक तलवार और एक तारों वाला बाजा था जिनके चारों ओर एक षट्कोण चौखटा बना था। ये सब चीजें अब उनकी जिन्दगी से उतना ही दूर थी, की आंधी-वर्षा जितना कि चांद और सबसे ऊपर की तस्वीरों आधी शताब्दी सुबह के चांद की तरह फीकी हो गई थी।

सुवर्णमूल का खाना सबसे पहले खत्म हुआ। उसने अपनी कुर्सी घुमाई और आगे की ओर झुककर अपना लम्बा पाइप पीने लगा, ऐसा लगा मानों जानबूझ कर उसने चन्द्रगन्वा की ओर पीठ कर ली हो।

अध्याय ६

हिरण्मय की पत्नी ने घर के बाहर चक्रों वाले सीमा के पत्थर पर, जिस पर कुछ लिखा हुआ था और जो जमीन से एक फुट ऊंचा था, अपने धोए हुए कपड़े फैलाये। लुचजुच से मटमले कपड़े हवा में फड़फड़ाने लगे।

"हिरण्मय की बहू, खाना खा चुकी हो ?"

सिर ऊपर उठाकर जब उसने देखा कि यह आवाज कामरेड वोंग की है, जो अपने साथ एक अजनबी को जो उसी की भांति वर्दी पहने है, लिये आ रहा है तो वह कुछ घबरा-सी गई। कामरेड वोंग के आने पर वह हमेशा घबरा जाती थी और उसे भी कुछ घबराहट-सी लगती, उसे कभी यह भरोसा नहीं होता कि वह ठीक बात कहेगी। किन्तु इस वक्त उसने ठीक बात ही कही।

"हां," उसने मुस्करा कर उत्तर में उससे पूछा, "और कामरेड वोंग तुम भी खाना खा चुके ?"

किन्तु उसने उसकी बात नहीं सुनी। जो कुछ उसने कहा, उसे दबाते हुए उसने जल्दी से ऊंची आवाज में कहा, "बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। और क्या तुम्हारे ससुर घर पर हैं ?"

वह तेजी से चली गई और जोर से पुकार कर बोली," कामरेड वोंग आये हैं।"

बड़े मौसा और बड़ी मौसी मुस्कराते हुए बाहर आये। वोंग ने वर्दीधारी आदमी का, जिसे वह साथ लाया था, उनसे परिचय कराया। "यह है कामरेड कू," वह बोला, "ये देहात की हालत का अध्ययन करने के लिए शंघाई से आये हैं। ये तुम्हारे साथ रहना चाहते हैं और तुम्हारी तरह ही रहना चाहते हैं।

उन्होंने जोरों से कामरेड कू का स्वागत किया। कू दुबला-पतला तीस बरस के आसपास की उम्र का आदमी था। उसकी आंखों पर काली कमानी का चश्मा चढ़ा था जिससे उसकी काली भौंहें और भी काली मालूम होती थीं। उसने बताया कि वह एक डायरेक्टर-लेखक है और साहित्यिक व कलाकार संघ ने उसे जीवन का अनुभव लेने और अपनी नई फिल्म के लिए सामग्री संग्रह करने के लिए भेजा है।

वोंग के अर्दली का काम करने वाला फौजी सिपाही कामरेड छोटा चांग बेंहगी पर कू का सामान लादे हांफता हुआ पीछे से आया। कू उससे सामान छीनने लगा ताकि वह स्वयं उसे घर के भीतर ले जा सके, किन्तु कामरेड छोटे चांग ने उसे देने से इन्कार कर दिया। बिस्तरबन्द घर के भीतर पहुंचाना उसी का काम था और वह खुद उसे पूरा करना चाहता था। शहर का यह आदमी, कामरेड कू, अपना सामान खुद उठा ले जाने के लिए सारे रास्ते उससे उलझता रहा है। वस्तुतः कामरेड छोटे चांग को इस चश्माधारी आदमी को यह दिखा देने का लालच था कि "महाशय कामरेड, तुम अपना काम देखो और मुझे अपना काम करने दो।"

अधिकतर देहातियों की भांति बड़े मौसा और बड़ी मौसी ने भी भूमि सुधार के दिनों में बुद्धि जीवी लोगों को अपने यहां ठहराया था, इस लिए इस मौके पर भी वे अपेक्षाकृत शान्त बने रहे। उन्होंने इनसे अच्छा भोजन और अच्छा रहन-सहन न होने के लिए माफी मांगने अथवा यह

कहने की कि "क्या कामरेड शंघाई से आये हैं ?" भूल नहीं की, क्योंकि वैसा करने का अर्थ यह कहना होता कि देहात शहर से घटिया है।

उन्होंने अपने अतिथि को वह कमरा दिखाया जहां वे चक्की और खेती के औजार रखते थे इन्हें वहां से निकाला जा सकता था और वहां दरवाजे को कब्जों से निकाल कर और दो बेंचों पर रख कर रात को उससे सोने के लिए पलंग का काम लिया जा सकता था। कू ने कहा, यह बहुत बढ़िया है। इसके बाद वे सब लोग मुख्य कमरे में लौट आये और उस गहरे नीले फूलदान की तारीफ करने लगे जो गांव के जमींदार की सम्पत्ति के बटवारे के समय परिवार को लाटरी में मिला था।

कामरेड वोंग की प्रार्थना पर एक आदमी सुवर्णमूल और उसकी पत्नी को बुलाने के लिए भागा। सुवर्णमूल आदर्श श्रमिक था और उसकी पत्नी अभी हाल में ही उत्पादक कार्य में शामिल होने के लिए देहात में आई थी। कू बड़ा प्रभावित हुआ; उसने सोचा, ये देहाती लड़कियां बहुत सुन्दर हो सकती हैं। ज्यादा बातें बड़ी मौसी ने ही की। बाकी लोगों ने अपने आप को मुस्कराने अथवा कभी-कभी आहिस्ता से "अब देहातों में हालत बहुत अच्छी है" या "जमाना अब बदल गया है" आदि वाक्यों तक ही सीमित रखा। किन्तु बड़ी मौसी बड़े जोश के साथ ऊंचे स्वर से बोलीं, "अध्यक्ष माओ न होते तो हमें यह दिन देखना कभी नसीब न होता।" और वह उसका जिक्र हमेशा आत्मीयता और प्रेमपूर्ण आदर से "अध्यक्ष माओ" के साथ "ता लाओ जेन चिया" शब्द, जिसका अर्थ था "घर का बड़ा बुजुर्ग" जोड़ कर करती थी, जैसा कि कोई व्यक्ति अपने परिवार में किसी बुजुर्ग के बारे में कह सकता है।

कू आसानी से कह सकता था कि कामरेड वोंग ने उसे एक अभिमान-योग्य प्रदर्शनात्मक वस्तु के रूप में ही उसके सामने पेश किया है। शायद इसीलिए उसने उसे उसके परिवार के साथ दिखाया था। जब कामरेड

वोंग वापस जाने लगा तो कू उसके साथ सड़क तक गया और उसने उसे बुढ़िया के बारे में आदर के साथ बातें करते सुना। वह बोला, "उसके बारे में एक बात पक्की है—वह बड़ी स्पष्टवादिनी है।"

कामरेड वोंग पहले ही उससे शरत्कालीन स्कूल का ज़िक्र कर चुका था और उसने उसे सलाह दी थी कि वह उसमें पढ़ाने के लिए जाय ताकि वह जनता में अधिक घुलमिल सके। अब वह बोला, "कामरेड, अब जाकर अच्छी तरह आराम करो। सफर से तुम थक गये होगे। कल मैं तुम्हें स्कूल ले जाऊंगा और वहां कक्षा में तुम्हारा परिचय कराऊंगा।

उसने फिर इस बात पर विस्तार से प्रकाश डालना शुरू किया कि कैसे लोगों को पढ़ना-लिखना सिखा कर उनका राजनीतिक चेतना शुद्ध की जा सकती है। उसकी बातें सुनकर ऐसा लगता था जैसे कि कू को वह जो काम करने के लिए कह रहा था वही, अर्थात् देहाती कस्बे के स्कूली छात्रों की सहायता से अनपढ़ किसानों को अलग-अलग पालियों में कुछ अक्षर सिखा देना ही, समूचे राष्ट्र में सबसे बड़ा और सबसे अधिक चुनौती भरा काम है। कू ने सोचा, वह प्रोपेगंडा करने में खूब होशियार है। वोंग पार्टी में बहुत समय तक रह चुका था और उसने क्यांगसू की लड़ाई में भी हिस्सा लिया था। निश्चय ही वह अपने मौजूदा पद से अधिक बेहतर पद का अधिकारी था। सम्भवतः पार्टी के आन्तरिक झगड़ों के कारण ही वह इस नीचे पद पर लटका रह गया। शायद वोंग किसी ऐसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति का अनुयायी था जिसे माओ ने दल से निकाल दिया था। ऐसी दशा में उससे मेल-जोल बढ़ाना खतरनाक होगा। इसलिए कू अधिक सतर्क हो गया और अपने तौर-तरीकों में खिंचा-सा रहने लगा।

कामरेड वोंग अकेला ही गांव के सरकारी दफ्तर के अपने क्वार्टर में लौट आया। यह सरकारी दफ्तर पहले योद्धा सन्त का मंदिर था। कू से विदाई लेने के बाद उसने अनुभव किया कि उसने अपने अतीत के बारे में

जिक्र कर, यह बताकर कि किस प्रकार जापानियों के अधिकार के दिनों में उसने छिपे-छिपे गुप्त कार्रवाइयों में भाग लिया और परिस्थितियां बहुत अधिक प्रतिकूल हो जाने पर वहां से भाग कर नई चौथी सेना में शामिल हो गया, उसने अच्छा नहीं किया है। वह यह सब बातें कहना नहीं चाहता था, खास कर किसी ऐसे आदमी से जिससे उसकी पहली बार ही मुलाकात हो रही हो। कहावत है, "बहादुर लोग अपनी पिछली बहादुरी के लिए घमंड नहीं किया करते।" यह सोचकर उसे बड़ी मायूसी हुई कि उसका व्यवहार एक ऐसे वाचाल बूढ़े के समान था जो अपनी अतीत स्मृतियों के भरोसे ही जीता है।

कू के व्यवहार में जो बड़प्पन दिखावा था, उसी ने उसे ऐसा करने के लिए उकसाया था। उसे राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मामलों पर कू का इस ढंग से जानकारी देना, और सम्भव है वह अच्छे इरादे से ही ऐसा करता हो, मानों कि वह गांव से बाहर घट रही घटनाओं के बारे में पूर्णतः अनभिज्ञ है और खबरों का भूखा है, अच्छा नहीं लगा।

उसने इस कू का नाम इससे पहले कभी नहीं सुना था। किन्तु साहित्यिक व कलाकार संघ के प्रमुख के परिचय-पत्र से उसे यह ज्ञात हुआ कि देश की मुक्ति के बाद उसे देश के ध्येय की पूर्त्ति की खातिर नया भरती किया गया है।

"बीस वर्ष तक पार्टी में काम करने और हमेशा घोर संघर्ष में आगे रहने के बाद," वोंग ने सोचा, "अब मुझे इस निकम्मे आदमी की, जिसने गिरगिट की तरह रंग बदला है मेजबानी करनी पड़ रही है और यह दुमुंहा, डरपोक जिद्दी बुद्धिजीवि पुरानी हुकूमत का पालतू कुत्ता मुझ पर मालिक की भांति रौब गालिब कर रहा है।"

वह जानता था कि उसे इस तरह मिजाज बिगाड़ना नहीं चाहिए। और शायद वह कू के साथ बेइन्साफी भी कर रहा था। किन्तु इसका उसकी

मानसिक स्थिति पर भारी असर पड़ा। उसे आशा थी कि जब वह मंदिर पहुंचेगा तो कुछ न कुछ किसान उसके दफ्तर में बैठे उसकी इन्तजारी कर रहे होंगे और किसी न किसी झगड़े का फ़ैसला कराना चाहते होंगे। इससे शायद उसकी उदासी दूर हो जाय। वह किसानों से निबटना खूब जानता था और किसी काम को अच्छी तरह करने में उसे हमेशा आनन्द आता था। किसानों के लिए वही सरकार था। वे उसे यह अनुभव कराते थे कि वह कोने में डाल रखा कोई पुराना औजार नहीं है, बल्कि मशीन का एक महत्वपूर्ण पुर्जा है।

आमतौर पर वह सुबह से शाम तक व्यस्त रहता था, किन्तु मंदिर में वापस पहुंचने पर उसे ऐसा लगा कि आज दोपहर बाद का वक्त उसका खाली रहेगा। अपने डेस्क पर कुछ देर बैठने के बाद वह उठा और दोनों हाथ पीठ-पीछे करके बाहर फिरने लगा। कामरेड छोटा चांग, जो उसके घर की देख-भाल करता था, बाहर एक गोल भट्टे पर बैठा था, जिस पर किसी समय भिक्षुक लोग अनन्त समय तक समाधि में बैठा करते थे। इस मंदिर के भिक्षुकों का दल बहुत पहले ही बर्खास्त किया जा चुका था। छोटा चांग किसी समाधि में लीन नहीं था, वह लहसुन छील रहा था। गद्दा बहुत पुराना था, फटे नीले कपड़े के भीतर से अन्दर भरा हुआ भूसा दीख रहा था।

छोटे चांग ने अत्यन्त जटिल और बारीक खुदाई की जाली वाली खिड़की पर आर-पार बांधी एक रस्सी पर अपने धुले हुए कपड़े सूखने के लिए डाल रखे थे। मंदिर की उदासी भरी, बेरौनक धुंधले गुलाबी रंग की दीवार के एक हिस्से पर निश्चल पड़ी थी।

वांग को ऐसा लगा जैसे कि वह हमेशा मंदिरों में रहता रहा हो; उन विशाल और शून्य भवनों के आधे-अन्धियारे में, जहां अभी तक निर्वासित देवताओं के प्रेत घूम रहे हैं। शाह मिंग से जब उसने शादी की थी तब वह

एक मंदिर में रह रहा था। वह जानता था कि भविष्य में क्या होने वाला है—जब कभी वह उन दिनों की बातें याद करने का प्रयत्न करता तो तुरन्त वही बात उसके दिमाग में आ जाती।

उसने पहले-पहल उसे उस समय कान पुओं की एक विशाल सभा में देखा था, जब कि वह उत्तरी क्यान्सु प्रान्त में नई चौथी सेना में सिपाही था। सभी कान पू उच्च अध्ययन के लिए एक छोटे-से कस्बे में जमा हुए थे। उन्होंने एक जमींदार के, जो गांव में स्वयं नहीं रहता था, मकान उपयोग किया था। ऊंचे खम्भों वाले विशाल भवन में वैसा ही अन्धेरा और बेरौनकी थी जैसी कि अंधियारे वाले दिन घर से बाहर होती है। लैक्चर के समय वे लोग पत्थरों में मेड़ फर्श पर बैठ जाते और अपने घुटनों पर रखे कागज के पैडों पर नोट लेते। और सब भाषणों की भांति लैक्चरों की समाप्ति भी नारों के साथ होती। हरेक आदमी खड़ा हो जाता और लैक्चर देने वाले के पीछे-पीछे नारा लगाता, "अध्यक्ष माओ जिन्दाबाद !" और अपनी टोपी हवा में अधिक से अधिक ऊंची उछालता। किन्तु नीचे आने पर हरेक आदमी अपनी टोपी हाथों में दबोच नहीं सकता था, इसलिए जब लैक्चरर फिर नारा लगाने के लिए बांह उठाता और ऊंची आवाज लगाने के लिए गहरा सांस भरता तो सब में अपनी टोपियां पकड़ने के लिए दौड़-धूप हो रही होती। लैक्चरर जोर से चीखता, "स्टालिन जिन्दाबाद !"

और साथ ही सारी भीड़ कानों को बहरा करने वाले स्वर में प्रतिध्वनि करती, "स्टालिन जिन्दाबाद !" और फिर टोपियां हवा में तैरने लगतीं।

बैठक खत्म होने पर वोंग ने देखा, एक स्त्री कान पू वहां खड़ी है। उसके हाथ में टोपी है और वह परेशान-सी नजर आती है। उसके हाथ में किसी और की टोपी आ गई थी। वह उम्र में बहुत छोटी थी। दूसरी स्त्रियों की भांति अपने बाल छोटे काटने और उन्हें चिकने और बल पड़े हुए गुच्छों में

गालों के पास लटके रहने देने के बजाय उसने उन्हें दो वेणियों में गूंथ कर टोपी के नीचे इस तरह बांधा हुआ था कि पहली नजर में कोई भी आदमी उसे देखकर उसके पतले और रक्त हीन चेहरे और बड़ी आंखों के कारण लड़का समझ सकता था। किन्तु अब टोपी सिर पर न होने और वेणियां साफ दीखने के कारण वह स्कूली छात्रा-सी प्रतीत होती थी, दुबली-पतली और अपनी वर्दी में जो उसके नाप के लिहाज से बहुत बड़ी थी, लटकी-सी।

वोंग ने अपनी मसली और मुड़ी-तुड़ी टोपी उतार ली। इसमें जरा भी शक या गलती की गुंजायश नहीं थी कि यह टोपी उसी की थी, इसलिए उसने और लोगों की भांति उसके पास जाने और यह पूछने का, कि क्या यह टोपी उसकी है जो गलती से उसके हाथ में पड़ गई है, विचार छोड़ दिया। उनमें से किसी के भी पास उसकी टोपी नहीं थी, किन्तु इधर-उधर नजर दौड़ाने पर उन्हें ऊपर एक शहतीर पर टंगी हुई एक टोपी नजर आई। यू नाम का एक युवक बड़ी फुर्ती से सीढ़ी लाया और उसके लिए उसने उस टोपी का उद्धार कर दिया। वह वहां खड़ा उससे बातें कर रहा था कि वोंग कमरे से चला गया। इस विचार से भी, कि कामरेड यू दर्जे में उससे नीचे है और विवाह करने का अधिकार उसे प्राप्त नहीं है, उसे कोई सान्त्वना नहीं मिली।

"वह लड़की कौन थी जिसकी टोपी अभी-अभी खो गई थी," उसने कुछ-कुछ संकोच से एक अन्य कान पू से पूछा।

"मैंने उसे पहले कभी नहीं देखा। कोई नई आई मालूम होती है। क्यों, तुम्हें उसमें क्यों दिलचस्पी है?"

"फिजूल की बातें मत करो।"

बाद में उसने किसी और से भी पूछा। "वह वेणियों वाली लड़की—क्या उसके पति का नाम चेन है?"

"मेरे खयाल में तो उसकी शादी अभी नहीं हुई। तुम्हारा मतलब शाह मिंग से है, क्यों ? उसे यहां आये अभी तक एक साल भी नहीं हुआ। तार विभाग में काम करती है।"

"मेरा ख्याल था कि मैं उसके पति को जानता हूं। कामरेड चेन," वह आहिस्ता से बोला, "पर शायद मुझ से तो लगती हो गई हो।"

सभी शिक्षणार्थी कान पू स्त्रियों को सहकारी स्टोर में रखा गया था। दूसरे दिन सुबह-सुबह वह वहां गया और उसने कामरेड शाह मिंग को पूछा।

जैसा कि आम तौर पर चीनी दूकानों में इन्तजाम होता है वहां कमरे के दोनों ओर खुदाई के काम वाली काली-काली लकड़ी की कुर्सियों की एक एक कतार थी जिसमें बीच-बीच में छोटी-छोटी मेजें थीं। आगन्तुकों और महत्वपूर्ण ग्राहकों को बैठाने के लिए यह इन्तजाम होता था। वह एक कुर्सी पर बैठ गया। पीठ पीछे दीवार पर लाल रंग के अभिनन्दन पत्र टंगे हुए थे जिसमें सहकारी संस्था को उनके उद्घाटन पर बधाइयां दी गई थीं।

सगुन बहुत अच्छा है," वोंग ने सोचा, "उससे शादी का प्रस्ताव सहकारी स्टोर में करना बड़ा शुभ होगा। यह हमारे क्रान्तिकारी कार्य में आजीवन सहयोग की शुरूआत होगी।"

सुबह की धूप दरवाजे से भीतर आ रही थी और उसके पांवों के पास पड़ी चावल और लाल सेम की टोकरियों, धूल से भरी खुम्भों और गुच्छियों तथा लम्बी और बांस की पतली टहनियों पर, जिनसे सूखी और मीठी गन्ध आ रही थी, पड़ रही थी। कान पू स्त्रियां कौंटर पर अपने बिस्तर लपेट रही थीं और जोर-जोर से बातें कर रही थीं। कल रात वे कौंटर पर ही सोई थीं।

इसी समय उसने शाह मिंग को तेजी से अपनी ओर आते देखा। वोंग ने अपना परिचय दिया और कहा, "मैं तुमसे कुछ बातें करना चाहता हूं।"

वह मुस्कराती और स्पष्टतः अपने आपको संभालती हुई बैठ गई। बाद में उसने उसे बताया कि उसे निश्चय था कि वह उससे उसकी वेणियों के बारे में बात करने आया है, जिनकी काफी आलोचना हुई थी।

"मैंने सुना है कि अभी तक तुम्हारी शादी नहीं हुई है," वोंग बोला, "मैं भी अभी तक कुंआरा हूं। तुम्हारा क्या ख्याल है, अगर हम दोनों संगठन से परस्पर शादी की अनुमति मांगें ?"

उसने सोचा कि शाह मिंग ने उसकी बात को बड़ी शान्ति से ग्रहण किया, हालांकि वह कुछ आश्चर्यचकित-सी प्रतीत हुई। उसने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, "अच्छा हम दोनों इस पर विचार करेंगे।"

"जहां तक मेरा सम्बन्ध है, इस पर पुनर्विचार करने की कोई आवश्यकता नहीं है। मैंने पक्का निश्चय कर लिया है।"

फिर भी उसने मुस्कराते हुए कहा, "यह एक गम्भीर कदम है। हमें इस पर अच्छी तरह विचार करना चाहिए।"

उसने उस पर तत्काल निर्णय करने के लिए जोर नहीं डाला। सूर्य की रोशनी में उसे देखने से उस पर गहरा प्रभाव पड़ा—वह एक पीली पड़ गई फोटो की भांति नजर आती थी, इतनी सुकुमार और फिर भी धुंधली। उसे लगा कि इसे इस तसवीर को अपनी उंगली से छूना नहीं चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि वह और भी धुंधली पड़ जाय।

दो सप्ताह बाद वह उसे उसकी तैनाती के स्थान पर मिला, उसने अपने एक साथी को, जो रात की पाली में काम करता था, उठाया और उसे अपनी जगह पर काम करने के लिए छोड़ कर वह उसके साथ बातें करने के लिए बाहर आ गई।

"हम दोनों शादी की अनुमति के लिए प्रार्थनापत्र भेज दें," उसने सलाह दी, "यदि हम दोनों में से कोई विवाह के लिए अयोग्य होगा तो तुम यह निश्चय रखो कि संगठन हमें वैसी सूचना दे देगा। हम यह बात निश्चिन्त होकर संगठन पर छोड़ सकते हैं।"

किन्तु वह उसे "अभी हमें इस पर और विचार करना चाहिए" कहकर टालती रही। किन्तु जब दूसरी बार वह उसे उसकी काम की जगह पर मिलने आया तो उसने अनिच्छा से उसकी बात मान ली और बोली, "अच्छी बात है।" इस प्रकार दोनों ने प्रार्थनापत्र भेजा और उन्हें शादी करने की अनुमति मिल गई। एक दिन शाम को वांग ने उसे घोड़े पर बैठाकर लाने के लिए एक अर्दली भेजा।

सांझ की नीरवता में घोड़े की टापों की आवाज बड़ी स्पष्ट और तीखी सुनाई पड़ रही थी। मन्दिर के बाहर पत्थरों की सीढ़ी पर वह तब तक खड़ा रहा, जब तक कि आवाज दूर जाकर विलीन नहीं हो गई। इसके बाद वह भीतर चला गया। वह अब भी एक तरफ पंक्ति में रखी हुई छोटे देवताओं की मूर्तियों के नीले और लाल चेहरों और उनके सुनहरी रंग के वस्त्रों को पहचान सकता था। हवा के झोंके खिड़कियों पर लगे फटे कागजों को ऊंची आवाज के साथ हिला रहे थे। बीच का बड़ा भवन पार कर वह पूरब की कोठरी में चला गया जो उसका कमरा था। आज कमरा झाड़ा-बुहारा और साफ किया गया था, जिसमे वह खाली-खाली लग रहा था।

लड़ाई के वर्षों में पार्टी ने समझौता किया हुआ था, इसलिए उस मंदिर में, जिस पर उसका अधिकार था, मूर्तियां यथापूर्व कायम रहने दी गई थीं और भिक्षुणियों को भी वहां रहने की इजाजत दे दी गई थी, हालांकि युवती भिक्षुणियां सब भाग गई थीं। एक भिक्षुणी, जो वहीं रह गई थी, मंदिर के पिछवाड़े लकड़ी के एक मू यू को बजाकर "अपना पाठ दुहराती रहती थी।" वह

वरावर चलता जाता; "टक टक टक टक" की अनवरत ध्वनि का प्रभाव जारी रहता मानों किसी प्राचीन जल-घटिका से बूंद-बूंद पानी गिर रहा हो और एक मृत संसार की घड़ियां गिन रहा हो।

वोंग जव लड़की के आगमन की प्रतीक्षा में अपने कमरे में इधर-उधर चक्कर लगा रहा था तो उसे लगा कि उस पर एक जादू हो रहा है। वह रात को और भोर में उसी घोड़े से, जिसकी लगाम थामे अर्दली चल रहा था, वह चली गई। उसके वाद वह उसे हर सप्ताह वुलाता। और हमेशा वह कहानियों की प्रेत मालकिन की तरह रात को आती और भोर होते ही चली जाती।

कभी-कभी वह इस जादू के विरुद्ध संघर्ष करता। वह उसे दूसरे आदमियों की पत्नियों की भांति अपने रोजमर्रा के जीवन के अग के रूप में सोचना चाहता था। अपने देहाती कस्वे में, जहां उसे तैनात किया गया था, हुई कान पुओं की एक आपातकालिक वैठक ही ऐसा मौका था जव उसे लगा कि वह वस्तुत: उसकी विवाहित है। साम्यवादियों ने हमेशा ही सभाओं के स्थानों की सजावट को वहुत महत्त्व दिया है। एक उच्च अधिकारी सभा से पहले सभा-भवन का निरीक्षण करता है और मान लीजिए कि सभा मंच की मेज पर सुन्दर फूलदान न रखा हो, तो वह वहां के कर्त्ता-धर्त्ता सरकारी अधिकारी पर नाराज होगा। किन्तु इस विध्वस्त इलाके में फूल, झंडे, प्रदर्शन पट्ट या अच्छी रोशनी का इन्तजाम करना सम्भव नहीं था। वोंग माओ त्से-तुंग की एक वड़ी तस्वीर तक, जो अनिवार्य थी, जुटाने में असफल रहा था।

शाह मिंग ने दीवार के बीचो-बीच एक बड़ा लाल कागज चिपकाकर और उस पर बड़े-बड़े काले अक्षरों में "अध्यक्ष माओ जिन्दाबाद" लिख कर समस्या हल कर दी। इसके बाद उसने दो पीतल के बर्तन लिये, जैसे कि यहां आसपास हर आदमी इस्तेमाल करता था, खाना पकाने के तेल ले उन्हें भरा और मेज पर दोनों तरफ एक-एक बर्तन रख दिया। बैठक के समय जब तेल के दीये जलाए गये तो उनकी ऊंची कम्पायमान नारंगी रंग की दीप शिखाओं से, पृष्ठ भूमि के लाल कागज पर पड़ती आलोक और छाया से तथा हाथ ऊपर उठा कर पार्टी के प्रति निष्ठा की शपथ लेते तमाम कान-पुत्रों से सारा दृश्य अत्यन्त प्रभावकारी हो गया।

वोंग की अपनी पत्नी पर बड़ा गर्व अनुभव हुआ, उसे ऐसा लगा जैसे कि उन्होंने-अभी एक सफल पार्टी दी हो। इसके बाद उसने उसके साथ सभी चीजों पर, दुर्घटनाओं और साथ ही दिलचस्प घटनाओं पर, बातें करने का आनन्द लिया। जब और सब अतिथि चले गये और वह नहीं गई, बल्कि रात भर के लिए उसी के पास रह गई, तो उसके आनन्द का ठिकाना नहीं रहा।

उसने उसे बताया कि वह नई चौथी सेना में शामिल होने के लिए कैसे आई। हाईस्कूल की सीनियर कक्षा में एक अध्यापिका ने, जो साम्यवादी थी, उससे मित्रता कर ली थी। यह सब बड़ा रोमांचकारी था, मध्य रात्रि में कानाफूंसी के स्वर में बातचीत और रजाई की आड़ में मोमबत्ती की रोशनी में प्रौपेगेंडा साहित्य का अध्ययन। अध्यापिका ने उसे बताया कि रूस ही एकमात्र ऐसा देश है जिसने जापानी आक्रमणकारियों का मुकाबला करने के लिए चीन को सहायता दी है। वह उसे जापानियों के विरुद्ध येनान की ताजा विजयों की ख़बरें देती रहती थी। शाह मिन और भी कई लड़कियों के साथ साम्यवाद में दीक्षित हो गई और जब वह जापानी-अधिकृत इलाके से निकल कर उत्तरी क्यांगसू में भागी जहां कि नई चौथी सेना कार्यरत थी, तो वह उन्हें भी अपने साथ ले गई।

शाह मिग अर्थात् उजली रेत नाम उसने वहीं पहुंच कर अपनाया। यह मर्दानी किस्म का चुस्त नाम था, लेखकों या अभिनेताओं के फैशनेवल उपनाम की भांति।

उसने उसे उस मकान के बारे में बताया, जिसमें आखिरी बार उन्हें ठहराया गया था। चार तार-कर्मचारियों, एक नौजवान और तीन लड़कियों ने एक किसान के घर में बैठने-उठने के कमरे पर दखल कर रखा था। दिन में जिन मेजों पर वे लोग काम करते, रात को उन्हीं पर पड़कर सो रहते। दरवाजा कोई नहीं था, हमलावर सिपाहियों ने उसे आग जलाने के लिए काट लिया था। उत्तरी हवा सीधी भीतर आती थी जिससे तेल के दीये को जलता रखना अत्यन्त कठिन था। किन्तु फिर भी गोठान की अपेक्षा यहां भीतर अधिक गर्मी थी, इसलिए किसान हमेशा रात को अपनी भैंस बैठने-उठने के कमरे में ले आता और खिड़की के चौखटे से बांध देता। जब कभी भैंस पेशाब करने लगती तो रात की पाली के किसी एक तार-कर्मचारी को अपनी जगह से उठ कर और भाग कर उसके नीचे बाल्टी रखनी पड़ती और फिर वह लौटकर काम में लग जाता। और फिर जब वह पेशाब कर चुकती तो उनमें से किसी को फिर वहां जाकर तुरन्त बाल्टी वहां से हटानी पड़ती, नहीं तो जानवर अवश्य ही उसे लात से गिरा कर सारे फर्श पर बिखेर देता।

एक तरह से भैंस को कमरे में रखना एक वरदान था। उसे बदन को जमा देने वाली वे सर्द रातें याद थीं, जब कि तीनों लड़कियां जाड़े से बचने के लिए कटड़ियों की भांति भैंस के पेट से चिपट कर सोई थीं।

यह सब उसने उसे कुछ शर्माते हुए सुनाया और वे दोनों उसकी परेशानियों पर खूब हंसे।

"यह एक दर्द भरा अनुभव है," उसने स्वीकार किया, "कि एक मध्यवित बुर्जुआ अपने आप को क्रांति की भट्टी में झोंक दे। किन्तु इसी तरीके से तो हमारा पुनर्निर्माण होता है।"

उसे उसके लिए बहुत दुःख हुआ, किन्तु इस विषय में उसने इससे अधिक छ नहीं कहा कि "यदि तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा हो तो तुम ये कष्ट अधिक च्छी तरह सह सकती हो। किन्तु चिन्ता मत करो, तुम्हारा स्वास्थ्य सुधर येगा।"

ग्रीष्म ऋतु के प्रारम्भ में गर्भपात के कारण वह बीमार पड़ गई और से कब्जों से निकाले हुए एक दरवाजे पर, क्योंकि गांव में सिर्फ इसी तरह ा स्ट्रेचर उपलब्ध हो सकता था, डालकर मन्दिर ले जाया गया, जहां घायल सपाहियों के लिए डाक्टरी सहायता का एक केन्द्र था। वोंग को उसे अपने ास पाकर बड़ी खुशी हुई, हालांकि उसके पास उसकी शुश्रूषा करने का मय नहीं था। वे लोग उस समय लड़ाई में पीछे हट रहे थे और एक दिन सा आ गया जब कि उन्हें जल्दी में वह स्थान खाली कर देना पड़ा।

खाली करने का आदेश घरों से पहले रात के अन्तिम पहर में आया जिससे हर कोई काम में बुरी तरह व्यस्त हो गया। सिपाहियों को गांव वालों से उधार ली हर चीज लौटा देनी पड़ी, क्योंकि उनका नारा था "जनता से न एक सूई, न एक डोरा।" हर जगह दरवाजों पर उन लोगों के थपथपाने और "मौसी, मौसी" चिल्लाने की आवाज सुन पड़ती। बूढ़ी किसान स्त्री, नींद से एकाएक चौंक कर उठतीं और डरते-डरते दरवाजा खोलतीं। सिपाही उसे पिचका हुआ चावल का बर्तन, जिसके पेंदे में छेद होता, या टूटी कुर्सी थमा देता और उसे पिछले छः माह से वह उधार दिये रखने के कारण धन्यवाद देता।

"हम लोग यहां से जा रहे हैं। पर चिन्ता मत करो, मौसी," वह आश्वासन देता हुआ कहता, "हम वापस आ जायंगे।

वोंग को लाखों काम देखने थे। तेजी से अपने क्वार्टर में लौट कर उसने देखा कि शाह मिंग जबरदस्ती उठकर बिछौने पर बैठ गई है और अपने सामान की गठरी बांध रही है। एक क्षण तक उसने बड़ा दुःख अनुभव

किया, वह समझ नहीं पाया कि उसे कैसे वताया कि वह उसके साथ नहीं जा रही है।

"यह यात्रा वड़ी कष्टपूर्ण होगी !" वह विछौने पर उसकी ओर मुंह कर वैठ गया, और अपनी हथेलियां घुटनों पर रख अधिकारपूर्ण स्वर में वोला, "तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए वेहतर होगा कि तुम हमारे साथ न चलो। मैंने कामरेड फांग के साथ वन्दोवस्त किया है कि फिलहाल तुम उसके माता-पिता के पास रहो।" कामरेड फांग उसका अर्दली था। वोंग जानता था कि जव तक वेटा वन्धक के तौर पर उसके साथ है तव तक वह उसके माता-पिता की वफादारी पर भरोसा कर सकता है।

वह आहिस्ता-आहिस्ता सामान वांधने में लगी रही हालांकि अन्त में वह रुक गई और मानो थकान से चूर होकर आगे झुकी और गोद में पड़ी गठरी पर गाल रख कर पड़ रही। उसने जान लिया कि वह रो रही है।

"यह तो वड़ी आम वात है," वह वोला, "कामरेडों को अक्सर शत्रु के देश में रहना और छिप जाना पड़ता है।"

"मैं तुम्हारे साथ चलना चाहता हूं," उसने सिसक कर कहा।

"किन्तु न तो काफी स्ट्रेचर हैं," उसने नाराजगी से कहा, "और न स्ट्रेचर ले जाने वाले। इसके अलावा हमें सभी घायल सैनिकों को साथ ले जाना है तुम आसानी से दुश्मन की निगाह से वच सकती हो। किन्तु घायल सैनिक के वचने की क्या सूरत है ?"

उसे अपना सामान भी वांधना था। कुछ ही देर वाद जव वह फिर उसके पास आया तो उसने देखा कि उसने रोना वन्द कर फिर सामान वांधना शुरू कर दिया। मुर्ग़ वांग दे रहे थे और तेल के दीये की पीली रोशनी हलकी दिन की रोशनी से और हल्की होकर मन्द पड़ गई। उसे ऐसा अनुभव हुआ मानों वे जल्दी ही गाड़ी पकड़ने वाले हों।

कामरेड फांग के पिता और भाई कब्जों से खोला हुआ एक दरवाजा लेकर आये। उन्होंने उसे सहारा देकर उस पर लिटाया और जून का महीना होने पर भी उसे एक रजाई से ढक दिया। बीमार आदमियों को हमेशा गर्म रखना आवश्यक समझा जाता था। वांग उसकी गर्दन के चारों ओर रजाई लपेटने के लिए नीचे झुका और आहिस्ता से बोला, "तुम बिल्कुल ठीक हो जाओगी। किन्तु फिर भ. सावधान रहना। और जल्दी ही ठीक हो जाना। हम जल्दी ही यहां फिर वापस आ जायंगे।" उसने सिरहाने पर आहिस्ता से सिर हिलाया, उसका चेहरा भीगा और पीला पड़ा हुआ था।

"चिन्ता मत करो, कामरेड। सब ठीक हो जायगा," बूढ़े ने जोर से कहा हालांकि यह जाहिर था कि इस तरह से उस पर जो मुसीबतें और खतरा लाद दिये गए थे, उनकी सम्भावना से उसका दिल भारी हो रहा था। प्रभात कालीन तारों की छाया में जब उसने उन्हें धान के खेतों के पार ले जाते देखा तो उसकी आवाज में मिली हुई जबर्दस्ती की प्रसन्नता की ध्वनि से वांग का हृदय चिन्ता से चंचल हो उठा।

सेना दूसरे जिले में चली गई। यह लड़ाई के आखिरी दिनों की बात है जब कि सभी पक्ष थक गये थे और लड़ाई पर नाक-भौं सिकुड़ने लगे थे जब एक पक्ष नयी कारंवाई के लिए कमर कसता और आगे बढ़ता तो दूसरा पक्ष महज सामूहिक रूप से आत्मसमर्पण कर देता और पहला मौका मिलते ही मुक्त हो जाता। स्थिति बिल्कुल स्वांग की-सी हो गई और समूची की समूची बटालिनें चौपड़ पर पड़ी गोटियों के ढेर की भांति परस्पर-विरोधी कमांडरों में से कभी इसके पास और कभी उसके पास पहुंच जातीं।

इन परिस्थितियों में सीमा के आरपार लोगों का आना-जाना काफी था। किन्तु ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, यह स्पष्ट हो गया कि शाह मिंग का नई चौथी सेना से सम्बन्ध विच्छिन्न हो गया है। बहुत-सी बातें सम्भव थीं। हो सकता था कि दुश्मन को उसका पता चल गया हो या किसी ने विश्वासघात

कर उसका भेद खोल दिया हो या वह अपनी बीमारी से अथवा डाक्टरी चिकित्सा के अभाव में मर गई हो।

एक बार वोंग ने किसी के जरिये से फांग का एक पत्र उसके माता-पिता को भिजवाया जिसमें उनसे शाह मिंग के बारे में पूछताछ की गई थी। उन्होंने उसे सूचना दी कि उन्होंने उसे कुछ दूर एक और गांव में अपने एक रिश्तेदार के पास रहने के लिए भेज दिया था, क्योंकि इस जिले में लोग उसे जानते थे और किसी भी समय उसके पहचान लिये जाने का भय था। किन्तु उन्होंने सुना है कि वहां से वह अपनी ही इच्छा से कहीं अन्यत्र चली गई है।

अन्त में वोंग को एक बार व्यक्तिशः वहां जाकर जांच करने का अवसर मिल गया। एक सौदागर के भेष में वह फांग के माता-पिता द्वारा बताये गये गांव में गया और वहां उसने उनके रिश्तेदार के बारे में, जो चोऊ पा-के अर्थात् आठवें चोऊ भाई के नाम से मशहूर था, पूछताछ की।

चोऊ पा-के चालीस वर्ष के आसपास की उम्र का एक ठिगना आदमी था, जिसकी आंखें उभरी और खोपड़ी घुटी हुई और हरे-से रंग की थी।

अपने लम्बे नीले सूती चोंगे में सलीके से और अकड़कर चलने वाला यह आदमी मामूली किसान नहीं था, बल्कि अकसर व्यापार भी करता था और लकड़ी, रेशम के कीड़ों, नमक, चाय और टैक्सों के बारे में सब कुछ जानता था। वोंग ने ऐसा दिखाया कि उसकी लकड़ी में दिलचस्पी है और क्योंकि वह यहां आ रहा था, इसलिए फांग लोगों ने उसे चोऊ पा-के से उसके बारे में जानकारी हासिल करने के लिए कहा है। चोरू इतना बातूनी निकला कि वोंग ने सोचा कि पा-के नाम उसका उपनाम होगा, क्योंकि पा-के चीनी में एक ऐसे पक्षी का नाम है जो बड़ी आसानी से बोलना सीख लेता है और अपनी होशियारी के लिए मशहूर है। किन्तु इसी समय चोऊ की पत्नी आ गई और दूसरे लोगों ने उसे "आठवें भाई की पत्नी "कह कर बुलाया। इस प्रकार

अन्त में उसे निश्चय हो गया कि उसके पा-के नाम का अर्थ आठवां भाई ही है।

चोऊ ने उसे भोजन के लिए रुकने को कहा। भोजन के दौरान में उसके मेजवान ने उसे टैक्स की जटिलताएं समझाईं और बताया कि इस मामले में किन-किन अधिकारियों को खुश करना पड़ता है और किन-किन सिपाहियों से उसका साबिका पड़ सकता है। यह उन अभागे इलाकों में से था, जिन पर बारी-बारी से जापानियों, साम्यवादियों, कठपुतली सरकार की शान्ति सेना को और न जाने कितनी तरह की अन्य सेनाओं ने, जिनकी चुंगकिंग सरकार के प्रति नाम-मात्र की निष्ठा थी, हमले किये थे।

उन्होंने कुछ प्याले शराब भी इकट्ठी पी। चोऊ ने उसे उस जमाने की बात बताई जबकि जापानी तुंग चोऊ की तरफ से आये थे।

"वे सीधे घर में घुस आये," वह बोला, "और उनके दल के अफसर ने मुझसे पूछा, 'तुम साधारण नागरिक हो ?', फिर उसने मुझसे पूछा, "तुम चीनी सैनिकों को पसंद करते हो या जापानी सिपाहियों को ?' मुझे मालूम नहीं था कि क्या उत्तर देना ठीक होगा। मैं यह भी नहीं जानता था कि वह चीनी था या जापानी। वह चीनी भाषा बहुत अच्छी बोल रहा था।"

"किन्तु भाषा की ध्वनि से अच्छी तरह पहचाना जा सकता है," वोंग ने कहा। फिर उसे याद आया कि किसानों को सब सैनिकों की बोली एक-सी लगती है, एक दम पराई, चाहे वस चीनी भाषा बोलने वाला जापानी हो या मण्डारिन बोलने वाला उत्तरी चीनी।

"किन्तु," चोऊ बिना रुके बोला, "ध्वनि से भी नहीं पहचाना जा सकता पहचानने का एकमात्र तरीका है उनके बूटों को देखना। बिल्कुल अलग-अलग होते हैं बूट। किन्तु मुझे बूटों को देखने का साहस नहीं हुआ।" उसने उसकी उस समय की मुद्रा दिखाने के लिए अपना सिर उठाया और गर्दन अकड़ा ली,

मानों वह अटेंशन की मुद्रा में खड़ा हो । इसके बाद मुस्कराते हुए अपना सिर थोड़ा-सा हिलाकर उसने कहा, "नीचे देखने का मुझे साहस ही नहीं हुआ ।"

वोंग ने धैर्य के साथ कहा, "हां, मेरा ख्याल है, लोगों को ऊपर से नीचे तक देखना असभ्यता लगता है ।"

"तब मैंने उसे क्या उत्तर दिया, जानते हो ? मैंने आह भर कर कहा, 'महाशय, हम लोगों का सचमुच ही बड़ा कठोर जीवन होता है ! जब कभी हम किसी सैनिक को देखते हैं, चाहे वह जापानी हो या चीनी, हमारे लिए कोई अन्तर नहीं पड़ा । हम चाहते हैं सिर्फ शांति—वह हम सबके लिए आवश्यक है । और वह बोला, 'तुम ठीक कहते हो ।' और इस तरह मुझे पता लगा कि वह जापानी था," उसने अपने आप में खुश होते हुए बात खत्म की ।

भोजन के बाद वोंग जाने के लिए उठ खड़ा हुआ । यह पक्के तौर पर जान कर कि वोंग तुरंत ही पड़ोस के कस्बे में जा रहा है और उसे रात पड़ने से पहले ही वहां पहुंच जाना है, चोऊ ने शिष्टाचारवश उसके साथ कुछ दिन ठहर नहीं सका ।

"तुम्हारी उदारता मैं कभी नहीं भूलूंगा," वोंग ने कहा, "हालांकि तुम्हारे अतिथि सत्कार के बारे में मैंने पहले ही काफी-कुछ सुन रखा था। मुझे अब याद आया, मेरी एक रिश्तेदार है, एक युवती, मैंने सुना है, वह भी यहां से गुजरते हुए तुम्हारे यहां ठहरी थी । अरे, मैं तुम्हें धन्यवाद तक देना भूल गया ।"

"कौन-सी युवती ?" चाऊ ने कुछ रुक कर पूछा ।

"वह फांग परिवार के साथ रहती थी," वोंग ने इरादतन उसकी ओर देखते हुए कहा ।

चोऊ घबरा गया। उसने कहा, "तुम्हारा ख्याल गलत है। हमारे यहां कोई युवती नहीं आई।"

मुमकिन है उसने अपनी आयु उससे छिपाई हो। "खैर, मैं, उसे हमेशा युवती ही समझता रहा हूं", वोंग ने हंसते हुए कहा, "मुमकिन है, इसलिए कि जब मैंने आखिरी दफा उसे देखा तो वह बिलकुल एक लड़की-सी लगती थी। दरअसल उसकी उम्र ज्यादा ही होगी अधेड़ उम्र की, कह सकते हो उसे।"

"नहीं," चोऊ ने कहा, "अधेड़ उम्र की भी स्त्री मेरे यहां नहीं आई।"

"मैंने सुना है, बीमारी से उसकी उम्र काफी बड़ी लगती थी। वह जरूर बूढ़ी-सी लगती होगी।"

"नहीं, कोई बूढ़ी भी नहीं आई।" चोऊ ने दृढ़ता से कहा।

वोंग अच्छी तरह जानता था कि चोऊ की चुप्पी का कारण यह भय भी हो सकता है कि कहीं वह किसी साम्यवादी स्त्री की तलाश में किसी दूसरे पक्ष का एजेंट न हो। इसलिए वोंग ने एक असावधानी कर दी और अपनी असलियत प्रकट कर दी।

"सच बात कहने में घबराओ नहीं," वह बोला, मैं नई चौथी सेना का आदमी हूं। तुम बेखटके मुझे ठीक-ठीक बता सकते हो कि क्या हुआ। अगर तुम कोई बात छिपाओगे, तो तुम्हीं को नुकसान होगा।"

चोऊ अजीब परेशानी में पड़ गया। यह आदमी अपने आप को साम्यवादी कहता है किन्तु इस बात की ठीक-ठीक कोई पहचान नहीं की कि वास्तव में वह किस पक्ष का आदमी है। इस मर्तबा उसके बूटों से भी कोई मदद नहीं मिल सकती, क्योंकि नागरिक वेश में होने के कारण उसने बूट पहने ही नहीं हुए।

चोऊ कुछ समय तक टालता रहा और यही रट लगाये रहा कि किसी भी उम्र की स्त्री ने उसकी चौखट नहीं लांघी।

"फांग परिवार का कहना है कि उन्होंने उसे तुम्हारे यहां भेजा था। तुमने उसका क्या किया? उसे सैनिकों के सुपुर्द कर दिया?" वोंग ने जोर देकर पूछा।

"हे ईश्वर, मुझे इस बारे में कुछ भी पता नहीं है! फांग परिवार के लोग झूठे हैं, अगर उन्होंने ऐसा कहा है। भला मेरे साथ वे ऐसा क्यों कर रहे हैं?"

"तुमने हमारे एक आदमी को कब्र में पहुंचाया है और तुम्हें उसका दंड भोगना पड़ेगा," वोंग ने कहा।

काफी धमकियों के बाद चोऊ अन्त में फूट पड़ा और उसने स्वीकार किया कि उसने एक बीमार लड़की को अपने यहां आश्रय दिया था। उसने सोचा कि यदि अन्त में वोंग दूसरे पक्ष का आदमी सिद्ध हुआ तो वह मजे में कह सकता है कि उसने उससे छुटकारे का एकमात्र उपाय होने के कारण ही यह कहानी मजबूरन गढ़ी थी।

"अब वह कहाँ है?" वोंग ने पूछा।

"अष्टमी के दिन वह हमारे यहां से चली गई। उसने कहा था कि वह किसी अस्पताल में भर्ती होने के लिए चिनकिपांग जा रही है। उसका कहना था कि वहां उसके रिश्तेदार हैं।"

"वह अकेली गई?"

"यहां से जाते समय उसकी हालत काफी अच्छी थी। उसका कहना था कि वह अकेली यात्रा कर सकती है।"

वोंग ने और भी प्रश्न किये किन्तु इससे अधिक वह कुछ नहीं जान सका।

उसे उसकी बात विश्वसनीय लगी, क्योंकि उसका सचमुच ही चिनकियांग में एक चाचा था।

वोंग काफी प्रसन्नता से अपनी जगह पर लौट गया। किन्तु जल्दी ही उसे और संदेह होने लगे। यदि वह चिनकियांग जैसे शहर में थी, जहां से किसी द्वारा सम्पर्क कायम करना अपेक्षाकृत आसान था, तो उसने उसके साथ या अपने किसी भी साथी के साथ चिट्ठी-पत्री क्यों नहीं की।

उसके बाद यह अफवाह सुनी गई कि वह चिनकिगांग में देखी गई थी। क्योंकि यह बात अधिकाधिक स्पष्ट हो गई थी कि वह साम्यवादी लक्ष्य भ्रष्ट हो गई है, इसलिए पार्टी की बातचीत में उसका नाम कई बार उठा और वोंग ऐसे मौकों पर अधिक से अधिक यही कह सकता था कि यह अफसोस की बात है कि उसका आधार सुदृढ़ नहीं था। किन्तु मध्यवित्त बूर्जुआ वर्ग हमेशा ही ढुलमुल और अविश्वसनीय होता है। मुझे दुःख है कि मैं उस पर अपना प्रभाव नहीं डाल सका।"

उसके मन में पहली बार यह ख्याल उठा कि क्या यह उसके साथ सुखी थी। क्यों कि बाहरी दुनिया ने तो उनका विवाह स्वीकार किया नहीं था, इसलिए मुमकिन है, उसने किसी और आदमी से शादी कर ली हो और किसी छोटे कस्बे में साधारण गृह-पत्नी का नीरस जीवन बिताने लगी हो। वोंग अपने मन में सोचने लगा कि उसके निज के व्यक्तिगत ख्याल की बात छोड़ दी जाय तो भी अच्छा होगा कि वह अपने खुद के लिए फिर से क्रान्ति में लौट आये। उन मुसीबत के दिनों में पार्टी किसी के भी प्रति बहुत कठोर नहीं थी। पार्टी को छोड़ कर भाग जाने वाले उचित पश्चात्ताप प्रकट करने के बाद हमेशा वापस ले लिए जाते थे।

वोंग उस समय सेना के साथ था, जब कि वह रात के समय एक नगर में प्रवेश कर रही थी। यह नगर कई बार इस हाथ से उस हाथ जा चुका

था और वहाँ अनेक लड़ाइयां लड़ी जा चुकी थीं। नदी के मोर्चे से गुजरते हुए मुख्य सेना से पिछड़ा हुआ एक दस्ता एक उजाड़ और पत्थरों से मढ़ी गली में घुसा जिसके दोनों ओर ऊंचे-नीचे सफेद ध्वस्त मकान थे। ऊंची छतें होने के कारण दुमंजिले मकानों के लिहाज से वे बहुत ऊंचे थे। एक बिना छत के मकान के पास से जिसमें खिड़कियों की जगह छोटे काले छेद थे गुजरते हुए वोंग की निगाह ऊपर की ओर गई। तीसरी मंजिल की एक खिड़की से एक लड़की को अपनी ओर ताकते देख कर उसे एक धक्का-सा लगा। उसे यह कल्पना भी नहीं थी कि ये मकान अब भी रहने लायक है।

यद्यपि निरन्तर प्रगाढ़ हो रहे झुटपुटे के अन्धेरे लड़की का चेहरा एक सफेद चिन्ह से अधिक कुछ नहीं था, तो भी यह स्पष्ट था कि वह सुन्दर थी और यह देखकर उसे आश्चर्य हुआ कि मानो वह उसकी ओर देखकर मुस्करा रही हो। उसने दूसरी ओर निगाह फेर ली, यह सोचकर कि वह जानता है कि यह मकान कैसा है। किन्तु इन दुश्चरित्राओं को यह मालूम होना चाहिए कि वे नई चौथी सेना के साथ यह धन्धा नहीं कर सकतीं और तभी एक नये विचार से चौंक कर उसने फिर ऊपर देखा। उसकी अन्तरात्मा चिल्लाई 'शाह मिंग जरूर यह शाह मिंग है।" किन्तु वह चेहरा उस समय तक अदृश्य हो चुका था, मानो उसकी अन्तरात्मा की आकस्मिक पुकार उसके कानों में पहुंच गई हो और उसने उसे डरा दिया हो।

सैनिकों की कतार में से निकल कर वह खिड़की की ओर देखता खड़ा रहा। क्या वह उससे बचने की चेष्टा कर रही है? किन्तु अभी तो वह उसकी ओर देख कर मुस्करा रही थी। वह काली अंधियारी और टूटी-फूटी सीढ़ियों से तेजी से उतर कर आ रही होगी। वह टक्कर खा कर गिर पड़ेगी और उसनी गर्दन टूट जायेगी। उसन एक आयताकार खुला स्थान देखा जो किसी समय दरवाजा रहा होगा। और उससे वह जल्दी से भीतर घुस गया।

एक क्षण तक वह असमंजस में खड़ा रहा यह निश्चय नहीं कर सका कि यह क्या हो गया है। ठण्डी हवा का एक झोंका उसके गालों पर लगा। काली शक्लें उसके इर्द गिर्द घूम रही थी। किन्तु उसके ऊपर एक धुंधली नीली बैंगनी रोशनी थी पांवों के नीचे झींगुरों की तीखी आवाज-सी मालूम पड़ती थी। वह बाहर खड़ा था। सारा मकान बारूद से उड़ा दिया गया था, सिर्फ आगे का कुछ भाग बचा था, जिसके पीछे मलबे के सिवाय कुछ नहीं था।

उसकी आंखें दूसरी मंजिल की खिड़की को ढूंढ़ रही थी, जहां उसने लड़की को देखा था, बायीं ओर से दूसरी—अन्दर से देखने पर दायीं ओर से पहली। परन्तु वहां सिर्फ एक आयताकार छिद्र था संध्या के आकाश की पृष्ठ भूमि के सामने अकेली खड़ी ऊंची-नीची सफेद दीवार में। खिड़की के धूल भरे शून्य के भीतर, जहां अब तारे नजर आने लगे थे, देखते समय उसे ऐसा लगा, जैसे उसकी खोपड़ी ठण्डी पड़ गई और उसमें तनाव पैदा हो गया है।

दूर वीरान सड़क पर चलते सिपाहियों के जूतों की ठक-ठक की तालबद्ध आवाज उसके कानों में पड़ रही थी। क्रमशः दूर जाती हुई पद चाप सुनकर बोंग एकाएक भय से पागल हो उठा। वह कूदकर सड़क पर आ गया और उनके साथ जा मिलने के लिए तेजी से भागा।

यद्यपि यह हृदय तोड़ देने वाला अनुभव था तो भी उसे एक प्रकार का गर्व अनुभव हुआ। उसे यकीन हो गया कि वह उसके सामने इसलिए इस ढंग से प्रकट हुई थी ताकि उसे यह जता सके कि वह मर गई है। वह यह नहीं चाहती थी कि वह उसके बारे में यह ख्याल करे कि उसने उसके साथ बेवफाई की है।

किन्तु तभी उसे दी गई शिक्षा बीच में आ खड़ी हुई और उसने उसने

कहा कि नहीं, यह सब सिर्फ अन्धविश्वास है। मजबूरन वह इस नतीजे पर पहुंचा कि उसे खोने के साथ-साथ उसने अपनी बुद्धि भी खो दी है।

अनेक वर्ष तक उसे उसके बारे में कोई निश्चित बात सुनने को नहीं मिली। किन्तु समूचे चीन पर साम्यवादी अधिकार हो जाने के बाद एक बार एक स्थान से दूसरे स्थान पर तबादले के दौरान में उसे एक ऐसा पुराना साथी मिला, जो उन दोनों को जानता था। उसने उसे बताया कि उसने शाह मिंग को सूचोऊ में देखा था किन्तु जब वे दोनों मिले तो उसने ऐसा दिखाया कि मानों वह उसे पहचानती ही न हो, इसलिए उसने उससे अभिवादन नहीं किया। परन्तु बाद में जांच करने पर उसे पता चला कि उसने अब विवाह कर लिया है, उसके दो बच्चे हो गये हैं और अब वह बांस के फरनीचर और तिनकों के स्लीपरों की एक दूकान चलाती है। वोंग पर इस खबर से बहुत असर नहीं पड़ा। भावुकता के क्षीण हो जाने के बाद बहुत पहले से ही उसने अपने मन को समझा लिया था कि वह अभी तक जीवित है, उसके बच्चे हैं और किसी और के घर में वह धीरे-धीरे बुढ़ापे की ओर बढ़ रही है।

उन्नीस वर्षों में पहली बार उसे अपने निज के गांव जाने का मौका मिला। उसकी मां अभी तक जिन्दा थी, किन्तु अब उनमें कोई समानता नहीं रह गई थी। उसके पास उससे कहने को दुःख, शान्ति और कष्टों की कहानी के सिवाय और कुछ भी नहीं था और भले दिन फिर लौट आने का उसका कोई भी आश्वासन उसे प्रसन्न नहीं कर सका। उसके परिवार ने बहुत पहले एक लड़की को, जब कि वे दोनों छोटे थे, घर में लाकर उसकी शादी का इन्तजाम किया था। उन्होंने उससे एक गुलाम लड़की से भी अधिक कड़ी मेहनत करायी, जिससे वह काफी बूढ़ी और बदसूरत हो गई थी। वोंग ने उसके साथ यथोचित व्यवहार किया और उससे शादी कर ली। किन्तु जब कभी वह घर जाता, जैसा कि कभी-कभी ही होता, वह पहले से अधिक अकेलापन अनुभव करता।

यद्यपि उसका कोई घनिष्ट मित्र नहीं था, तो भी अपने ऊपर के अधिकारियों को छोड़कर हरेक के साथ उसकी खूब पटती थी। इसीलिए जब कभी कोई गलती हो जाती तो उसी की आलोचना होती और उसी पर दोष मढ़ा जाता। सभाओं में भी, अगर उसकी दलीलें ठीक होतीं तो भी, सभापति उपसंहार में उसकी बातों को तोड़-मोड़ कर ऐसे ढंग से पेश करता कि वे उसके लिए उल्टी पड़ जातीं। साम्यवादियों का देश पर अधिकार हो जाने के बाद उसकी कोई तरक्की नहीं हुई। बल्कि इसके बजाय उसे "बदलती हुई परिस्थितियों के साथ कदम मिलाकर चल सकने के अयोग" करार दे दिया गया। किन्तु जीवन भर कान पू रहने के कारण उसे और बहुत-से पुराने कान पू लोगों की भांति पेंशन देकर देहात में एक छोटे से पद पर नियुक्त कर दिया गया।

उसका पार्टी की समग्र नीति से कोई झगड़ा नहीं था। उसे इस बात का प्रशिक्षण मिला था कि उसे बिना किसी एतराज के स्वीकार कर लेना चाहिए। उसे चिढ़ लगती थी छोटी-छोटी सी बातों से मसलन अधिकारियों की पत्नियों का बिना कुछ काम-धाम किये वेतन पाना या बड़े आदमियों के रसूख के बिना कोई काम न होना। उसे ऐसे कामों से चिढ़ थी, जो उसकी नजरों में एकदम अन्धाधुन्ध फिजूल खर्ची थे, जैसे कि महज तिब्बत से आने वाले प्रतिनिधियों को खुश करने के लिए पेकिंग और शंघाई में फिर से मंदिरों का पुरानी शान और वैभव के साथ पुनर्निर्माण। वह जानता था कि यह सब पैसा कहाँ से आता है। उसे खुद किसानों से उसे वसूल करना पड़ता था।

वह अकसर बिगड़ उठता था, किन्तु उसका क्रोध एक एकाकी और असहाय आदमी का क्रोध था, जिसका उसके मित्र भी मजाक उड़ाते थे। उसका मिजाज देर तक नहीं बिगड़ा रहता और हमेशा अपने आप ही ठीक हो जाता था। उसके लिए संसार में पार्टी के सिवाय और कुछ नहीं बचा था।

अध्याय ७

शरत्कालीन स्कूल में पढ़ाना उसे अधिक कठिन काम मालूम हुआ जितनी कि कू ने सोचा था। स्कूल पांच मील दूर था। और उसे इतना पैदल चलने की आदत नहीं थी। इसके अलावा उसकी भूख नहीं मिटती थी। एक सप्ताह बीत जाने पर भी, जब वह दम घोंटने वाली तेज उत्तरी हवा का सामना कर हांफता हुआ वहां पहुंचता और ब्लैक बोर्ड के सामने जा कर खड़ा होता तो उसे इतनी कमजोरी महसूस होती कि उसके हाथ से चाक गिर-गिर जाती।

भोजन बहुत निकम्मा था। वह और सब चीजों के लिए दृढ़ता से तैयार होकर देहात में आया था, किन्तु इसके लिए वह तैयार नहीं था। अनेक मित्रों ने, [जो भूमि सुधार में सहायता देने के लिए देहातों में हो आये थे उसे बड़प्पन के भाव से, जो पूरी तरह छिपा हुआ नहीं था, सलाहें दी थीं। उन्होंने कहा था, "किसान बड़े सीधे-सादे होते हैं। जब वे तुम्हारे साथ मित्रता अनुभव करेंगे तो अपने मुंह की पापड़ी तक तुम्हें दे सकते हैं। अगर वे तुम्हें दें तो तुम उसे जरूर खालो। फिर, हो सकता है किसान की पत्नी ने जिस कपड़े से अभी-अभी बच्चे के चूतड़ पोंछे हैं, उसी से कुर्सी पोंछ कर वह तुम्हें उस पर बैठने के लिए हिचकिचाना और उसके दिल को चोट पहुंचाना नहीं चाहिए।" उसने किसानों को उतना भोला नहीं पाया, जितना कि उसे बताया गया था। और वे तिल पापड़िया क्या हुईं? यहां तो उनके पास पतली लप्सी के सिवाय कुछ नहीं है और उसमें भी एक-एक इंच लम्बे घास के टुकड़े तैरते रहते हैं।

निःसन्देह इस बारे में वह किसी से शिकायत-शिकवा नहीं कर सकता था और कामरेड वांग से तो किसी भी तरह नहीं। इसलिए उसके पास यह जानने का कोई जरिया नहीं था कि यह स्थिति सिर्फ यहीं थी या काफी बड़े इलाके में फैली हुई थी। उसे अखबारों में देश के इस या किसी अन्य भाग में दुर्भिक्ष की कोई खबर नहीं मिली थी। उसे ऐसा विचित्र अनुभव होने लगा मानो वह देश और काल दोनों की सीमा से बाहर आ गिरा हो और कहीं भ। नहीं रहा हो।

भूख की विचित्र, नारस और कचोटने की-सी अनुभूति ने जो उसके लिए एक नई चीज थी और दांत के दर्द और सिर की पीड़ा के बीच की मिश्रित अनुभूति थी, उसके लिए और सभी चीजें असार बना दी थीं—धूप से उजले खेत, पहाड़ी पर लकड़ियां काटने वाले लकड़हारे, और दूर से हवा में बहकर आती घंटों व कांसे की थालियों की आवाज, जिनका पुनः अभ्यास करने के लिए धान-अंकुर-गीत दल को आदेश दिया गया था जो इस सांस्कृतिक सैनिक के निरीक्षण में नाचता था।

यह विश्वास करना कठिन प्रतीत होता था कि लोग पहले की भांति कैसे काम कर रहे हैं। वे दिन में तीन बार खाना पकाते। लकड़ी का नीला धुआं अपनी स्पष्ट और कड़वी गन्ध के साथ बहुत देर तक गीली हवा में लटकता रहता। दोपहर के समय समूचे देहात में काली छतों वाले सफेद मकान अपनी दीवारों के भीतर बने चौकोर छिद्रों से धुआं उगलते। यह धुआं आहिस्ता-आहिस्ता ऐसे निकलता जैसे कि पवित्र चरम आत्मिक आनन्द के क्षण में आत्मा शरीर का त्याग कर निकल और विलीन हो रही हो। इस दृश्य को देखते हुए कू को कनफ्यूशियस या किसी अन्य सन्त की यह उक्ति याद आती कि "इन्सान के लिए भोजन ही ईश्वर है।" पतली चावल की लप्सी पकाने के बर्तनों के नीचे अंगीठियों से उठ कर हवा में विलीन

होता लकड़ी का धुआं देखते हुए वह सोचता कि अब भोजन ही उनके लिए ईश्वर है तो इस तरह कितने दिन चल सकता है ?

उसे भय हुआ कि उसका वजन गिर रहा है। इससे उसे सबसे ज्यादा चिन्ता हुई। भूमि सुधारों में भाग लेने वाले हर आदमी ने यह शोखी बघारी थी कि वह देहात में तीन महीनों के भीतर मोटा हो गया था। कुछ ने दावा किया था कि उनके सब पुराने से पुराने रोग दूर हो गये थे। जो लोग इस भयानक अग्नि परीक्षा से परे रहना चाहते थे, उनसे वे कहते, "यह कठोर जीवन आवश्यक है, किन्तु यदि तुम्हारी विचारधारा परिपक्व हो गयी है, तो तुम वहां मोटे हो जाओगे।" इसकेविपरीत पतला हो जाना इस बात का संकेत होगा कि उसके भीतर संघर्ष चल रहा है, अवचेत मन में विद्रोह मौजूद है। कू को फिक्र होने लगी कि वह अपने मित्रों और सहयोगियों के सामने कैसे जायगा। दो-तीन महीने और ऐसे बीते नहीं कि वह मरे कौए की तरह दुबला हो जायगा। और इसके लिए हम दुर्भिक्ष को भी जिम्मेदार नहीं ठहरा सकेगा। इसका वह तब तक किसी से जिक्र भी नहीं कर सकता था, जब तक कि उसे झूठी द्वेषपूर्ण अफवाहें फैलाने वाले राष्ट्रवादी जासूस के रूप में गिरफ्तारी का खतरा उठाने की इच्छा न हो।

वह सोचने लगा कि ऐसा लगता है शरीर के अपोषण और काम के अधिक घंटों के मामले में पार्टी के कामरेड अपना भौतिकवादी दृष्टिकोण त्याग देते हैं और जब प्रकृति पर मन की उत्कृष्टता का हमेशा के लिए प्रतिवादन कर अत्यन्त अध्यात्मवादी बन जाते हैं और यह सोच कर वह एक तरह से अपनी निजकी व्यंग्य विनोद की प्रतिभा की प्रशंसा करने लगा। शाओशिंग ओपेरा की प्रसिद्ध नर्तकी और क्षयरोग ग्रस्त सुन्दरी कुमारी परिमलमयी फू का, जिसने भूमि सुधार के काम में भाग लिया था, मामला याद कर, जिसकी खूब प्रसिद्धि की गई थी, उसका मन कड़वाहट से भर गया। फू ने अपने तमाम मित्रों को लिखा था कि किस प्रकार कठिन परिस्थितियों में उसका स्वास्थ्य

सुधर गया था। उसने लिखा था कि उसने सन्देशवाहक का काम किया है और एक पत्र पहुंचाने के लिए दो फुट गहरी वरफ पर तिनकों की चप्पलें पहनकर तीस मील का पैदल सफर किया है। अब वह एक वक्त के भोजन में चावल के तीन बड़े कटोरे भरकर खा सकती है और उसका वजन बीस पौंड बढ़ गया है। चावल के तीन कटोरे ! कू सोचने लगा कि वह खुद चावल के तीन बड़े कटोरे पेट में उतार सकता है।

इस अतृप्त चाट के भूत के बावजूद वह काम का प्रयत्न करता रहा। वह कहानी के लिए ऐसी सामग्री की तलाश में था जिसे इस ढंग से पेश किया जा सके कि वह भूमि सुधार के बाद कृषक वर्ग की फलती-फूलती और प्रगतिशील स्थिति पर रोशनी डाल सके। अपने हृदय में वह अब भी यही समझता था कि "सब मिलकर" देहात फल-फूल रहे होंगे। उसने इस शब्दावली को बहुत उपयोगी पाया।

उसने अनेक लोगों से बात चीत की। कामरेड वोंग के साथ सिपाहियों के परिवारों को देखने के लिए वह कई पड़ोसी गांवों में गया। लोग बड़े अच्छे थे किन्तु उनके पास कहने को बहुत अधिक कभी नहीं होता था। दूसरी ओर कुछ थोड़े से लोग ऐसे भी थे जो शायद यह समझ कर कि वह निरीक्षण के लिए आया कोई उच्च अधिकारी है और उनकी दशा सुधार सकता है, उससे खूब बातें करते थे। रुक-रुक कर संकोच से वे अस्पष्ट शब्दों में उसे यह बताते कि वस्तुतः उनकी हालत आज पहले से भी ज्यादा खराब है। इस प्रकार के मामलों को निबटाने के लिए कू ने एक सीधा-साधा तरीका निकाल लिया था, वह उन्हें यह कह कर टाल देता कि उनकी राय "आम राय" नहीं है।"

कामरेड वोंग संभवतः बड़ी मौसी को "आम लोगों का प्रतिनिधित्व करने वाली" कहता। किन्तु कामरेड वोंग कभी उनके साथ रहा नहीं था, इसलिए वह नहीं जानता था कि उसका घिसे-घिसाये वाक्यों को बार-बार दोहराना बड़ा नीरस हो सकता था। कभी-कभी कू को ऐसा लगता था कि

वह एक निहायत बेशर्म झूठी है। उसने सुवर्णमूल तान और उसकी पत्नी से भी मुलाकात की। वे दोनों शर्माते प्रतीत होते थे, किन्तु कू को अब भी आशा थी कि जब वे उससे और अधिक परिचित और अभ्यस्त हो जायंगे तो शायद उसके आगे खुलकर बात कर सकें।

सुवर्णमूल शरत्कालीन स्कूल में बड़ी गम्भीरता से जाता। चन्द्रगन्धा भी नियम पूर्वक उसमें जाती, क्योंकि उसे लगता कि उसका पति उसमें जाना पसन्द करता है। उसने वहां सिखाये जाने वाले कुछ गीतों " पूर्व लाल है " और "अमरीकी भेड़ियों को मार भगाओ" की धुनें सीख लीं, किन्तु वह वहां पढ़ाये जाने वाले पाठों पर कोई ध्यान नहीं देती। उसकी आत्म-सुधार में कोई दिलचस्पी नहीं थी। अपने विवाहित जीवन से ही सुखी रहने वाली अन्य सभी स्त्रियों की भांति वह भी पूर्ण सन्तुष्ट थी।

सुवर्णमूल कू के पास गया और उससे बोला कि वह उसे 'दरवाजा' 'मेज' और 'कुर्सी,आदि घर के भीतर की चीजों के लिए लिखाई के चीनी अक्षर लिख दे ताकि वह उन्हें काट कर और उन-उन चीजों पर चिपका दे। सब लोग कू को ये चित्राक्षर बनाने के लिए कूची चलाते देखने को उसके दरवाजे के आस-पास आकर इकट्ठे हो गये। चन्द्रगन्धा भी आई और हिरण्मय की पत्नी के गले में बांह डालकर और पंजों के बल खड़ी होकर झांकने लगी।

तब वह बोली, "बहन, तुम्हारे तो अपने घर में अध्यापक हैं, फिर भी यदि तुम पाठ न सीखो तो सचमुच तुम्हें शर्मिन्दा होना चाहिए !" और अपने से बड़ी हिरण्मय का प्रौढ़ा पत्नी को धक्का देकर हंसती हुई भाग गई।

हिरण्मय की पत्नी शर्मा गई और दुविधा से मुस्कराने लगी, क्योंकि अब तक कभी किसी ने उससे मजाक नहीं किया था। और इस पर कू ने भी मुस्कराते हुए नजर ऊपर उठाई। उसने सोचा, शायद कभी-कभी यह ग्रामीण सुन्दरी भी साहस करके उससे बातचीत कर सकती है।

उसने सोचा, वह उसके चारों ओर अपनी कहानी का ताना-बना बुन सकता है। वह सही अर्थों में पृथ्वी की पुत्री थी, शहर में रहकर भी वहां के जीवन से अछूती रही। वह "भूमि पर काम करने के लिए लौटने" की पुकार के उत्तर में शहर से वापस आई है और उसने देखा कि वह अपने इर्द-गिर्द के अन्य लोगों से अधिक सुखी प्रतीत होती है।

एक दिन जब वह सैर करके लौटा तो उसने उसे एक पेड़ पर अपने धुले कपड़े सुखाते देखा। उनमें बच्चों की कुछ छोटी कच्छियां थीं जो लाल-गुलाबी रंग की पुरानी सूती छींट से बनाई गई थीं और पेड़ की ऊंची शाखाओं पर फैली हुई बड़ी सुन्दर लगती थीं। शरद ऋतु के मध्य के दिनों में पेड़ फूलों से उज्ज्वल लगता था। वह बहुत ऊंची नहीं थी, किन्तु उसका बदन गठीला था। कू सोचने लगा, गर्मी के दिनों में इन मोटे कपड़ों के बिना, जिन से हर स्त्री गर्भवती-सी लगती है, वह कैसी लगती होगी। कमरबन्द पतलून पेट के ठीक ऊपर मुड़ी हुई थी जिससे जाकर बाहर की ओर फूल रही थी।

"जाड़े के दिनों में यहां शंघाई से ज्यादा ठंड होती है," वह बोला।

उसने प्रसन्नता से उससे सहमत प्रकट की। वह दोनों घरों के बीच पड़े पत्थर पर बैठ गया और उससे पूछने लगा कि जब वह शंघाई में थी तो कहां रहती थी। उसने जो स्थान बताया, वह उसके अपने स्थान से दूर नहीं था। उसने कहा कि उस जगह एक आराम था कि बाजार सिर्फ कुछ ही मकान परे था।

आज उसे लगा कि उसके पास पहुंचना निहायत आसान है। जब उनकी बात जम गई तो वह उससे पूछने लगी कि उनके परिवार में कितने आदमी हैं, कितने नौकर हैं क्या घर में वही लोग अकेले रहते हैं और क्या शंघाई में उनके बहुत-से मित्र और रिश्तेदार हैं। एकाएक उसे यह महसूस कर धक्का लगा कि उसकी बातचीत का प्रयोजन उससे यह पता लगाना है कि

क्या वह उसे शहर में कोई काम दिला सकता है और सम्भव हो तो उसके पति को भी कहीं अड़ा सकता है।

उसके बाद वह उसके पास कभी नहीं गया।

वह नियमित रूप से अपनी पत्नी एवं मित्रों को पत्र लिखा करता था और चिट्ठियां डाक में डालने के लिए तीस मील दूर कस्बे तक पैदल जाता था। उसके बाद वह वहीं किसी होटल में खाना खाता—चावल, या अंडे के साथ बनी सेवइयां, मांस, सोयाबीन का दही, सब्जियां और बांस की नर्म जड़ों की तरकारी। वह कस्बे की इन यात्राओं की बड़ी अधीरता से प्रतीक्षा करता। तभी एक दिन कामरेड वोंग उसके यहां आया और बोला कि "क्या तुम्हें काई चिट्ठी डाक में छोड़नी है? मैं एक सभा के लिए शहर जा रहा हूं और उन्हें डाक में डाल सकता हूं।"

उसने अनुभव किया कि वह गुस्से से कांप रहा है। मन ही मन उसने सोचा तो ये लोग उसे कई दिनों बाद मिलने वाले इस एक भर पेट भोजन से भी वंचित करना चाहते हैं। किन्तु तभी उसने अपने आपको संभाल लिया। उसने सोचा, सम्भव है कि वोंग ने कस्बे में जाने पर मुझ पर निगरानी रखी हो, किन्तु शायद उसने अपने निज के पैसे से उसके यहां भर पेट खाने पर ऐतराज न किया हो, भले ही इससे उसके मन में उसके लिए घृणा हो गई हो।

"नहीं, मुझे कोई पत्र नहीं डालना," उसने मुस्कराते हुए कहा। भाग्य से कल रात जो पत्र उसने लिखा था, उसे मेज पर रखकर उसने उस पर एक किताब रख दी थी ताकि लिफाफा अच्छी तरह दब जाय। गोंद जब से जनता के लिए सुलभ करने के वास्ते सस्ती हुई, तब से कभी चिपकती नहीं थी।

उसका इस तरह झूठ बोलना पागलपन था। यदि वोंग अचानक किताब उठा ले और किताब पर उसकी नजर पड़ जाय तो वह अवश्य यही सोचेगा

कि इसमें कोई गुप्त बात लिखी है। नहीं तो वह उसे किसी के हाथ में देने से क्यों घबराता है ?

जैसे भी हो उसे वोंग को इस कमरे से जल्दी से जल्दी टाल देना चाहिए।

"नव वर्ष का दिन आ रहा है, तुम्हें जरूर घर की याद आती होगी," वोंग ने उसकी पीठ थपथपाकर मजाक करते हुए कहा, "क्या अपनी प्रेमिका का अभाव खटकता था ?" पत्नी के लिए उसने साम्यवादियों का स्वीकृत 'प्रेमिका' शब्द प्रयोग किया।

कू मुस्कराया, "कामरेड वोंग, तुम नव वर्ष के दिन अपनी प्रेमिका से मिलने घर जा रहे हो ?"

"मैं दो वर्ष से घर नहीं गया," वोंग मुस्कराते हुए बोला, "कारण, तुम जानते ही हो। वक्त ही नहीं मिलता।"

"कामरेड वोंग, तुम जनता की सेवा में अत्यधिक तत्पर हो। और सुबह से रात तक इतने व्यस्त रहते हो। मुझे तुम से कुछ सीखने का वक्त ही नहीं मिलता।

"तुम बड़ी विनय दिखा रहे हो। अपने दोस्तों के साथ इतनी विनय दिखाने की आवश्यकता नहीं है।"

"नहीं, वास्तव में ही मुझे कुछ चीजों पर तुमसे सलाह-मशविरा करना है। अगर तुम आज सुबह कस्बे जा रहे हो तो फर्ज करो मैं भी तुम्हारे साथ धरित्री भी देवता के मंदिर तक चलूं तो कैसा रहे ? हम रास्ते में बातें कर सकेंगे।"

"हां—दरअसल मुझे इससे पहले ही चल देना था।"

कामरेड छोटा चांग घर के बाहर वोंग की इन्तजार कर रहा

था। स्थानीय मिलीशिया के आदमी कोई वर्दी नहीं पहनते थे और हथियार का काम भी उनमें से अधिकतर को हुंडों, तलवारों या वरछों से चलाना पड़ता था। किन्तु छोटा चांग हमेशा राइफल लेकर चलता था। जब वे अपने अंगरक्षक को अपने पीछे-पीछे लेकर गांव से वाहर निकले तो उनका खूव रौवदाव मालूम पड़ा।

कामरेड वोंग ने कू से पूछा कि उसकी कहानी कैसी चल रही है, और, जैसा कि उसने पहले अनेक मौकों पर कहा था, 'वोला " भूमि-सुधार के दिनों में तुम यहां होते, तव देखते। सच कहता हूं —वाकई वह वड़ा स्फूर्तिदायक अनुभव था"।

कू को हर वक्त अपने मुंह पर इशारे से यह वात दोहराई जाना वुरा लगता था, कि उसने भूमि सुधार के दिनों में अपनी सेवाएं अर्पित नहीं की। उस साल जाड़ा खास तौर से कड़ाके का था और उसकी पत्नी को उसके फेफड़ों की वड़ी फिक्र थी। निःसंदेह वह भली भांति जानता था कि वोंग का उसके वारे में क्या ख्याल है—यानी यही कि वह रंगमंच पर देर से पहुंचा है और पक्का अवसर वादी है।

"सचमुच स्फूर्तिं दायक। किसानों में जमीदार के खेती के सव औजार वांटे जाने पर उनकी आंखों में जो चमक आ गई थी, वह तुम्हें देखनी चाहिए थी, वोंग ने कहा।

"किन्तु वह आनन्द तो अव पुरानी चीज हो गई है", कू ने चिढ़कर कहा, "साहित्यिक पत्रिका ने पिछले महीने इस विपय में एक विशेष लेख लिखा है। उसमें कहा गया है कि लेखक को अव उस आनन्द का वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है जो किसानों में भूमि सुवार के समय उत्पन्न हुआ था। वह अव एक अतीत वस्तु वन गया है। अव एक काम और आगे वढ़ने का वक्त है।"

वोंग ने समुचित आदर के साथ राष्ट्र की प्रमुख पत्रिका की वात ध्यान-

पूर्वक सुनी। "हां पर ठीक है।" वह संभल-संभल कर बोला, "अभी बहुत काम करना है।

"साहित्यिक पत्रिका ने देहातों में फैली वर्तमान मनोवृत्ति पर खूब कोड़े फटकारे हैं। उसने लिखा है, बदले हुए किसान अब सिर्फ खाने और पीने की ही बात सोचते हैं। वे खूब पैदावार करके परिवार के लिए दौलत इकट्ठी कर लेने के स्वप्न देख रहे हैं। उत्तर की तरफ लोगों ने एक गीत बना लिया है जो उनके लक्ष्य को संक्षेप में प्रकट करता है :

"तीस एकड़ भूमि हो और हो एक भैंस,
एक पत्नी और बच्चा हो और हो गर्म बिछौना।"

"हां, बिल्कुल ठीक, उनमें राजनीतिक चेतना का अभाव है," कामरेड वोंग ने स्वीकार किया।

"और अगर उनके पास एक सुअर हो तो वे चाहते हैं कि बेटी के ब्याह पर उसे काट कर खूब दावत उड़ायें," कू ने उदाहरण देना जारी रखा।

वोंग ने सखेद सिर हिलाया। बोला, "हां, किसान अभी तक पिछड़े हुए हैं। उनकी राजनीतिक चेतना को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है।" ये दोनों इन आम-फहम सुपरिचित वाक्यों का इस्तेमाल करने लगे।

"तुम्हारा पारस्परिक सहायता संगठन कैसा चल रहा है?"

"ओह हमारे फसल काटने वाले दल ने इस पतझड़ में खूब अच्छा काम किया है," वोंग ने प्रसन्नता से कहा, "और अगली बसन्त ऋतु में हमारी फसल काटने वाले दल को सहकारी दलों में बांटने की योजना है। इन दलों का संगठन अधिक घनिष्ट होगा। तमाम भैंसे इकट्ठी कर अलग-अलग सहकारी दलों में बांट दी जायेंगी। सीटी बजते ही लोग इकट्ठे सामूहिक रूप से खेतों को जायेंगे।

कू की वास्तव में कृषि के सामूहिकीकरण की पहली कारंवाइयों में कोई दिलचस्पी नहीं थी, जिनका अर्थ था किसान का उसकी जमीन से, जो उसने अभी-अभी प्राप्त की है खींचकर परे हटा देना। वह अपना फिल्म के लिए इससे अच्छा विषय जानता था। पर इस बात का हमेशा खतरा था कि कहीं वह इन सामहिक इकाइयों में शामिल होने की किसानों की अनिच्छा पर अधिक बल न दे दे और कहीं उससे ऐसा ध्वनित न होने लगे कि वे सरकार के खिलाफ हैं। ऐसा हो जाना अत्यन्त घातक होगा।

यद्यपि वोंग इस विषय पर बड़ी प्रसन्न मुद्रा में और धाराप्रवाह बोल रहा था तो भी उसके मन में उससे कहीं अधिक घबराहट भरी थी, जितनी कि वह स्वीकार करने को तैयार था। वे गांव के छोर पर पहुंच गये। उसी समय एकाएक नदी की स्वच्छ धारा उन्हें अपने सामने चमकती दिखाई दी। वे नदी के किनारे पहुंचे और वोंग ने गहरी सांस लेकर कहा, "कामरेड, राजनीति का काम करना खाला जी का घर नहीं है। तुम साहित्यिकों व कलाकारों पर मुझे कितना रश्क होता है। इस महान युग में कितनी दिल को हिला देने वाली घटनाएं लिखने और जनता को बताने के लिए सामने खड़ी है। प्रतिक्रियावादी सरकार के जमाने में जिन सब चीजों पर प्रतिबन्ध था आज वे सभी जनता को बताई जा सकती हैं। जहां नजर डालो वहीं एक कहानी है।"

कू ने स्वीकार किया, कि वस्तुतः यह महान युग है।

"मैं स्वयं जब जवान था, तो लिखा करता था" वोंग ने अतृप्त आकांक्षा के साथ कहा।

कू सहज़ में ही कल्पना कर सकता था कि कामरेड वोंग ने एक उदीयमान साम्यवादी के रूप में अपने स्कूल की पत्रिका के लिए किस किस्म की चीजें लिखी होंगी। किन्तु जब वोंग ने उसे बताना शुरू किया कि किस प्रकार क्यांग-सी के एक नगर में एक स्थानीय समाचार पत्र में उसने लेख लिखे और किस

प्रकार बाद में उसका सम्पादन भी किया तो वह नम्रता से सब कुछ सुनता रहा ।

जाड़े के मौसम में पानी उथला था और धारा के बीचों-बीच मटमैल पत्थरों का ढेर साफ दीख पड़ता था । कू को ऐसा लगा मानों यह सीट की एक सड़क हो जिसकी मरम्मत हो रही है ।

तभी उसे बांध की कहानी लिखने की महान् कल्पना मिली । कल्पना करो कि नदी में हर वर्ष जबर्दस्त पूर आता है और खेतों को बाढ़ में लपेट कर वह फसल का कुछ भाग नष्ट कर देती है। ठीक है, हमें शहर के इंजीनियरों और गांवों के कुछ किसानों को इकट्ठा कर और परस्पर दिमाग लड़ाकर उनसे एक ऐसा बांध बनवा कर जिसमें पानी के लिए एक द्वार हो समस्या का हल करा लेना चाहिए । इस कहानी से इंजीनियर के टैकनिकल ज्ञान और किसान की बुद्धि, दोनों का सहयोग खूब अच्छी तरह चित्रित किया जा सकेगा । अगर इंजीनियर ही अकेला सारी योजना सोचे तो निःसन्देह वह बुद्धि जीवी वर्ग के आत्मविज्ञापन का अपराधी होगा । और यदि किसान सिर्फ अपने पिछले अनुभवों पर भरोसा कर सहयोग करने से इन्कार कर दें तो वे अनुभव-वादिता के अपराधी होंगे । किन्तु यह कल्पना उसे इन दोनों से ही बचा देगी ।

इस आशय की तो बहुत-सी फिल्में थीं कि इंजीनीयर और पुराने कारखाना के कर्मचारी परस्पर दिमाग लड़ाकर आश्चर्यजनक काम कर रहे हैं । वे उनमें फटे हुए बोयलरों की मरम्मत करते हैं, पुरानी घिसी हुई खराद की उम्र बढ़ाते हैं और कपड़े के कारखाने के लिए एक ऐसा महत्त्वपूर्ण पुर्जा तैयार करते हैं जो पहले अमरीका से आयात किया जाता था और अब बदला नहीं जा सकता । किन्तु अभी तक किसी फिल्म में खेती करने वाली जनता के साथ यह स्थिति नहीं दिखाई गई । उसने एक समूचा नया क्षेत्र खोल दिया था ।

अपनी इस कल्पना की खुशी के मारें उसने अपनी साधारण खामोशी छोड़ दा और ज्यों ही वोंग अपनी साहित्यिक स्मृतियां सुनाते-सुनाते का, उसने उससे पूछा, "कामरेड वोंग, क्या यहां आसपास कोई बांध है ?

"बांध ?" वोंग एकदम हक्का-बक्का रह गया, उसकी समाचार पत्र की कहानी एकाएक धारा के बीच में पहुंच कर अटक गई, "नहीं, पर क्यों ? क्या तुम बांध देखना चाहते हो ?" आकस्मिक आश्चर्य से उसकी आंखों की चमक और उसकी मुस्कराहट की फैलावट देखकर कू आसानी से समझ गया कि उसके मन में सन्देह पैदा हो गया है ?

"नहीं, मैं सिर्फ यह सोच रहा था कि यदि गर्मियों में नदी में पूर आ जाता हो और वह खेतों को बाढ़ में लपेट लेती हो तो क्या यहां बांध बना देने से मदद नहीं मिलेगी ?

" इसमें पूर नहीं आता।"

"किन्तु कल्पना करो पूर आ जाय, "कू ने समझाते हुए कहा, "मैं सोच रहा था कि क्या मे इसके आधार पर कहानी लिख सकता हूं।

"हां, किन्तु—"वोंग ने आश्चर्य से उसकी ओर ताका, "तुम काल्पनिक कहानी क्यों लिखना चाहते हो, जबकि इस महान् युग में सब ओर कहानी के लिए इतना मसाला भरा पड़ा है ? इसके अलावा इसमें पूर आता भी नहीं।" उसने सोचा आखिर कार उसने कू को पकड़ ही लिया कि वह इसी तरह का लेखक है। उसने हंसने के लिए मुंह खोला,पर ठीक वक्त पर ही संभल गया। उसी समय एकाएक बत्तखों का एक बड़ा सा झुण्ड सामने नजर आया और बड़प्पन भरी मस्ती से पागलों की भांति शोर करता हुआ अविश्वसनीय तेजी से धारा के साथ नीचे की ओर तैरता चला गया, मानों तरह-तरह की आवाजें गले से निकालने के एक होशियारी भरे खेल के जरिये, बत्तखों की आवाज के रूप में उसकी हंसी तीव्रगति से नदी की धारा के साथ बह गई हो। वह और कू दोनों ही इस दृश्य को देख कुछ खोये-से खड़े रह गये।

अध्याय ८

जाड़े की ऋतु को देखते हुए मौसम बड़ा गर्म था। शायद बारिश हो। छोटे-छोटे पंखों वाले कीड़ों का एक बादल-सा एक वृक्ष के इर्द-गिर्द चक्कर लगा रहा था। जहां चन्द्रगन्वा खड़ी थी, वहां से ऐसा लगता था, मानों पेड़ की चोटी से धूआं उठ रहा हो।

एक आदमी गांव के एक छोर से दूसरे छोर तक एक घंटी बजा कर ऐलान कर रहा था, "आज सभा हो रही है। गांव के सरकारी दफ्तर में सभा में शामिल होओ! हरेक को जाना होगा।"

चन्द्रगन्वा को बच्चों को भी अपने साथ ले जाना पड़ा क्योंकि घर पर पीछे कोई रहने वाला नहीं था। पप्पू का हाथ थामे वह साथ के कमरे में हिरन्मय की बहू को साथ ले चलने के लिए गई। सुवर्णमूल अकेला चला गया। ऐसे मौकों पर मर्द और औरतें हमेशा अलग अलग जाती थीं। सभा में भी वे अलग अलग रहते, हालांकि ऐसे पृथक्करण का कोई नियम नहीं है।

गांव का सरकारी दफ्तर पहले थोड़ा सन्त या मंदिर था। सभाएं मुख्य भवन के सामने के पत्थरों से मढ़े विशाल आंगन में होती थीं। ग्रामीण लोग अपने परिचितों को चिल्लाकर आवाजें देते दोपहर बाद की तेज धूप में आंखों को सिकोड़ते हु इधर उधर घूम रहे थे। ज्यों ही सभापति ने बांस का एक छोटा डंडा मेज पर रुक-रुक कर बजाया, सारी सभाएं ऐसा सन्नाटा छा

गया कि सभापति के गला साफ कर बोलना प्रारम्भ करने से पूरी दूरी पर मुर्गे की अस्पष्ट बांग तक सुनी जा सकती थी ।

चन्द्रगन्धा अभी तक इन सभाओं की, जो नगर की अपेक्षा यहां उसका अधिक समय लेती प्रतीत होती थी, अभ्यस्त नहीं हुई थी, जब सब लोगों के हाथ ऊपर उठाने का समय आता तो वह सब से अन्त में अपना हाथ उठाती। स्त्रियां ऐसा करते हुए कुछ दबी-सी हंसती और आदमी भी लगभग उतने ही शर्मीलेपन से सावधानी से अपनी निगाहें सामने रखते और उनके चेहरों पर ऐसी हल्की मुस्कान और दृष्टि होती मानों कह रहे हों, "हो सकता है कि यह महज एक आडम्बर मात्र हो। किन्तु बेवकूफी भरा प्रतीत होने पर भी करना तो पड़ेगा ही।"

सुवर्णमूल जो बिल्कुल पीछे की तरफ था, खड़ा हो गया और बोला "मैं, प्रस्ताव करता हूं कि हम कामरेड वोंग से अपने विचार रखने के लिए कहें।" किसान संघ के अध्यक्ष ने तालियां बजाना शुरु किया और कुछ देर बाद और लोग भी तालियां बजाने में शामिल हो गये। चन्द्रगन्धा का हृदय जोर से धड़कने लगा। जब और लोग बोलने के लिए खड़े हुए तो किसी ने तालियां नहीं बजाई किन्तु ज्यों ही सुवर्णमूल ने मुंह खोला तभी सबने हर्ष ध्वनि की। परन्तु क्या उसे भी ऐसा करना चाहिए। यदि उसने ऐसा किया तो सारा गांव उसकी हंसी उड़ायेगा—कहेगा स्त्री अपने पति के लिए तालियां बजाती हैं। किन्तु दूसरी ओर उसे इस बात का भी भय था। यदि वह तालियां नहीं बजाएगी तो सिर्फ वही एकमात्र अपवाद होगी। वह अभी इस अनिश्चय की स्थिति में ही थी कि तालियां बन्द हो गई और कामरेड वोंग ने पत्थर की सीढ़ियां चढ़कर भीड़ के आगे भाषण देना प्रारम्भ कर दिया।

उसने सांस्कृतिक विनोद सम्बन्धी कार्यों के बारे में एक लम्बा भाषण दिया, गांव वालों की जानकारी के लिए उतना नहीं जितना कि कू पर प्रभाव डालने के लिए। जिस समय उसने लोगों को कू का परिचय दिया और उससे

उसी विषय पर एक भाषण देने को कहा उस समय तक कुछ-कुछ अंधेरा होने लगा था। लोगों का खड़े-खड़े इतनी अधिक देर हो गई थी कि अब उनकी बांहें भी कन्धों से लटकी रहने के कारण दुखने लगी थीं।

कू ने लोगों पर तरस खाकर अपना भाषण बहुत संक्षिप्त कर दिया। सभा के बाद उन्होंने मंदिर के बाहर धान-अंकुर-गीत के नाच का अभ्यास किया। लालटेनों और मशालों की कांपती हुई रोशनियां लाल दीवारों पर पड़ रही थीं। नर्तक लोग अपनी घंटियां और थालियां बजा रहे थे।

"चोंग! चोंग! ची-चोंग ची!
चोंग! चोंग! ची-चोंग ची!"

नवयुवकों ने जिनमें सुवर्णमूल भी था पीले रुमाल अपने सिरों पर कस कर बांध लिये और अपनी आंखों के कोने फैलाकर और भौंहें तानकर योद्धा और भयंकर अजनबियों का रूप धारण कर लिया। उन्होंने अपनी बांहें हिलाते हुए रणक्षेत्र में कभी आगे बढ़ने और कभी पीछे हटने का अभिनय शुरु कर दिया। दूसरे लोग मुस्कराते और नाच देखते रहे। किन्तु दर्शकों में धक्का-मुक्की और हलचल शुरु हो गई और अधिकाधिक लोग नर्तकों की कतार में शामिल होने के लिए, सविरोध आगे बढ़ने लगे।

एक स्त्री ने, जिसकी अब नाच में जबरन भेजे जाने की बारी थी, चन्द्रगन्धा को यह कहते हुए अपने साथ घसीटा, "सुवर्णमूल की बहू, तुम भी आओ।" चन्द्रगन्धा हंसी और कुछ देर तक हुज्जत करती रही, किन्तु अन्त में कतार में खड़ी होने के लिए मान गई। उसने कभी नाच नहीं किया था और उसके पुरखे भी देहात के इस हिस्से में हजार वर्ष से भी अधिक समय से कभी नहीं नाचे थे। हालांकि उसने स्कूलों और कारखानों की लड़कियों को शंघाई की सड़कों पर यही नाच नाचते देखा था और सोचा था कि यह नाच अवश्य ही सुन्दर और एक विशिष्ट शैली का नृत्य होगा।

किन्तु अब उसे स्वयं यह नाच नाचते हुए बड़ा अजीब और हास्यास्पद लगने लगा।

अन्त में मशालें बुझा दी गईं और लालटेन भी अपने मालिकों के साथ ही चली गईं। हर कोई अपने अपने घर चला गया। चन्द्रगन्धा ने अपनी मोटी जाकट में ठण्डा पसीना चूसा हुआ अनुभव किया और थकावट एवं भोजन के अभाव के कारण उसे इतनी कमजोरी आ गई थी कि लगने लगा जैसे उसका सिर खोखला हो गया है। वह हमेशा भीड़भाड़ पसन्द करती थी। पप्पू का हाथ थामे वह हिरण्मय की पत्नी के साथ चल रही थी। अन्धेरे में उसे कुछ दूरी पर दूसरे लोगों से बात चीत करते हुए सुवर्णमूल की आवाज सुनाई दे रही थी। उसे देख न पाने पर भी उसकी आवाज सुन कर उसे बड़ी तसल्ली हुई और खुशी हुई कि वह उसके नजदीक है।

चन्द्रमा बादलों की आड़ में छिपा हुआ था। बादलों की तहों ने एक पहाड़ी गुफा-सी बना रखी थी जिसके इर्द-गिर्द किनारों पर एक पीली-सी प्रकाश की रेखा थी। तभी बूंदा-बांदी शुरु हो गई। चन्द्रमा अभी तक वहीं था, मानों पीली गुफा में परियों की रोशनी हो। किन्तु उनके घर पहुंचने से पहले ही वर्षा तेज हो गई और उन्हें उससे बचाव के लिए आश्रम ढूंढने को भागना पड़ा।

सुवर्णमूल उनमें पहले ही घर वापस आ गया था। दीये में से अब भी कुछ धूआं निकल रहा था क्योंकि उसे जला कर उसकी बत्ती ठीक नहीं की गई थी।

"तुम चाहते तो मुझे पप्पू को उठाने में सहायता दे सकते थे" चन्द्रगन्धा ने शिकायत की, "पत्थर की तरह भारी है। मेरा तो दम फूलने लगा है।"

"मैंने तुम्हें देखा ही नहीं।"

अभी वह मुश्किल से वठी ही हागी, कि किसी ने वाहर के दरवाजे पर दस्तक दी।

सुवर्णमूल दरवाजे की ओर गया अार छत पर पड़ रही वर्पा की खटर-खटर आवाज के कारण ऊंची आवाज में चिल्लाकर वोला "कौन है ?"

यह हिरण्मय की वहू थी और कोई वर्त्तन या मिट्टी का घड़ा लेने आई थी। "कामरेड कू के कमरे की छत वर्पा से टपक रही है," वह वोली "हमारे यहां पानी जमा करने के लिए काफी वर्त्तन नहीं हैं। उनकी सव चीजें भीग रही हैं।"

चन्द्रगन्वा ने उसे एक वड़ा मिट्ट। का घड़ा उस जगह तक पहुंचाने में मदद दी और वहां जाकर देखा कि किस तरह सव चीजें अस्तव्यस्त पड़ी हैं। कू का सारा सामान वड़ी मौसी के कमरे में ढेर हुआ पड़ा था और सारा परिवार वैठा चर्चा कर रहा था कि सोने का क्या इन्तजाम किया जाय। चन्द्रगन्वा ने वापस आकर सारी हालत वताई और सुवर्णमूल कामरेड कू से रात अपने यहां विताने के लिए कहन गया। वूढ़ा-वूढ़ी वहुत खुश हुए किन्तु कोई उन्हें वहुत ज्यादा खुश न समझे, इसलिए उन्होंने कुछ नाराजगी दिखाई और फिर दांत निपोरने लगे।

"अच्छी वात है" वड़ी मौसी न अनिच्छा दिखाते हुए कहा, "जव तक हमारी छत की मरम्मत होती है तव तक कुछ दिन वह तुम्हारे साथ रह सकते हैं। पर हम जल्दी से जल्दी मरम्मत कर लेंगे।"

किन्तु फिर भी वड़ी मौसी को विना कामरेड वोंग से सलाह किए कू को अपने भानजे के यहां भेजने का साहस नहीं हुआ। वड़े मौसा ने अपने जूते पहने जिनके नीचे मोटी कीलें जड़ी थीं और अपनी लालटेन एवं छाता लेकर कामरेड वोंग से मंदिर के क्वार्टर में मिलने के लिए वर्पा में वाहर निकल प

वोंग की अनुमति मिल जाने पर उन्होंने सामान हटाना शुरु कर दिया । चन्‍गन्वा ने झाड़ू से वह कमरा साफ किया जिसमें पहले स्वर्णपुष्प रहा करता थी। वड़ी मौसी ने कू का विस्तर विछाने में सहायता दी, क्योंकि उनकी विधवा पुत्र वधू इस तरह की अन्तरंग सेवा करने को अधिकारिणी नहीं थी। सारा परिवार यह देखने आया कि उसका ठीक इन्तजाम हो गया है। कू भी यहां आने पर उतना ही खुश था जितने कि वे किन्तु साथ ही उन्हीं की भांति उसे भी यह खुशी जाहिर न करने की फिक्र थी। पप्पू उसके सामान के इर्द गिर्द चक्कर लगाने और हर चीज को हाथ से छूकर देखने लगी। उसके इस साहस का कारण यह था कि कू हमेशा सब वच्चों में उसी को सबसे ज्यादा प्यार करता था।

अन्त में वड़े मौसा और वड़ी मासी अपने घर जाने के लिए उठ खड़े हुए, हिरण्मय की पत्नी उनके सिर पर छाता ताने पीछे-पीछे चल रही थी। वे वर्षा को कोस रहे थे और उस पर हंस भी रहे थे। उनकी आवाज अब ऊंची निकलने लगी थी अपने मेहमान के चले जाने के कारण उनकी खांसी तक अब ऊंची हो गई थी। कानाफूंसी के स्वर में आहिस्ता वातें करने की अब सुवर्णमूल और उसकी पत्नी की वारी थी। कू को पास के कमरे में उनकी वातचीत इतनी हल्की आवाज में सुन पड़ती थी मानों उस कमरे में कोई रोगी पड़ा हो। कभी-कभी वच्ची की आवाज अवश्य विना किसी संकोच के ऊंची और तीखी सुनाई दे जाती थी।

तेल के दिये की ओर मुंह किये वह विछौने पर वैठा था। एकाएक उसका हृदय अपने निज के घर और पत्नी की चाह से भर गया। उसने खोखली वांस की दीवट परे हटा दी ताकि मेज पर जगह खाली हो जाए। इसके वाद चिट्ठियां लिखने का कागज निकाला और अपनी पत्नी को पत्र लिखने लगा। उसने उसे लिखा कि किस तरह आज रात उसने टपकने वाली छत से वचने के लिए मकान वदला है, किसान कितने प्रेमी हैं और उन्हें

उसकी कितनी चिन्ता है। उसने शरत्कालीन स्कूल के अपने काम का भी जिक्र किया और सांस्कृतिक विनोद के कामों पर उसी दिन शाम को दिए अपने भाषण का विवरण दिया।

हवा क्षितिज पर एक छोर से दूसरे छोर तक हुई शोर करती प्रचण्ड गर्जन के साथ वह रही थी। बांसों के पार्टीशन हवा की जोर से खड़-खड़ करते थे। पार्टीशन के उस ओर कमरे के दूसरे के आधे हिस्से में बड़े मौसा का सूअर हवा के गर्जन और वर्षा से घबरा कर और पार्टीशन से छन कर आने वाली और फर्श पर लम्बी धारियों की तरह पड़ने वाली दीये की रोशनी का अभ्यस्त न होने से रह-रह कर बेचैनी से गुर्राने लगता था।

कू ने लिखना वन्द कर दिया और अपनी ठंडी उंगलियों को दिये की छोटी सी लौ पर गर्म करने लगा। दरवाजा आवाज के साथ खुला और दिये की लौ कांपने लगी। उसने सिर घुमा कर देखा चन्द्रगन्वा मुस्कराती हुई भीतर आ रही थी। दिये के प्रकाश में वह पू सुंग-लिंग की एक पुरानी कहानी में किसी विद्वान की किताब से एकाएक निकली परियों की रानी की भांति सुन्दर लग रही थी।

"अभी तक सोये नही, कामरेड कू ?" उसने कहा। वह बिछौना गर्म करने की एक जलती अंगीठी लाई और उसे उसके विस्तरे में रख दिया। इससे पहले हर रात को बड़ी मौसी उसके लिए यह अंगीठी लाया करती थी। शुरू में उन्हीं को यह बात सूझी थी। उसने इस बात का विरोध किया किन्तु उन्होंने उसकी एक नहीं सुनी और बाद में अत्यन्त ठंडी होने के कारण वह इसे पसंद भी करने लगा। बड़ी मौसी ने अभी-अभी चन्द्रगन्वा को बताया होगा कि उसे हर रात एक अंगीठी की जरूरत होती है। इतनी अधिक ताख दिखाने के लिए उसे बुढ़िया पर गुस्सा आने लगा। बूढ़ों और कमजोरों के सिवाय यहां और कोई इनका उपयोग नहीं करता था। बड़ी

मौसी का उसके विस्तर में रखने के लिए अंगीठी लाना इतना बुरा नहीं लगता था, किन्तु चन्द्रगन्धा की वात और थी। इससे उसे ऐसा लगने लगा मानों वह खुद एक बूढ़ी औरत है।

"इसकी कोई जरूरत नहीं। सचमुच !" वह आहिस्ता से बोला।

वह उसकी ओर देखकर मुस्कराई और "नहीं यह कोई तकलीफ नहीं" कह कर चली गई।

अंगीठी से पैताने की ओर विस्तर में एक ऊंचा भद्दा कूवड़-सा निकल आया। वह असन्तुष्ट-सा विछौने पर वैठ गया और घूमकर उस कूवड़ क ओर देखा। उसे ठण्ड से इतना डर कभी नहीं लगा था जितना इन जाड़ों में। इसका कारण अवश्य ही पुष्टिकारक भोजन का अभाव था। जव उसने चिट्ठी खत्म करने के लिए फिर कलम उठाई तो दिये की लौ मन्द पड़ गई थी। उसने वांस की एक खपच्ची से वत्तो उचकाने की चेष्टा की किन्तु वह एक दम ही वुझ गई। अन्धेरे में वह अपनी दियासलाई तलाश नहीं कर सका। घर वदलते समय वह कहीं और रखी गई होगी।

सो जाने के सिवाय अव कोई चारा नहीं रहा। वर्षा अव भी आवाज के साथ पड़ रही थी। भूख के मारे उसे नींद नहीं आयी और चन्द्रगन्धा का ख्याल उसके दिमाग में घूमता रहा। अगली गर्मियों में जव वह ये मोटे कपड़े उतारेगी तो कैसी लगेगी ? उसने इतनी करवटें लीं कि उसे भय लगने लगा कि कहीं अंगीठी उलट कर उसके कम्वल को न जला दे या आग ही न लगा दे।

सुवह होते-होते उसने एक संकल्प कर डाला। दूसरे दिन जव वर्षा थम गई, वह अपनी चिट्ठी डाक में डालने और हमेशा की तरह होटल में खाने के लिए कस्वे की ओर रवाना हो गया किन्तु वापस आने से पूर्व उसने अपने साथ घर ले जाने के लिए कुछ खाने का सामान खरीदा—ऐसा उसने पहले कभी नहीं किया था। उसने कुछ सूखी खजूरें, चाय की पत्तियों वाले अण्डे—

चाय की पत्तियों और मसालों के साथ उवाले हुए अण्डे—खरीदे। इसके लिए मन ही मन वह अपने अपराधी महसूस करने लगा, क्योंकि यह समझा जाता था कि उसे वहां किसानों के साथ रहने और जो कुछ वे खाते हैं, वही खाने के लिए भेजा गया।

उस रात जव उसने अण्डे ग्रार लाल खजूरें खाईं तो अण्डे के छिलके और खजूर की गुठलियां वड़ी सावधानी से एक में लपेट ली। सुवह वह सैर करने गया। यह अजीव तमाशा है कि देहात इतना वड़ा और इतना ऊवड़-खावड़ स्थान है, फिर भी इस तरह का कूड़ा-कचरा फेंकने के लिए वहां कोई जगह नहीं है। उसे लम्वी घास में वह कचरा फेंकने के लिए वहुत दूर पहाड़ी पर जाना पड़ा।

चन्द्रगन्धा उसके मोजे और रूमाल धो रही थी। दोपहर वाद काफी समय वीत जाने पर जव वे सूख गये तो उसने उनकी अच्छी तरह तह की और उसके कमरे में ले गई, शायद कुछ देर वहां वैठने और उससे वातें करने की नीयत से। भलें ही वह अपने आप से कभी यह स्वीकार न करे, किन्तु इस शहरी आदमी के साथ दो-चार मीठी वातें करने के लोभ से वह ऊपर उठी हुई नहीं थी।

उसके कमरे में अन्धेरा शुरू हो चुका था किन्तु दिया अभी तक नहीं जला था। जव वह दरवाजे की चौखट पर जाकर खड़ी हुई तो पहले पहल वह यह नहीं देख पाई कि वह चाय की पत्तियों में उवला अण्डा खा रहा है। किन्तु जव उसने देख लिया तो वे दोनों ही एक अजीव परेशानी में पड़ गये।

"आपके मोजे सूख गये हैं, कामरेड कू," वह जल्दी से मुस्करा कर वोली और उसके विछौने के पैंताने उन्हें रखकर यथासम्भव स्वाभाविक भाव से वापस चली गई।

रात के भोजन के समय कू वचे हुए दोनों अण्डे खाने की मेज पर लाया और कुछ परेशानी के साथ उसने परिवार को उनमें हिस्सा वंटाने के लिए

कहा, "अभी उस दिन कस्बे में मैंने वे खरीदे थे, पर मैं उनके बारे कतई भूल गया था। यह अभिनय उसका इतना घटिया था कि वह खुद अपने ऊपर खीझ उठा। किन्तु भोजन जैसी वस्तु के बारे में स्वाभाविक ढंग से व्यवहार करना कठिन था, जबकि उसने उन सबमें अत्यन्त हीन कोटि की और अत्यन्त पाशविक बुद्धि पैदा कर दी है और जब कि वह उनके लिए अत्यन्त अभद्र लालसा की वस्तु बन गई है।

चन्द्रगन्धा ने बनावटी मुस्कान के साथ इन्कार कर दिया। सुवर्णमूल ने भी अण्डों को अस्वीकार करने के लिए उसकी बांहें पकड़ कर परे ही रोक दी। किन्तु अन्त में उन्हें स्वीकार करना ही पड़ा, ताकि कहीं अशिष्टता न लगे। भोजन के दौरान में वे आज पहले का अपेक्षा भी कम बोले हालांकि सुवर्णमूल ने सभ्यतावश यह टिप्पणी करना आवश्यक समझा कि "बहुत अच्छा अंडा है, सचमुच अंडा बढ़िया है।" और उसके बाद अपने अतिथि के प्रति उनके रवैय्ये में स्पष्ट उदासीनता दीख पड़ने लगी।

उस दिन के बाद चन्द्रगन्धा शायद ही कभी कू के कमरे में गई हों। जब कभी वह गई भी, उसने किसी और से ऊंचे स्वर में बातें कर उसे अपने आगमन की पूर्व सूचना दे दी। यह कल्पना, कि दिन में चाहे जब वह कुछ खा ही रहा होगा, कू पर एक जुल्म थी और उसे शर्मिन्दा करने वाली थी।

स्पष्टतः पप्पू को भी उसके कमरे में जाने की मनाही कर दी गई थी। दरअसल उसने पप्पू को कभी अपने कमरे में झांकते नहीं देखा था किन्तु उसकी मां ने शायद उसे ऐसा करते हुए अनेक बार पकड़ा। एकाएक डांट-फटकार और बच्चे के रोने की ऊंची आवाज आने लगती।

अब किसी न किसी बहाने से उसका कस्बे में अधिक जाना-आना होने लगा। वह अपने साथ खजूरें, छः इंच चौड़ी और कड़ी गोल तिल पापड़ियां और सोन पापड़ी नाम की छोटी रेवड़ियां लाता। उसने वे पहले भी खाई

थीं, किन्तु यह उसे नहीं मालूम था कि वे इतनी कड़ाकेदार हैं । उसे लगा कि इस तरह दरवाजे की ओर पीठ फेर कर चोरी-चोरी खाना बुरा काम है। किन्तु फिर भी इससे उसकी भूख और मानसिक द्वन्द्व दोनों दूर होते और वह अपना लिखना जारी रख पाता ।

एक दिन तीसरे पहर वह आंगन में धूप सेक रहा था और बांच पर अपनी कहानी तैयार कर रहा था । चन्द्रगन्वा सायवान के नीचे बैठी मरम्मत का काम कर रही थी । बच्ची उसके पास खड़ी थी । कू अपने काम में इतना अधिक व्यस्त था कि उसे काफी देर बाद पता लगा कि वहां क्या हो रहा है । बच्ची कठोर चेहरे से अपनी मां से चिपट कर उससे अपना बदन रगड़ रही थी, इतने जोर से कि चन्द्रगन्वा, जिसे शायद उसका कुछ ध्यान नहीं था, उसकी गति के साथ ही कुछ हिल-डुल रही थी । बच्ची आहिस्ता-आहिस्ता गुनगुना कर और ऊं-ऊं करके शिकायत कर रही थी । कभी-कभी हार कर वह अपनी मां की जाकट खींचने लगती ।

"क्यों ऊं ऊं कर रही है" चन्द्रगन्वा एकाएक उसे परे धक्का देकर उछल पड़ी, "नालायक कहीं की, क्या चाहती है मुझसे ? हर रोज इसी तरह करती है, यह भी नहीं देखती कि कोई आस पास बैठा है या नहीं। बेशर्म ! जन्म की भिखारिन ! हर रोज, हर रोज, इसी तरह ! भगवान जाने मुझे ते । पिछले जन्म का कौन सा कर्ज चुकाना है । मर क्यों नहीं जाती ? जा मर जा, निकम्मी !"

लड़की जोर से रोने और बारी-बारी से दोनों आस्तीनों से अपनी आंखें पोंछने लगी । चन्द्रगन्वा ने अपना मरम्मत का काम नहीं छोड़ा और लड़की की ओर देखे बिना बार-बार वही बातें कहने लगी । और उसके बाद, ठीक उस समय जब कि उसका क्रोध आहिस्ता-आहिस्ता शान्त प्रतीत होने लगा,उस पर फिर नया गुस्सा सवार हो गया । अच्छी तरह ध्यान से उसने अपना मरम्मत का सामान एक ओर रख दिया । उसने सावधानी से सुई कपड़े में टांग दी ताकि

खो न जाय। वच्ची जानती थी कि क्या होने वाला है। वह अपने हाथ मलती और भय से चिल्लाती इधर-उधर गोल चक्कर काटती भागने लगी। उसका सूखा छोटा चेहरा एक प्राचीन बूढ़ा-सा चेहरा लगता था, और उसका अतिरंजनापूर्ण और नाटकीय ढंग से भय और संकट का भाव प्रकट करना बिल्कुल आदिमयुगीन प्रतीत हो रहा था कू चकित होकर देखता रहा। एक क्षण के लिए उसे खुद भागने की इच्छा हुई, मानों वह स्वयं एक ऐसे शत्रु के सामने पड़ गया हो जिसकी शक्ति के आगे वह बिल्कुल निर्वल हो।

तमाचे पड़ने लगे और पप्पू हर तमाचे के साथ चीखने लगी।

"रहने दो, रहने दो सुवर्णमूल की वहू" कहता हुआ कू आगे वढ़ा और वच्ची को छुड़ाने की कोशिश करने लगा, "रहने दो, वहुत हो गया! छोटी-सी लड़की से तुम वड़ों की तरह व्यवहार की आशा नहीं कर सकतीं। वस अव जाने दो वेचारी को!"

उसने उसकी विल्कुल परवाह नहीं की। उसके हस्तक्षेप से उसका गुस्सा वढ़ा ही। अन्त में जव वह लड़की को काफी पीट चुकी तो फिर लौटकर मरम्मत में लग गई। पप्पू आंगन के वीच में खड़ी सिसक और रो रही थी।

"नाक पोंछ" चन्द्रगन्धा ने चिल्लाकर कहा।

कू फिर अपनी जगह पर जा वैठा। थोड़ी देर में सूर्य ढल गया और वह अपनी कुर्सी लेकर कमरे में चला गया। चन्द्रगन्धा ने एक वार भी आंख उठाकर उसकी ओर नहीं देखा।

वच्ची उस दिन शाम को वड़ी चुपचाप और सहमी-सी रही। उसके सो जाने के वाद जव चन्द्रगन्धा विछौने के पास वैठी सिलाई कर रही थी, तो उसके मन में पछतावे की एक टीस उठी।

वह एकाएक सुवर्णमूल से वोली, "इस वार जव नववर्ष का दिन आ गया तो हम सूअर का मांस खरीद कर पप्पू के लिए कुछ वनायेंगे।"

इसके मानी हैं, उसके पास पैसा है, सुवर्णमूल न सोचा। उसने सारा पैसा अपनी मां को उधार नहीं दिया। परन्तु यह सोचकर उसे अपने आप से घृणा होने लगी मानों वह उस पर जासूसी कर रहा हो, किन्तु वह किसी भी तरह वैसा सोचे विना नहीं रह सका।

तव जो कुछ उसने कहा था उसके लिए उसे अफसोस होने लगा और उसने सोती हुई वच्ची का मुंह देखने के लिए उसकी ओर मुंह फेरा। 'अगर उसने मेरी वात सुन ली होगी तो फिर मुसीवत का कोई अन्त नहीं।" वह अपराधी के-से भाव से हंसी। किन्तु कुछ देर वाद वह अपने आप सोचती-सी वोली, "जरा-सी सुअर की चर्वी ही चाहिए। थोड़ी-सी चर्वी हो तो हम सेम की पीठी भरकर चावल के आटे के समोसे वना सकते हैं। वच्चे मीठी चीजें पसन्द करते हैं।"

———

अध्याय ९

महिला संघ एक सभा कर रही थी। चन्द्रगन्वा, हमेशा की भांति सभा में जाने के लिए हिरण्मय की वहू को लेने साथ के कमरे में गई।

"वह नदी पर कपड़े धो रही है," वड़ी मौसी ने कहा।

चन्द्रगन्वा के चले जाने के वाद वड़ी मौसी मन ही मन उसे लक्ष्य कर वड़वड़ाने लगी "यदि तुम चाहती हो कि कोई जाय, तो खुद ही चली जाओ। पर नहीं तुम तो औरों को साथ घसीटोगी। इस परिवार में वूढ़े लोग वहुत वूढ़े हैं और छोटे लोग वहुत छोटे। यदि वह सारे दिन सभाओं के चक्कर काटती रहे तो घर में काम कौन करे ? मरते हुए की आत्मा को वापस शरीर में वुलाने की तरह हर वक्त उसे वुलाते रहना। तुम कौन-सी महिला संघ की अध्यक्षा वन गई हो ! तुम्हें ऐसी क्या फिक्र है कि घर-घर जाकर लोगों को सभा के लिए वुलाती फिरो। पति-पत्नी दोनों—सचमुच ही दोनों एक ही तरह से सोचते हैं। सो भाई तुम तो ठहरे आदर्श श्रमिक। अव उधर से हटकर सुवर्णमूल को लक्ष्य कर वड़वड़ाने लगी, और उसकी आवाज क्रमशः ऊंची होती गई, "लोग तुम्हारे लिए तारीफ के दो-चार शब्द कह देते हैं और तुम्हारा दिमाग आसमान में पहुंच जाता है। तुम इतना भी नहीं सोचते कि तुमने जो नौ तान (एक चीनी माप) फसल काटी थी, वह कहां है ? वह कहां चला गई ? आखिर में तुम भी वैसे ही खाली पेट रह जाते हो, जैसे हम।"

"अच्छा, अच्छा, वहुत मत वोलो !" वड़े मौसा ने आहिस्ता से कहा।

"नौजवान लोग ऐसे वेवकूफ होते हैं।" वड़ी मौसी ने सवको लपेटते हुए गहरी सांस लेकर कहा, "वे प्रशंसा के दो चार शव्द सुनते ही दूसरे के लिए जान देने को उतावले हो जाते हैं। वे खुशी-खुशी अपना कलेजा और जिगर निकाल कर रख देते हैं। मैं वुढ़िया तुम लोगों से ज्यादा जीवित रही हूं। मैंने जितना नमक खाया है, वह तुम्हारे भकोसे हुए सारे चावल से भी कहीं अधिक होगा। जिन्दगी में मैंने वहुत कुछ देखा है। अभी एक सेना आई और फिर दूसरी और उसके वाद डाकुओं का नम्वर लग गया। और इस मर्त्तवा तो डाकुओं से भी वदतर लोग आए हैं। अव तो इतना भी सम्भव नहीं कि आदमी छटांक भर ज्वार वाजरा ही छिपाकर रख लें। कम्वख्तों को हमेशा पता लग जाता है।"

"हे भगवान, कैसी वातें कर रही हो ?" वड़े मौसा ने चिल्लाकर कहा, "क्या आज पागल हो गई हो ?"

इस पर वड़ी मौसी चिल्लाने लगी, "डरो मत, डरो मत। मैं तुम्हें इस मामले में नहीं फंसाऊंगी। शिकायत करते हैं तो करने दो ! श्रेय लूटने दो ! कामरेड वोंग को खुश करने की चाहे कितनी ही फिक्र करें, रहेंगे अन्त में हमारे ही जैसे भूखे पेट।"

वड़े मौसा ने अन्त में हार कर उन्हें रोकने की चेष्टा वन्द कर दी। वह जानते थे कि सुवर्णमूल लकड़ियां इकट्ठी करने गया है और कामरेड कू खाने की चीजें खरीदने, जिन्हें वह छिपकर खाता है, शहर गया है। सुवर्ण-मूल को उन्होंने वाहर जाते देखा जरूर था। किन्तु हुआ यह कि वह उनकी नजर पड़े विना वापस लौट आया और उस समय अपने कमरे में ही था।

चन्द्रगन्धा भी लौट आई थी, क्योंकि वह सुवर्णमूल से यह कहना भूल गई थी कि वह वच्चा पर नजर रखे और उसे कामरेड कू के कमरे में न

जाने दे। ज्यों ही वह आंगन में घुसी उसे बड़ी मौसी की ऊंची आवाज सुनाई दी, किन्तु वह यह निश्चय नहीं कर सकी कि वह बड़े मौसा से लड़ रही है या अपनी पुत्रवधू को डांट रही है। जब वह अपने कमरे में आई तो उसने सुवर्णमूल को दरवाजे के पास दुबके हुए विचित्र मुद्रा में खड़े देखा।

उसने पास के कमरे की ओर सिर हिलाकर इशारा करते हुए पूछा, "किससे लड़ रही है ?"

उसने उसकी तरफ ऐसा देखा कि वह कुछ नहीं जानता।

तभी उसने सुना कि बड़ी मौसी क्यों चिल्ला रही है। सुवर्णमूल का चेहरा दुःख से कठोर हो गया। उसने उस पर से नजर हटा ली। उसे उस बढ़िया पर इस बात के लिए बड़ा गुस्सा था कि उसने सुवर्णमूल के दिल को चोट पहुंचाई है।

"बड़ी मौसी, इतने जोर से मत चिल्लाओ !" उसने दीवार के उस पार बड़ी मौसी को सुनाते हुए जोर से कहा, "हम तुम्हारी बात सुन लें, तो कोई बात नहीं। किन्तु अगर कोई और सुन ले और जाकर शिकायत कर दे तो ? तब तुम सारा दोष हमारे ही मत्थे मढ़ दोगी और हम अपनी सफाई भी नहीं दे सकेंगे।"

"यह मत समझो कि मुझे शिकायत हो जाने का डर है।" बड़ी मौसी ने चिल्ला कर जवाब दिया, "मैं ठहरी बुढ़िया, आंधी में चिराग की तरह और खपरेलों पर जमी बरफ की तरह, अब ज्यादा दिन तो जिन्दा रह नहीं सकती। किन्तु तुम लोग अभी बच्चे हो, अभी तुम्हारे सामने फिक्र करने को काफी भविष्य पड़ा है, तुम अपना दिल काला मत करो और दूसरों को नुकसान मत पहुंचाओ, नहीं तो तुम्हारा भी भला नहीं होगा।"

"अच्छा, अच्छा, चुप भी रहो।" बड़े मौसा ने कहा।

"दूसरों को विना वजह काले दिल वाला कह रही हो," चन्द्रगन्वा ने भी चिल्लाकर कहा, "वुजुर्ग होकर वुजुर्गों का-सा वर्त्ताव नहीं कर रही हो। इतनी लम्वी उम्र जीती रही हो, पर लगता है जैसे सारी उम्र किसी कुत्ते की तरह विताई है।"

"तुम मुझे इस तरह डांटने की हिम्मत करती हो ! मैं क्या वच्ची हूं जो तुम मुझ डांट रही हो ! उसकी मौसी ने चिल्लाकर कहा, "पागल ! तुम चावल खाती हो या गोवर ?"

"सव चुप हो जाओ," वड़े मौसा ने आजिज़ी के कहा।

"वस यहीं रहने दो, चुप रहो," सुवर्णमूल ने अपनी पत्नी से कहा।

"मरी डायन !" चन्द्रगन्धा ने धीमे स्वर में कहा, "मर क्यों नहीं जाती, डायन कहीं की ?"

"भगवान वचाए तुम औरतों से !" सुवर्णमूल खीझ कर कहा।

"जाओ मेरी शिकायत कर दो ! जाओ मेरी पतोहू को मेरी शिकायत कराने के लिए महिला संघ में ले जाओ ! जाओ, जाओ !"

"तुम चुप नहीं होओगी—विल्कुल वाज नहीं आओगी," वड़े मौसा ने दांत भींचकर कहा और उसके वाद धक्का-मुक्की और पिटाई की दवी हुई आवाज आई।

"अच्छा, मारो मुझे ! खूव मारो !" वड़ी मौसी ने रोते हुए कहा, "इतनी उम्र हो गई मेरी, मेरे नाती-पोते इतने वड़े हो गये और फिर भी तुम मुझे मार रहे हो ? तो फिर मार-मार कर मेरा काम ही कर दो ! मेरी जीने की कतई इच्छा नहीं ! मेरा अव जिन्दा रहने लायक मुंह ही नहीं रहा है।"

वड़ी मौसी दुःख से चिल्लाती हुई सारे कमरे में लोटने लगीं और, उससे जमीन पर पड़ी चीजों के विखरने से खनखनाने की आवाज आने लगी।

"जाओ, उनमें समझौता करा दो," सुवर्णमूल ने चन्द्रगन्धा से कहा।

"मैं कभी न जाऊं।"

अन्त में सुवर्णमूल खुद ही गया। "रहने दो, रहने दो, बड़े मौसा," उसने बूढे को एक तरफ खींचते हुए कहा, "इतनी उम्र हो गई है तुम्हारी, और व्याह हुए भी इतने साल हो गये—लोग सुनेंगे तो हंसेंगे।"

बड़ी मौसी फर्श पर बैठी फफक-फफक कर रो रही थीं। बिखरे हुए छोटे सफेद और बिल्ली की मूंछों की भांति कठोर बाल उनके गालों पर आ गये थे।

थकान से हांफते हुए बड़े मौसा ने अत्यन्त विनयपूर्ण चेहरे से सुवर्णमूल की ओर देखा और यह समझाने का प्रयत्न किया कि किस तरह यह पागलपन एकाएक बड़ी मौसी पर सवार हुआ और इसका वास्तव में ही चन्द्रगन्धा से कोई सम्बन्ध नहीं था। सुवर्णमूल ने उन्हें दिलासा दिया और कोई फिक्र न करने को कहा। जब वह अपने घर आया तो कमरा खाली था। चन्द्रगन्धा सभा में जा चुकी थी।

उस दिन से बड़ी मौसी और चन्द्रगन्धा की बोलचाल बन्द हो गई।

अध्याय १०

कू पिछले कुछ दिनों से हर रोज गांव के सरकारी दफ्तर में जा रहा था ताकि नव वर्ष के दिनों में किसानों में बेचे जाने वाले वसन्त सन्देश की पत्रिकाओं में लिखी जाने वाली कविताओं की जिनमें नये जमाने की बातें कही जानी थीं रचना में सहायता दे सके। लोग हर बरस अपने घरों दोहरे दरवाजों पर चिपकाने के लिए नया वसन्त सन्देश खरीदा करते थे। उनकी कीमतें शब्दों की संख्या के अनुसार होती थीं। पुराने जमाने में वसन्त सन्देश के शब्द आम तौर पर कुछ इस प्रकार होते थे।

"इस घर की जमीन पर भगवान का बड़ा आशीर्वाद है,
आर यह सन्तानों से खूब फल-फूल रहा है;
इस द्वार के भीतर खूब सोने का भंडार है;
और यहां हीरे-जवाहरात भरे पड़े।"

किन्तु अब वह शायद बहुत कुछ इस प्रकार हो।

अध्यक्ष माओ हजार बरस जीएं,
और साम्यवादी पार्टी हजार वसन्त फले-फूलों

इन वसन्त पत्रिकाओं के अक्षर अब भी सादे लाल या मूंगे की-सी चित्रकारी के कागज पर पहले की ही भांति काली चमकदार रोशनाई से निहायत खबसूरती से सन्तुलित करके लिखे जाते और वैसे ही सुन्दर प्रतीत होते थे।

एक ठण्डे, अंधियारे और हिमपात के आसार के दिन सुवर्णमूल की वहन स्वर्णपुष्प चोऊ गांव से घर आई। जिस समय वह पहुंची, कू घर पर ही था, इसलिए सारा परिवार सिर्फ मेज के चारों ओर बैठ गया, किसी ने कोई वातचीत नहीं की। ज्यों ही कू चला गया, उस ने अपने परिवार के लोगों को अपनी मुसीवतें वतानी शुरू कीं। उसने वताया कि उसकी सास नई होने के कारण उसके साथ अधिक अच्छा वर्ताव करती है, इस लिए उसकी जेठानियां इसे सहन नहीं कर सकीं और उन्होंने उसके वारे में वुरी वातें फैलाने के लिए एक गुट वना लिया है। उन्होंने कहना शुरू किया कि वह आलसी है और लालची है और उसका पति उसके लिए भोजन वचाने को अपने आपको भूखा रखता है। उसकी सास ने इस पर विश्वास कर लिया और नाराज होकर अपने पुत्र को डांटा। यह सब झूठ था, स्वर्ण-पुष्प ने कहा, हालांकि इतना अवश्य सच था कि वहां सभी लोगों को खाने को अधिक नहीं मिलता।

जव चन्द्रगन्धा शंघाई से लौटी और उसके लिए उपहार में तौलिया और खुशवूदार सावुन लाई तो उसे लेकर भी खूव चर्चाएं हुईं। तभी से स्वर्णपुष्प को ससुराल की नई रिश्तेदारिन हमेशा यह इशारा करती रहती हैं कि वह अपने घर वापस जाय और कुछ पैसे उधार मांग कर लाये। इस वार आखिर उसकी सास ने स्पष्ट शब्दों में ही ऐसा करने के लिए कह दिया और कहा कि यदि वह पैसा नहीं लाई तो शायद वे लोग नव वर्ष न मना सकें।

"अच्छा!" चन्द्रगन्धा ने कहा, "अगर मुझे मालूम होता कि यहां देहात में हम लोगों की हालत इतनी खराव है तो मैं तुम्हारे लिए वे चीजें कभी न लाती और तुम्हारे कष्ट का कारण न वनती।"

स्वर्णपुष्प उसी तरह आवेशहीन भाषा में अपनी कष्टगाथा सुनाती रही, उसकी आंखें जमीन की ओर थीं और उसने अपने हाथ अपनी जाकट

म डाले हुए थे। कमरे में बड़ा ठण्ड थी। बीच-बीच में बातचीत बन्द हो जाती और सब लोग मुंह से सफेद भाप निकालते बैठे रहते।

"धीरज रखो, बहन" चन्द्रगन्धा ने उसे दिलासा देते हुए कहा, "तुम्हारे भाग्य अच्छे हैं कि कम से कम बहनोई तुम से अच्छा बर्त्ताव करते हैं। यद्यपि फिलहाल दिन बड़ी मुसाबत के हैं, पर किया भी कुछ नहीं जा सकता। सभी का यही हाल है। हम लोग यहां कैसे दिन काट रहे हैं, यह शायद दूसरे लोग न जानते हों पर तुम तो जानती हो, बहन।" इसके बाद उसने अपना रोना शुरु कर दिया और विस्तार से बताने लगी कि उसके अपने घर में कितनी बुरी हालत है।

सुवर्णमूल ने सब कुछ सुना किन्तु कहा कुछ नहीं। वह अपनी पत्नी से यह आशा नहीं कर सकता था कि उसके पास अपनी बचत में से जो थोड़ा बहुत रह गया उसे वह दे देगी। किन्तु जब उसे उन दिनों की याद आई जब कि वह और उसकी बहन दोनों बच्चे थे और साथ खेलते थे तो उसे एक टीस-सी उठी। जब कभी वह कोई झींगुर पकड़ता तो उसे दे देता। जब तीसरे महीने की तृतीया को शहरों में जा बसे लोग वापस देहात में अपने पुरखों की कब्रें देखने आते तो वह एक कब्र से दूसरी कब्र पर भागा फिरता और दान में बांटे जाने वाले चावल के आटे पर लड्डुओं की फिराक में रहता। वह इन लड्डुओं को इकट्ठा करने में बड़ा होशियार था, इसलिये उनके पास हमेशा ही काफी लड्डू रहते।

गर्मियों में वह खेतों में टिड्डियां इकट्ठी करता और उन्हें घास की पत्ती से बांध देता और अपनी मां से कहता कि वह उन्हें, उनकी बंधी बंधाई लड़ी को, तेल में तलकर लाल कर दे ताकि वे खब करारी और स्वादिष्ट हो जायं।

वे लोग हमेशा से गरीब थे। उसे उन दिनों की याद है जब वह सुबह बिछौने पर पड़ा होता, उसकी मां बड़े मिट्टी के मटके में से चावल निकालती

ओर उसकी वाटी मटके के तले से जा लगती और उससे रगड़ खाती । उस रगड़ की भयंकर तीखी आवाज से उसकी हड्डियों में एक चीर दे वाली तीखी और बेचैन करने वाली सन्नाहट होती।

और एक दिन उसे मालूम हुआ कि घर में खाने को कुछ नहीं है। जब दोपहर के खाने का वक्त हुआ तो उसने अपनी बहन के पास जाकर कहा, "आओ खेलने चलें, बहन स्वर्णपुष्प।" स्वर्णपुष्प की उम्र उससे बहुत कम थी, इसलिए उसे वक्त की कोई खास समझ नहीं थी। वे दोनों खेतों में खेलते रहे । तभी उसने अपनी मां की पुकार सुनाई दी, "सुवर्णमूल? स्वर्णपुष्प! आओ खाना खा लो!" उसे सुनकर आश्चर्य हुआ। वे घर गये और वहां उसने देखा कि उसने कुछ मटर उबाल रखे हैं जिन्हें वह बीज के लिए रखना चाहती थी। मटर बहुत अच्छे थे। उसकी मां उनके सामने बैठ गई और उन्हें खाते देखकर मुस्कराने लगी।

अब वह बड़ा हो गया है और जमीन का मालिक है, किन्तु फिर भी परिस्थितियों की ताकत के सामने पहले की ही भांति असहाय है। उसकी बहन रोती हुई उसके पास आई है और उसे खाली हाथ ही उसे लौटाना पड़ रहा है।

घुटने चौड़े कर बैठे-बैठे वह इतना आगे झुक आया था कि एक तरह उसका बदन दोहरा हो गया था। उसका एक हाथ गर्दन के पीछे की ओर था। स्वर्णपुष्प की लम्बी कहानी खत्म होने पर चन्द्रगन्धा उठी और दोपहर का खाना तैयार करने के लिए दूसरी ओर चली गई।

तब वह भी उठा और चन्द्रगन्धा के पास गया जो बड़े मटके में से चावल निकाल रही थी।

"मैं चाहता हूं कि आज अच्छी तरह पकाकर चावल तैयार किया जाय, बजाय उस पतली लप्सी के," उसने हल्की आवाज में कहा, "इतना सख्त हो चावल कि एक-एक दाना गिना जा सके।"

"अच्छा, अब यहां से चले जाओ, नहीं तो बहन को भद्दा लगेगा।" उसने सिर उठाये बिना धीरे से कहा।

जब वह लौट कर स्वर्णपुष्प के पास आया तो वह अपने आंसू पोंछ चुकी थी और पप्पू से खेल रही थी। बच्ची का हाथ पकड़कर वह बाहर गई और कूं के कमरे में झांकने लगी।

"चलो, जरा अपना पुराना कमरा तो देखें।" वह बोली।

"अन्दर मत जाओ," पप्पू ने कहा, "नहीं तो मां तुम्हें मारेंगी।"

"क्यों ?"

"और जब वह आदमी अन्दर हो तो झांकना भी मत। वह कुछ खा रहा होगा और मां तुम्हें मारेंगी।"

पप्पू ने अपनी बुआ के साथ दौड़-भाग के खेल का खूब आनन्द लिया। इसके बाद दोपहर के खाने का वक्त हो गया। उस दिन भी वही हमेशा की पतली चावल की लप्सी थी, जिसमें कुछ रेशेदार जंगली सब्जी तैर रही थी। सुवर्णमूल को इतना गुस्सा आया कि वह मुश्किल से ही उसे गले के नीचे उतार सका। वह चुपचाप खाता रहा और इसके बाद एकाएक उसने जोर की आवाज के साथ अपना कटोरा जमीन पर रखा और अपना पाइप पीने के लिए बाहर चला गया।

इसी समय बर्फ पड़ने लगी। प्रारम्भ में बर्फ की छोटी-छोटी चिप्पियां सिर्फ काला पहाड़ी की पृष्ठभूमि के सामने ही नजर आती थी। उसके बाद आकाश से आहिस्ता-आहिस्ता हजारों हल्के सफेद बर्फ के टुकड़े से उतरते दीख पड़ने लगे। स्वर्णपुष्प ने कहा कि उसे वापस जाना है। चन्द्रगन्धा ने उसे कुछ देर रुकने और बर्फ बन्द होने की इन्तजार करने को कहा, किन्तु वह अधीर-सी प्रतीत हुई। कुछ देर बाद वह फिर जाने के लिए खड़ी हुई।

"मत जाओ, बुआ। हमारे पास ही रहो," पप्पू ने उससे चिपटते हुए कहा।

चन्द्रगन्धा ने मजाक करते हुए कहा, "यदि तुम उसे अपने नये फूफा के यहां वापस नहीं जाने दोगी तो वह आयेंगे और तुम्हें मारेंगे।"

सुवर्णमूल ने अपना वड़ा नारंगी रंग के मोमजामे का छाता उठाया और अपनी वहन के हाथ में थमा दिया।

"किन्तु तुम्हें खुद इसकी जरूरत पड़ेगी," स्वर्णपुष्प ने विरोध करते हुए और उसकी वजाय अपनी भाभी की ओर देखते हुए कहा।

चन्द्रगन्धा ने उसे समझाया कि वे चोऊ गांव के पास से गुजरते हुए किसी दिन आसानी से उसके यहां से उसे ले लेंगे। वे उसे सड़क तक छोड़ने आये, दोनों स्त्रियां छाते के नीचे चल रही थीं और सुवर्णमूल उनसे कुछ कदम पीछे था। किन्तु गांव के छोर पर पहुंचने से पहले ही वह विदाई का एक भी शब्द कहे विना एकाएक लौट पड़ा।

बर्फ जल्दी ही वर्षा में बदल गई, जैसा कि यहां यांग्त्सी के दक्षिण में अकसर होता है। चन्द्रगन्धा छाते के बगैर अकेली घर आई। वह अपने कपड़े पोंछ रही थी कि सुवर्णमूल उस पर वरस पड़ा।

"मैंने तुमसे कहा था कि हमें भोजन में वह पतली लप्सी मत देना। अगर वहन न होती तो मैं उसे तुम्हारे मुंह पर फेंक कर मारता।"

"हमने वही खाया, जो रोज खाते है। वहन कोई मेहमान तो थी नहीं।"

"वह वेचारी शायद ही कभी आता है और उस पर भी तुम्हें उसे एक वक्त पूरा भोजन देने में इर्ष्या होती है।"

"अगर हम उसके लिए कोई खास चीज पकाते तो वह समझती कि हम

रोज यही खाते हैं। वह सोचती कि हमारी हालत बहुत अच्छी है और फिर भी हमने उसे पैसा उधार नहीं दिया।"

सुवर्णमूल ने कुछ देर साचकर कहा, "वह हमारे बारे में ऐसा कभी नहीं सोच सकती।"

"वह अभी बच्ची ही तो है। इसके अलावा वह अपने पति को बताती और उससे सारा परिवार जान जाता। तुम जानते हो, लोग कैसी बातें करते हैं।"

"उसे किसी को बताने की जरूरत नहीं थी।"

"अगर मैं होती तो तुम्हें जरूर बताती !"

उसके बाद वह खामोश हो गया।

बरसात की दोपहर के बाद कमरे में अंधियारा और हुमस हो गई थी। और गीले कपड़े के जूतों की गन्ध आ रही थी। सुवर्णमूल गया और बिछौने पर जा लेटा। कुछ देर बाद वह झटके के साथ उठा, पुरानी, थेगलियों से भरी रजाई लपेटी और उसे कन्धे पर डालकर दरवाजे की तरफ चल पड़ा।

"यह क्या कर रहे हो ?" चन्द्रगन्धा चिल्लाई, "कहां जा रहे हो ?"

"मैं इसे गिरवी रखकर अपने लिए शराब का एक प्याला लेने जा रहा हूं।"

"तुम पागल हो गये हो !" उसने पूरी ताक़त से रजाई पकड़ ली, "हम इस जाड़े में ठण्ड से जम जायंगे।"

"तो मैं क्या करूं ? ऐसी जिन्दगी भी कुछ जिन्दगी है ?"

"किसी ने भला कभी ऐसी बात सुनी है—जाड़े के बीचों-बीच भला कोई इस तरह रजाई गिरवी रखता है ! हम ठण्ड से मर जायंगे !"

"मैं कोशिश करूंगा और डोमिनो का खेल खेलूंगा। उनमें जीते पैसों से मैं इसे छुड़ा लूंगा।"

"नहीं, नहीं!" वह हांफने लगी।

एक ओर से वह रजाई को खींचने लगी और दूसरी ओर से वह अन्त में निराश होकर रोने लगी। एकाएक उसने रजाई छोड़ दी और गुस्से से चला गया। वह झटके के साथ मिट्टी के फर्श पर जा गिरी। इसके बाद वह उठ खड़ी हुई और रजाई उठाकर रोते-रोते उसने उसे झाड़ा।

"किन्तु उन्होंने मुझसे आशा क्या की थी?" उसने सोचा, "क्या वह चाहते थे कि मैं उसे उसके ससुराल वालों को खिलाने के लिए पैसा उधार दे दूं, और हम स्वयं यहां भूखों मरते रहें।

अपना गुस्सा तेज करने के लिए वह यही बात बार-बार अपने मन से कहती रही, क्योंकि यद्यपि तर्क उसके पक्ष में था फिर भी मन ही मन वह अपने आपको अपराधी अनुभव कर रही थी, जिसका कारण वही दे सकती थी। वह इतनी निराशा और उदासी अनुभव करने लगी कि उससे चौंक उठी।

शाम के भोजन के बाद वह जल्दी ही बिछौने पर जा लेटी और पप्पू के और अपने ऊपर कस कर रजाई लपेट ली। बाद में जब सुवर्णमूल आया और उसने खींचकर रजाई ढीली करनी चाहीं तो उसने उसे मजबूती से पकड़े रखा और बोली, "तुम तो रजाई के बिना भी काम चला सकते हो। तुम्हें जाड़े से डर नहीं लगता।"

उसने रजाई को इतने जोर का झटका दिया कि उससे और बच्ची दोनों ही जमीन पर गिरने को हो गये। इसके बाद उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह दिया बुझा कर बिना कुछ ओढ़े चुपचाप अपने पहने हुए कपड़ों से ही लेट गया। ऐसा लगा, मानों उसे किसी बात की चिन्ता नहीं है।

काफी देर तक वह जागा हुआ लेटा रहा। वह बहुत चाहता था कि पत्नि अपनी भुजाओं में लपेट ले और उस शराब के बजाय जिससे वह वंचित कर दिया गया है, उसी में अपने दुःखों को डुबा दे। किन्तु उसे अपने आप पर बड़ी शर्म आ रही थी। और चीन में सबसे अधिक आम मजाक उस गरीब के बारे में है, जो भूखों मरने पर भी, प्यार करता है और अपनी पत्नी के उपहास का पात्र बनता है।

मध्यरात्रि के समय, जब उसे यकीन हो गया कि वह सो गया है तो उसने उस पर रजाई डाल दी और अन्धेरे में टटोल कर उसे अपनी बाहों के नीचे दबा दिया। और नींद में ही अभ्यास वश उसकी बाहें उसके चारों ओर लिपट गईं।

अध्याय ११

किसान संघ ने एक प्रस्ताव पास किया कि नव वर्ष के अवसर पर गांव वाले पास पड़ोस में रहने वाले सैनिकों के परिवारों के यहां जाकर उन्हें नये वर्ष का अभिनन्दन करें और उपहार हरेक घर इस कार्य के लिए आधा सुअर और ४० केठी (एक चीनी नाप) नववर्ष के केक दें। यह तय किया गया कि इसमें योग देने वाले सभी लोग अपने उपहारों को लाल और हरे कागजों में लपेट कर नाचते-गाते धान-अंकुर-गीत दल के साथ निर्दिष्ट घरों में पहुंचायें। जिन भाग्यशाली परिवारों के सुपुत्र सेना में हैं, उनके दरवाजों पर पराखों के जश्न के साथ लाल कागज का एक टुकड़ा चिपकाया जाय जिस पर "यशस्वी परिवार" शब्द लिखे हों।

जिन परिवारों के पास सुअर नहीं है वे उसकी कीमत दें और हर आदमी से कहा गया कि वह पटालों के लिए भी कुछ पैसा दे। ये सब दान बारहवें मास की पच्चीसवीं तारीख तक गांव के सरकारी दफ्तर में दाखिल कर दिये जाने चाहिएं। किन्तु वह दिन बीत गया और कोई वहां नहीं गया। किसानों ने बिना यह जाने कि वे इन प्रस्तावों को पूरा कैसे करेंगे, उस पर सर्वसम्मति से हाथ उठा दिये थे। इसलिए हर आदमी इस इन्तजार में बैठा रहा कि देखें उनका पड़ोसा क्या करता है।

किसान संघ के सभापति और उसकी पत्नी ने, जो महिला संघ की अध्यक्षा थीं, सभाएं बुलाई और हर परिवार से अलग-अलग बातचीत भी की,

किन्तु कोई नतीजा नहीं निकला। कामरेड वोंग को भी किसानों पर जोर डालने के लिए वारी-वारी से हरेक घर में जाना पड़ा। सुवर्णमूल के घर जाकर उसने कहा, "सुवर्णमूल तान, तुम आदर्श श्रमिक हो और इस गांव के गौरव, तुम्हें दूसरों के लिए मिसाल कायम करनी चाहिए। हमें जैसे भी हो यह काम पूरा करना होगा। वस्तुतः ही यह एक राजनीतिक कार्य है और उसका राजनीतिक महत्व है। क्या यह भी तुम्हारे लिए कुछ नहीं ? जनमुक्ति सेना के सिपाहियों के परिवारों की देखभाल की ही जानी चाहिए। जन मुक्ति सेना के विना तुम यह जमीन कैसे पाते ? पुराने जमाने में सैनिक लोगों पर मुसीवत वरपा करने के सिवाय कुछ नहीं करते थे। पर अब वह वात नहीं है। आज सेना जनता की अपनी सेना है। और जनता और सिपाही एक ही परिवार के अंग समझे जाते हैं।"

सुवर्णमूल ने फिर भी कहा कि उसके पास न तो देने को पैसा है और न नव वर्ष के केक बनाने के लिए चावल। वह वोला, "जानते हो, हमने पिछले दो महीनों में सिर्फ चावल की लप्सी खाई है।"

उसकी इस धृष्टता से घवराकर चन्द्रगन्वा वीच में ही वोल उठीं और अपने कष्टों और मुसीवतों का दुःखपूर्ण, लम्बा विवरण देने लगी।

"हरेक परिवार की अपनी दिक्कत हैं," वोंग ने मुस्कराते हुए कहा, "किन्तु जरा और गांवों को देखो। उनकी हालत हम से किसी भी कदर वेहतर नहीं है। किन्तु फिर भी वे सैनिकों के परिवारों के लिए नववर्ष के आहार खरीद रहे हैं। क्या हम दूसरों से कुछ कम देश भक्त हैं ?" उसने एक पांव वेंच पर रख लिया और आराम से एक लम्बी वातचीत के लिए तैयार हो गया।

जव सुवर्णमूल ने तीसरी वार भी यही वात कही कि उसके पास न चावल है और न पैसा तो उसने खीसें निपोर कर कहा, "मैं जानता हूं तुम्हारे दिन अच्छे नहीं वीत रहे हैं। किन्तु कम से कम तुम्हारी हालत उतनी खराव

नहीं है जितनी कि दूसरे कुछ लोगों की। तुम्हारी पत्नी शहर में काम करती रही है। तुम दोनों उत्पादन करते हो और तुम्हारे परिवार में भी बहुत कम लोग हैं। और कुछ लोग नहीं तो कम से कम तुम हमेशा दूसरों से अच्छा खाते रहे हो।"

सुवर्णमूल अन्दर ही अन्दर जल उठा। निःसन्देह कामरेड वोंग का इशारा उस समय की ओर था जब कि उसने चन्द्रगन्धा के घर लौटने पर पहले दिन उन्हें उससे अधिक गाढ़ी चावल की लप्सी खाते पकड़ा था, जितनी कि लोग आमतौर पर खाते हैं। सुवर्ण मूल जानता था कि यह उसकी अपनी गलती थी और इसीलिए उसका गुस्सा और भड़क उठा और वह अपने ऊपर काबू नहीं रख सका। "कामरेड वोंग," उसने चिल्ला कर कहा, तुम यहां आस-पास लोगों से पूछ कर देखो! लोग तुम्हें बतायंगे कि हर रोज क्या खाते हैं। यहां कौन किसी से कुछ छिपा सकता है? और फिर हमारा तो चावल भी खत्म हो रहा है। नववर्ष का दिन सिर पर आ गया है और मेरे हृदय को ऐसा लग रहा है, जैसे उसे गर्म तेल की कढ़ाई में डाल दिया गया हो।" चन्द्रगन्धा उसे चुपकारने के लिए जी जान से प्रयत्न करने लगी। किन्तु कामरेड वोंग ने अपने चेहरे पर मुस्कान कायम रखी और उससे बहस करता रहा। इस काम में वह इतना निपुण था कि सोते-सोते भी कर सकता था। वह घंटों तक बहस करता रहा और सारी ज़िन्दगी करता रह सकता था, क्योंकि उनकी दलीलें एक दूसरे के बिल्कुल समानान्तर थीं। सुवर्णमूल अपनी गरीबी का रोना रो रहा था। और वोंग, उस पर विश्वास न कर उसे सैनिकों के परिवारों के प्रति उसके कर्त्तव्य का उपदेश दे रहा था।

"अपनी तकलीफों को अधिक बढ़ाकर मत दिखाओ। कामरेड आगे भविष्य की ओर देखो," उसने उसे सलाह दी।

"पर हम भविष्य का आशा कैसे करें, जब कि हमारे पास अगली वसन्त में खाने को कुछ भी नहीं होगा? क्या हमें 'बड़ी देगची रवा भात मिलेगा?"

कामरेड वोंग "बड़ी देगची में रंधे के जिक्र से पहली बार उत्तेजित हुआ। मुक्ति से पूर्व राष्ट्रवादी एजेंट किसानों को यह कह कर डराने की कोशिश किया करते थे कि साम्यवादी उन्हें अपना सारा अन्न एक जगह जमा करने एवं एक ही सामूहिक रसोई में से खाना लेकर खाने के लिए मजबूर करेंगे। किसान लोग सबके लिए एक सामूहिक 'बड़ी देगची' के विचार से हमेशा डरा करते थे। हलांकि अब वे उस हालत में पहुंच चुके थे जब कि वे उसकी उत्सुकता से कामना करने लगे थे और सोच रहे थे कि सरकार उन्हें इसी रूप में राहत दे दे।

"तुम लोगों के लिए "बड़ी देगची में रंधे चावल" के स्वप्न लेने के बजाय अपनी निज की जमीन से ज्यादा पैदावार की कोशिश करना कहीं बेहतर होगा," कामरेड वोंग ने उत्तर दिया। उसके चेहरे का मुस्कान गायब हो जाने से ऐसा लगने लगा कि आज उसमें किसी हमेशा की चीज का अभाव हो गया है। वह डरावना लगने लगा।

"उसकी बात मत सुनो, कामरेड वोंग," चन्द्रगन्धा ने अटक-अटक कर कहा, "आज उनका मिजाज बिगड़ा हुआ है क्योंकि मैंने कल उन्हें रजाई गिरवी रखने और शराब पीने से रोक दिया था।"

उन दोनों ने ही उसकी उपेक्षा कर दी। "वसन्त के अकाल के बाद ग्रीष्म का अकाल आ जायगा। और तब हमारी क्या हालत होगी?" सुवर्णमूल ने चिल्ला कर कहा।

वोंग ने मेज पर हाथ पटकर कहा, "तुम्हारा यह रवैय्या बहुत गलत है, सुवर्णमूल तान। मैं तुम्हें अब तक सिर्फ तुम्हारे पिछले कामों के कारण ही बर्दाश्त करता हूं। पर अब और ज्यादा बढ़ने की कोशिश मत करो। तुम्हें हो क्या गया है? क्या कोई तुम्हारी पिछली टांगों से चिपट रहा है?"

उसका मतलब, निःसन्देह, चन्द्रगन्धा से था, जो उनसे बातें करते-करते वहां से खिसक गई थी। वह बिछौने के पास के अन्धेरे कोने में गई थी जहां

से वह अपने हाथ कुछ लिए हुए अभी-अभी आई थी। आन्तरिक संघर्ष से उत्तेजित होकर वह वोंग के पास गई और एक स्थिर मुस्कान के साथ उससे बोली, "कामरेड वोंग, यह लो मेरे पास कुछ पैसा है, जिसका उन्हें कोई पता नहीं था। अब मेरे पास यही बचा है। लो मेहरबानी कर यह ले लो, और हमारी तरफ के पटाखे खरीद लो। और हम सैनिकों के परिवारों को उपहार देने के लिए आधे सूअर की कीमत भी देना चाहते हैं। मैंने उन्हें कभी नहीं बताया कि मेरे पास यह पैसा है।"

कामरेड वोंग मेज पर हाथ पटकता और सुवर्णमूल को चिल्ला कर डाटता रहा, मानों उसने उसकी बात न सुनी हो। इस प्रकार उसने उससे काफी देर इन्तजार कराई। सुवर्णमूल ने उसकी ओर ऐसे घूरकर देखा कि अभी वहीं का वहीं उसे मार कर ढेर कर देगा।

अन्त में वोंग उसकी ओर घूमा और उदासीनता से बोला, "तुमने यह बात पहले क्यों नहीं कही? पैसा नहीं है, पैसा नहीं है—अपनी सरकार के साथ इस तरह की मक्कारी भरी चालाकी!"

"हां, मेरी गलती थी, कामरेड वोंग। किन्तु उन्हें इस बात का सचमुच ही पता नहीं था कि मेरे पास पैसा है। उन्हें कुछ भी मालूम नहीं था।"

चन्द्रगन्धा ने कामरेड वोंग को कमरे के बाहर तक विदा दी और तब तक आदर के साथ दहलीज में खड़ी रही जब तक कि वह दूसरे घर में नहीं घुस गया। एकाएक उसने अनुभव की कि किसी ने पीछे से उसके बाल पकड़ लिए हैं। सुवर्णमूल ने उसके दायें और बायें गालों पर थप्पड़ मारे और उसने भी उसे लात मारी और जोर से पीछे धक्का दिया। वह चिल्लाई नहीं, इस डर से कि कहीं वोंग न सुन ले।

किन्तु सुवर्णमूल चुप नहीं रहा! "तो तुम्हारे पास पैसा है।" वह बोला "और तुम उसे इधर-उधर फेंके रखती हो। तुम्हारा सड़ा पैसा चाहता कौन

है ? तो तुम मुझे लोगों की नजरों में झूठा वनाते हो ! अच्छा, मैं तुम्हें लोगों के आगे अपने आप को झूठा वनाना सिखाऊंगा ।"

अपने ऊपर कावू रखने पर भी थप्पड़ घूंसों की पीड़ा से वह चीख उठी । आवाज सुनकर वड़े मौसा आ गये और साथ ही वड़ी मौसी भी हालांकि जब से उनमें झगड़ा हुआ था और वूढ़े ने उन्हें पीटा था वह चन्द्रगन्वा से वोलती नहीं थी । वह वुढ़िया सिर्फ इसलिए वीच-वचाव करने आई थी कि वह दयालु प्रकृति की थी, जव भी कहीं गड़वड़ होती वहां पहुंच जाती थी । इसके अलावा अपने विरोधी को अपमानित होते देखने में मजा आता है, हालांकि वह स्वयं भी सवके सामने अपमानित हो चुकी थी ।

"रहने दो, रहने दो सुवर्णमूल" वड़े मौसा ने कहा, "ऐसी कौन-सी वात है जो शान्ति से निवटाई न जा सके । भले आदमी जवान से वात करते हैं और वदमाश लात-घूंसे से ।"

"अच्छा, अच्छा वहुत हो गया सुवर्णमूल । कहीं कामरेड वोंग न सुन लें" वड़ी मौसी ने वेवकूफी से या शायद जान वूझ कर कहा ।

"मुझे कामरेड वोंग का डर मत दिखाओ" सुवर्णमूल ने और भी जोर से प्रहार करते हुए कहा, और यह चाहे तो खुशी से जाकर महिला संघ में शिकायत कर सकती है । मुझे किसी का डर नहीं है ।"

वूढ़ा-वूढ़ी ने अन्त में उन्हें अलग कर ही दिया और सुवर्णमूल पांव पटकता हुआ आंगन से वाहर भाग गया ।

"सुवर्णमूल में एक खरावी है उसका गुस्सा, वड़ी मौसी ने कहा, "यह मैं हमेशा कहती रही हूं । उसे अपना गुस्सा अपनी पत्नी पर नहीं उतारना चाहिए था ।

चन्द्रगन्वा ने एक शव्द भी नहीं कहा । जव वड़ी मौसी उसे सहारा देकर उसके कमरे में ले गई तो वह विछौने पर औंधी पड़ गई और सिसक-सिसक कर रोने लगी ।

वड़ी मौसी विछौने पर वैठ गई। "पति-पत्नि का झगड़ा तो लगा ही रहता है। उसकी वात का वहुत सोच मत करो। क्या तुमने यह कहावत नहीं सुनी कि पति-पत्नी का झगड़ा एक दिन से ज्यादा नहीं टिकता ?" फिर वह चन्द्रगन्धा के ऊपर झुक कर आहिस्ता से वोला "सिर्फ़ तुम्हारा परिवार ही मुसीवत में नहीं है। हमारा हाल तुमसे भी वुरा है। हमारा सुअर तो गया समझो। हम पैसा नहीं दे सकते, इसलिए हमसे कहा गया है कि अपने रिश्तेदारों से मांग कर लाओ। कहती है तुम्हारी पतोहू की एक वहन क्या शहर में एक दुकानदार से नहीं व्याही ? कछुए का अंडा, कम्वख्त हरेक वात जानता है। अव वह अपनी वहन से मिलने शहर गई है। अगर उन्होंने पैसा उधार देने से इन्कार कर दिया तो ईश्वर जाने क्या होगा।" उसने गहरी सांस ली और अपनी जाकट की घघरी से अपनी आंखें पोंछने के लिए नीचे झुकी फिर वोली आसान वात नहीं है! एक-एक दिन काटना मुहाल है।"

चन्द्रगन्धा फफक कर रोती रही। उसके लिए तो सारा आसमान अन्धेरा हो गया था और यहीं से दम छूट कर माना वह जीवित ही पहाड़ के नीचे दव गई थी, क्योंकि सुवर्णमूल ने उसे समझा नहीं था।

दूसरे दिन उन्होंने नव वर्ष के केक वनाने के लिए चावल का आटा पीसना शुरु किया। पुरानी चक्की के पाटों की घाड़-घाड़ की आवाज वड़ी भारी और अत्यन्त धीमी थी। ऐसा लगता था मानों चक्की नहीं, पृथ्वी अपनी धुरी पर घूम रही हो और लम्वे महीनों और वर्षों का रास्ता तय कर रही हो।

शाम को उन्होंने आंगन में एक मेज रख ली और उसके वीचों वीच एक मोमवत्ती रखकर और उसके चारों ओर खड़े होकर केक वनाना जारी रखा। दोनों हाथों से सुवर्णमूल होशियारी से तरवूज के वरावर आकार के गर्मागर्म चावल के आटे के गोले को इधर-उधर उलट-पलट कर गूंध रहा था। मेज पर झककर यह उसे तेजी से गोल-गोल वटता रहा। उसके चेहरे पर एक

विचित्र मुस्कान थी और वह ऐसी एका ता से काम कर रहा था मानों सृष्टि के प्रारम्भ में जलती हुई चट्टान के मसाले से कोई कुछ बना रहा हो। बीच-बीच में वह एक टुकड़ा उठाता और उसे चन्द्रगन्धा की ओर फेंक देता जो उसे लकड़ी के एक छोटे से सांचे को मेज पर पटक कर खाली कर लेती। सामने ही पानी में घुले रंग से भरे एक टीन के डब्बे में बत्तख के पांच मुलायम पंखों को बांध कर बनाया गया। एक छोटा बुरुश पड़ा था। वह तीन बार बुरुश फेर कर केकों पर उभरें ओर्चिड और आलुबुखारे के डिजायनों पर आलु-बुखारे के तीन फूल बनाती। पप्पू बार-बार शोर मचाती रही कि वह भी यह फूल बना सकती है किन्तु मेज उसके लिए बहुत ऊंची थी।

आखिरकार केक बनकर तयार हो गये और सूखने के लिए कमरे में ले जाकर रख दिये गये। अभी गिनने और तोलकर यह देखने का, कि वे आवश्यक वजन के बने हैं या नहीं, काफी काम पड़ा था। सूने आंगन में मेज के बीचों बीच मोमबत्ती अभी तक जल रही थी। टीन के डिब्बे के सिवाय, जिसमें पानी में भीगा एक लाल रोयेंदार कपड़ा पड़ा था, मेज पर और कुछ नहीं था।

चन्द्रगन्धा आई और भौहों पर फेरा और उसके बाद अपनी हथेलियों से रगड़ कर रंग को फैला कर एकसार कर दिया।

"इसे फेंकूं कोहे को," उसने एक हलकी हंसी हंसते हुए कहा। उसने बच्ची को भी बुलाया और उसके गालों पर भी उसे लगा दिया। सारी शाम मां-बेटी अपने गालों पर नाटकों के पात्रों की भांति गहरा लाल रंग लगाये फिरती रहीं। ऐसा मालूम होता था, मानों नववर्ष का दिन आ गया है।

अध्याय १२

सूर्य निकलने से पहले ही गांव के कुछ सूअर यशस्वी सैनिकों के परिवारों के सम्मान के लिए मौत के घाट उतर चुके थे। कुछ दूर से उनकी तीखी और कर्कश चिल्लाहटें जंगल को सीटी में लम्बी फूंक मारने से उत्पन्न आवाज की भांति सुन पड़ती थीं।

दिन निकल आने पर बड़े मौसा ने भी अपना सूअर गांव के बीचों-बीच अवस्थित कच्चे वर्गाकार और बीच से ढलवा अहाते में, जहां से चारों ओर के मकानों में जाने की पत्थर की सीढ़ियां बनी थीं, लाकर छोड़ दिया। मकानों की सफेद दीवारों पर लम्बे और विविध रंगों के भद्दे निशान बन गये थे—यह वर्षा की पानी के रंगों से की गई बदरंग चित्रकारी थी।

"यहां सूअर मत मारो," बड़ी मौसी ने फुसफुसाकर कहा, "अपने ही आंगन में ले चलो। यहां, बाहर देखने वाले लोग बहुत हैं, कहीं कोई अपशकुन की बात न कह दे। नव वर्ष का दिन इतना नजदीक आ गया है कि ऐहतियात रखना ही पड़ता है।"

"उससे कुछ नहीं होता। इस बार हम इसे अपने लिए थोड़े ही मार रहे हैं" बड़े मौसा ने खिन्न-सा होकर कहा, "अगर हमें इसे ठीक ढंग से करना हो तो हमें पहले धूप-दीप और मोमबत्तियां जलानी होंगी और तब हम उसे मार सकेंगे, क्योंकि अब नववर्ष के प्रारम्भ में थोड़े ही दिन रह गये हैं।"

सुअर को उसका पेट साफ रखने के लिए एक दिन पहले ही भूखा रखा जा चुका था। वह खाने की चीज की तलाश में शरद ऋतु की नंगी, पीली-भूरी जमीन पर उत्सुकता से थूथन मारने लगा। एकाएक वह बड़े जोर से चिल्लाया—बड़े मौसा और एक पड़ोसी ने उसकी पीछे की टांगें पकड़ ली थी। एक और आदमी भी उसे घसीटने में मदद देने के लिए आ गया था। थोड़ी ही देर में उसे उलट कर लकड़ी के एक चौखटे पर चित लिटा दिया गया। बड़ी मौसी उसकी आगे और पीछे की टांगें पकड़ कर खड़ी हो गईं और बड़े मौसा ने अपनी औजारों की टोकरी में से चाकू निकालने के लिए हाथ बढ़ाया। पहले उन्होंने अपना लम्बा पाइप मुंह से हटाया और टोकरी के हत्थे के सिरे में उसे खांस दिया। टोकरी सुन्दर थी। उसमें बांस की एक फालतू खपच्ची लगी थी जिसे बुनने वाले ने काटा नहीं था और इसलिए एक चीनी चित्र में अंकित एक लम्बे और सुन्दर ओचिड के पत्ते की भांति वह एक तरफ बढ़ी हुई थी।

तेज चाकू उसके गले में घुसेड़ दिये जाने के काफी देर बाद तक भी सूअर उसी तरह जोरों से चिल्लाता रहा। और उसकी आवाज में कोई परि-वर्त्तन नहीं हुआ—वही एक-सी, अभिव्यक्ति हीन कर्कश चिल्लाहट, घोड़े की हिनहिनाहट से भी ज्यादा भद्दी। किन्तु सूअर का बहुत देर तक चिल्लाते रहना अपशकुन समझा जाता है, इसलिए अन्त में बड़े मौसा ने उसका मुंह पकड़ने के लिए एक हाथ बढ़ाया। कुछ देर बाद उसने एक हल्की गुर्राहट भरी, मानो कह रहा हो, "इन लोगों के आगे गिड़गिड़ाना व्यर्थ है।" और अन्त में वह शान्त हो गया।

उसकी थूथन से सफेद भाफ निकलना जारी रहा। मौसम बहुत ठंडा था।

बुड्ढे ने अपनी टांगों को गर्म रखने के लिए उन पर सन के थैले लपेटे हुए थे। उसकी टांगों पर लिपटे थैलों के-से हल्के-पीले रंग का एक कुत्ता

आया और सूअर के गले से जमीन पर गिरते खून को चाटने लगा। इसके बाद वह खून की तलाश में इधर-उधर जमीन सूंघता फिरने लगा। जब उसने सिर उठाया तो वह संयोगवश हवा में अकड़ी हुई सुअर की टांग से टकरा गया। उसने टांग को उत्सुकता से सूंघा। जिस परिणाम पर भी वह पहुंचा हो, था वह उसके लिए सन्तोष जनक ही। वह इधर-उधर फिरने लगा और हर थोड़ी-थोड़ी देर बाद सुअर की टांगों के नीचे आ घुसता और उसकी चमकीली काली आंखों में एक स्पष्ट मुस्कान का भाव झलकता।

हिरण्मय की पत्नी वहंगी पर गर्म पानी की दो बाल्टियां लटकाए आई और उन्हें उसने लकड़ी के एक बड़े टप में उलट दिया। उन्होंने सुअर को टब में डाल दिया और जोर से उसका सिर पानी में डुबा दिया। जब उसका सिर फिर पानी से बाहर आया तो उसके बाल भीगकर वैसे ही हो गये थे जैसे किसी बच्चे के नहाते समय हो जाते हैं। बड़े मौसा ने जिन्दगी में पहली बार उसके कान एक औजार से पकड़े। फिर उन्होंने एक बड़े उस्तरे से जिसके दोनों सिरों पर फलके थे उसका शरीर मूंडना शुरू किया। उसकी हर चतुराई पूर्ण रगड़ के बालों के गुच्छे गिरने लगते। उसके बाद उसके बाद उसके खुरों में एक छोटी संडासी घुसेड़कर उसने निहायत आसानी से एक-एक कर उसके पंजे निकाल दिये। बर्फ की भांति सफेद छोटा-सा तलुवा टखना, जिसके सिरे पर एक पतला-सा तलुवा था, मानों वह लोहे के चीनी जूतों में जकड़े हुए पांव वाली किसी स्त्री का पंजा हो और उसकी सब उंगलियां एक दूसरे से जुड़ गई हों।

बूढ़े को सुअर को फुलाने के लिए खुर से उसके भीतर फूक भरनी पड़ी। इससे बाल उतारना आसान हो जायगा। उसने अपने जीवन में ऐसा अनेक बार किया है, किन्तु फिर भी वह, खुर को अपने मुंह में डालने से पूर्व, हमेशा की भांति जरा हिचकिचाया।

यह दृश्य देखने के लिए दर्शकों का एक झुंड चारों ओर गोल बांधकर

खड़ा हो गया था। उन लोगों ने उसके बारे में जो थोड़ी बहुत टिप्पणियां की उनका सार यही था कि यह सुअर कुछ अन्य परिवारों द्वारा कल मारे गये सूअरों की तुलना में कितना भारी होगा और गत वर्ष काटे गये एक और परिवार के सुअर के वजन की तुलना में, जो कि वहां की अब तक का रिकार्ड था, कैसा रहेगा।

"इस सूअर का आगा ही मोटा है," एक लम्बे पीले बूढ़े ने कहा, जिसके के कन्धे सीधे और ऊंचे थे और जो एक लम्बा सलेटी रंग का चोंगा पहने था।

इस पर किसी और ने कुछ नहीं कहा। उनकी सभी टिप्पणियां इसी तरह की थीं, जिनका कोई उत्तर नहीं दिया गया।

वह लम्बा बूढ़ा आदमी अपने घर वापस गया और नीले किनारे वाला एक कटोरा और खाने की तीलियों का एक जोड़ा लेकर फिर लौट आया और गर्मागर्म लप्सी खाता-खाता फिर देखने लगा।

हिरण्मय की पत्नी उबलते पानी की एक बाल्टी लेकर आयी और उसे सुअर पर उलट दिया। अन्त में सिर पर एक जरा से गुच्छे को छोड़ घर सारे उतर गये। टब के एक सिर नीचा कर के लिटा देने पर सूअर अब आदमी से बहुत मिलता जुलता नजर आने लगा—मोटा ताजा गंजा शरीर, सिर्फ सिर के पीछे की ओर बालों का एक जटा-सा गुच्छा। और अन्त में जब बड़े मौसा और बड़ी मौसी ने लाश को इधर-उधर उलटा और बिना बालों का सूअर का चेहरा सामने आया तो ऐसा लगता था मानों वह हंस रहा हो, प्रसन्न छोटी आंखें झुर्रीदार तिरछे गढ़ों में अन्दर की ओर भिची हुई थीं।

बाद में लाश मकान के भीतर ले जाकर एक मेज पर डाल दी गई जहां वह चान्द्र वर्ष के अन्तिम दिनों के प्रचंड शीत से बेहद ठंडी हो गई। उसका सिर

काट दिया गया था। बड़ी सफेद थूथन मानों सन्तुष्ट और तृप्त होकर मेज पर पड़ी थी। परम्परा के अनुसार एक ऐसी परम्परा जिसमें तमाशे की एक हास्यास्पद भावना दृष्टि-गोचर होती थी—, उन्होंने काटे हुए सुअर के मुंह में उसकी मुड़ी हुई छोटी-सी पूंछ डालकर ऐसे ढंग से रख दी मानों वह बिल्ली के बच्चे की भांति उससे खेल रहा हो।

उनकी सूअर बांधने की जगह टट्टी का भी काम देता थी, जैसा कि आमतौर पर गावों मे होता है। जिस गढ़े में सूअर रखा जाता उसके सिर पर टिकाकर ऊंची लकड़ी की बाल्टियां रखी रहतीं। तीसरे पहर जब बूढ़ा पेशाब की बाल्टी खाली करने गया तो उसने अन्धेरे में जरा देर नजर दौड़ाई। कमरा बिल्कुल नीरव मालूम होता था, न वे परिचित गुर्राहटें थीं और न गढ़े में लेटे हुए सूअर का अस्पष्ट हिलना-डुलना दीख पड़ता था।

खाली कमरे से बाहर निकलकर पतली पीली धूप में आते समय उसे एक अजीब व्याकुलता और शून्यता-सी महसूस हुई। उसकी पतोहू आंगन में लकड़ी के टब को रगड़ कर उस पर से चर्बी उतार रहीं थी। उसकी पत्नी दरवाजे की चाखट पर बैठी उसके जानवर काटने के औजारों को टोकरी में डालने से पूर्व एक कपड़े के टुकड़े से पोंछ रही थी। वह कमरे के आगे के सायबान के नीचे जाकर खड़ा हो गया। उसके हाथ उसके काम करन के वक्त पहनन के नीले चोंगे भीतर थे जिससे वह कुछ फूल गया था।

"अब मैं कभी सुअर नहीं पालूंगा," उसने ऊंची आवाज में कहा।

"यह बात तुम पहले भी कह चुके हो", बुढ़िया ने कहा। यह देखकर कि उसने इस पर आगे कोई टिप्पणी नहीं की, उसने निष्ठुर आग्रह के साथ फिर कहा, "यही तो तुमने उस मर्त्तबा भी कहा।"

"अब जो सुअर पाले वह डायन का बच्चा," उसने उसकी ओर देखे बिना ही जोर से कहा।

हिरण्मय की पत्नी ने रोना शुरू कर दिया था। हाथ चिकने हान के कारण उसने कन्धा उचकाया और आस्तीन के ऊपर के भाग से आंखें पोंछ लीं। गर्म आंसू उसके चेहरे पर वह कर आ रहे थे और हवा उन्हें जल्दी ही झोंके से ठंडा कर देती थी।

वे तीनों ही "उस मर्त्तबा" की याद कर रहे थे। यह जापानियों के कब्जे के समय की दो वर्ष पुरानी बात थी।

जिस घर में वे रह रहे थे वह उनके वहां की उस एक मात्र शाखा ने बनाया था जिसने खूब उन्नति की थी और मंडारिन पैदा किये थे। इस टूटी-फूटी इमारत के, जिसमें अब छोटे किसानों का एक बड़ा दल रहता था, बाहर के द्वार पर अब भी सुनहरी रंग के अक्षरों में एक सा न बोर्ड लगा था जिस पर लिखा था, "एक चिंग से का भवन"—चिंग से, अर्थात् वह व्यक्ति जिसने साम्राज्य का सबसे ऊंचा इम्तिहान पास कर लिया हो। साम्यवादियों के आने के बाद यह साइनबोर्ड हटा दिया गया था, किन्तु युद्ध के दिनों तक वह वहां लगा हुआ था।

अनगिनत आंगन पत्थरों से मढ़े अन्धेरे रास्तों से परस्पर जुड़े हुए थे जो छतदार होने पर भी गलियों से अधिक मिलते-जुलते थे। फेरीवालों को घर के भीतर आने-जाने और इन रास्तों पर अपना माल बेचने की छूट थी। यहां तक कि एक सूरदास भी पत्थरों से मेज फर्श पर स्पष्ट और तीखी आवाज के साथ अपनी लाठी से ठक-ठक करता भीतर आ सकता था। "उस मर्त्तबा" भी आज की ही भांति वर्ष का अन्त सन्निकट था। सूरदास ने ऊंचे स्वर से सूक्तियों का एक पद गाया था जिसमें गृह-पत्नियों के लिए नव वर्ष की शुभकामनाएंप्रकट करते हुए कहा गया था।

"……हर कदम सुरक्षित हो और हर कदम उन्नति का हो……
तुम भद्र महिलाओं के लिए जो नव वर्ष के केक बनाती हो……"

उसके वाद अपने कन्धे पर वंहगी रखे और उसके दोनों ओर दो मिट्टी के घड़े लटकाए तिल का तेल वेचने "सुगन्धित तेल चाहिए, सुगन्धित तेल" की आवाज लगाता आया।

फ़ेरी वाले के चले जाने के वाद, तीसरे पहर का सन्नाटा घर पर और उसके इर्द गिर्द गांव पर छा गया। वड़ी मौसी आंगन में वैठी मकई पीस रही थीं। छाया में खड़ी वह रह-रह कर अपना हाथ वढ़ाकर धूप में करतीं और चक्की के ऊपर मकई की तह को फैलातीं। मकई का सुनहरी रंग का आटा एक अलस धारा के रूप में, रेगिस्तान की वालू का राशि के प्रपात की भांति नीचे गिरता।

एकाएक उन्होंने अपना सिर उठाया और रास्ते से आती एक अस्पष्ट ठक-टक की आवाज ध्यान से सुनने लगीं। यह सूरदास की लाठी की ठकठक नहीं थी, यह थी पत्थरों से मढ़े रास्ते पर चमड़े के जूतों की ठकठक की आवाज। ये लोग कठपुतली सरकार की शान्ति सेना के सिपाही थे, जो योद्धा सन्त के मंदिरों में ठहरे हुए थे और अक्सर गांव में आते रहते थे।

अभी वह सुन ही रही थीं, कि रास्ते की ओर खुलने वाले उनके पिछवाड़े के दरवाजे से कोई भीतर घुस आया और उन्होंने अपने पीछे के कमरे में ऊंची और उत्तेजित आवाजें सुनीं।

"मुझे कुछ देर यहीं रुके रहने दो" तिल का तेल वेचने वाले ने हांफते हुए कहा, "वे लोग आ रहे हैं। मैंने उन्हें आते देखा है।"

"तुम्हारे यहां छिपने का कोई लाभ नहीं अगर वे इधर आ रहे हैं," वड़े मौसा ने कहा।

"तो मुझे दूसरे दरवाजे से निकल जाने दो।" फेरी वाला अपने तेल के घड़े को दरवाजे से टकराता हुआ तेजी से आंगन में भागा।

"संभल कर, संभल कर !" बड़े मौसा ने कहा।

"वे लोग आ रहे हैं !" बड़ी मौसी ने कर्त्तव्य मूढ़ की भांति पति से फुस-फुसा कर कहा। इसके बाद वह दरवाजे से बाहर भागी और ताजे बनाए हुए चावल के आटे की सेवियों के लड्डू, जो धूप में सुखाने के लिए जमीन पर तिनकों के छोटे घोंसलों की भांति डाल दिए गये थे, उठाने के लिए झुकीं।

"इनकी चिन्ता मत करो," बूढ़ा हांफता हुआ उनके पीछे आया और बोला, "आओ मुझे सुअर को छिपानें में मदद दो"।

"मैं छिपाने की जगह जानती हूं" बड़ी मौसी ने उत्तेजना के साथ धीमे स्वर में कहा, "उसे कमरे के अन्दर ले जाओ।"

वे दोनों सुअर रखने के कमरे की ओर भागे। बूढ़े ने जब उसे उठाने का प्रयत्न किया तो वह बड़ी और मोटी सुअरी उसकी बाहों में एक तड़फड़ाता भारी और बेकाबू बोझ बन गई। हिरण्मय की पत्नी-जो बच्चे को छाती का दूध पिला रही थी, भागी हुई भीतर आई और बच्चा बुढ़िया को थमाकर बूढ़े को मदद देने के लिए नीचे झुकी।

बड़ी मौसी ने पांव पटक कर अपनी पतोहू को धमकी दी, "तुम यहां क्या कर रही हो ? भागो यहां से और छिप जाओ कहीं जल्दी करो।"

"जल्दी, जल्दी, छिप जाओ जा कर !" भय से बूढ़े ने जमीन से उसकी ओर ऊपर आंखें उठाकर कहा।

"लो, तुम बच्चे को भूल गई," बड़ी मौसी ने अपनी पतोहू के पीछे भागते हुए गुस्से से चिल्लाकर कहा और बच्चा उसकी बाहों में डाल दिया।

उसे देखकर बूढ़े को उसके पति की याद आ गई। "अरे, हिरण्मय कहां है ?" उसने चिल्लाकर कहा, "कहीं वह उन्हें नजर न आ जाय। नहीं तो सिपाही उसे बांधकर ले जायेंगे और रंगरूट भरती कर लेंगे।"

"जल्दी जाओ, उससे छिप जाने को कहो बुढ़िया ने कांपती आवाज में कहा, लो बच्चा मेरे पास रहने दिया मूर्ख कहीं की ! तुम चाहती हो कि वह रोकर चिल्ला उठे और तुम्हें तबाह कर दे ?"

उसने बच्चे को दीवार के सहारे ऊपर उठा कर उसे पकड़ाया और बूढ़े को सुअर संभालने में मदद देने के लिए वापस चली गई। दोनों ने मिलकर सुअर को किसी तरह अपने रहने के कमरे में पहुंचा दिया। उन परिस्थितियों में भी उन्हें इस बात पर एक क्षणिक गर्व अनुभव हुआ कि उसका वजन कितना भारी हो गया है।

"बिस्तर पर" बड़ी मौसी ने हांफते हुए कहा, "इसे बिस्तर पर डाल दो और ढक दो।"

गुर्रा कर विरोध प्रकट करने पर भी सुअर को बिस्तर पर डाल कर चमकीले लाल रंग की फूलदार सूती रजाई से ढक दिया गया। बुढ़िया ने रजाई खींचकर उसका मुंह ढक दिया और चारों तरफ से उसे मोड़कर दबा दिया अपनी इस योजना के पूर्णतः निर्दोष बनाने के लिए वह नीचे झुकी और एक जोड़ा जूते खाट के नीचे से खींचकर बिछौने के पास रख दिए।

उन्हें दरवाज़े के पास आवाजें अभी से सुनाई देने लग गई थीं।

"तुमने बाहर के दरवाजे में कुंडा लगा दिया था ?" उसने चिन्तित होकर पूछा, "कुंडा लगाने का कोई लाभ नहीं, इससे तो सिर्फ वे और भी ज्यादा खफा होंगे।"

सिपाही अब तक घबराई मुर्गियों के साथ जिनका वे पीछा कर रहे थे, भीतर आ चुके थे।

"अरे घर में क्या कोई नहीं है ?" एक ने चिल्ला कर कहा, "क्या सबके सब मर गए हैं।

बूढ़ा-बूढ़ी उनके स्वागत में मुस्कराते हुए तुरन्त बाहर आये। वे लोग

तीन थे, सभी उत्तर के रहने वाले थे और एक ऐसी जनपद भाषा बोल रहे थे जिसे समझना आसान नहीं था ।

"ओह तो तुम बहरेपन का बहाना कर रहे हो," उन्होंने अधीर हो कर कहा ।

अन्त में उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि वे यह पूछ रहे हैं कि क्या घर में खाने को कुछ है । बुढ़िया ने फसल खराब होने और भूखों मरने की अपनी वही पुरानी घिसी पिटी कहानी सुनानी शुरु कर दी । इसी बीच एक सिपाही जिसके चेहरे पर चेचक के बेहद दाग थे, आंगन की दूसरी तरफ अपनी व्यक्तिगत ढूंढ़-खोज कर रहा था । दरवाजे की चौखट पर चिपकाई हुई एक पीले कागज की चिप्पी पर लिखा था कि परिवार में हाल में ही एक मौत हुई है । सुवर्णमूल की मां अभी एक महीना पहले मरी थी । उसका बिना रोगनपुता ताबूत अभी तक कमरे में पड़ा था लाश उसके भीतर बन्द कर दी गई थी और शोक की अवधि समाप्त होने पर दफनाए जाने की इन्तजार में थी । दोनों अनाथ बच्चे सुवर्णमूल और स्वर्णपुष्प बांस की नर्म जड़ें खोदने के लिए पहाड़ी पर गये हुए थे । चेचक के दागों वाला सिपाही उनके कमरे में घुस गया और वहां उसने ताबूत देखा । इससे हुए दुर्भाग्य के अपशकुन का प्रभाव दूर करने के लिए उसने जमीन पर थूक दिया और लौटकर दूसरे कमरे में घुस गया, जहां बड़े मौसा सूअर रखा करते थे ।

"ए बुड्ढे, सुअर कहां है तुम्हारा ?" वह अन्दर से चिल्लाया ।

"मैंने बेच दिया है, कप्तान" बूढ़े ने जवाब दिना ।

"बेवकूफ ! बिना सुअर के कहीं यह जगह इतनी गन्दी हो सकती है ?" सिपाही ने, जो सेना में भर्ती होने से पूर्व किसान था, कहा ।

"ये देहाती लोग सचमुच बदमाश हैं । साले झूठ के पुतले," उनमें से एक ने, जो दूसरों से काफी बड़ा था, कहा । उसके गाल पिचके हुए और

बीमारी की तरह पीले थे और आंखें भी थकी और भीतर धंसी हुई थीं और पीले-भूरे रंग की हो गई थीं। अपनी उन आंखों को बूढ़े की ओर करके उसने जोर से कहा, "कहां है सूअर ? हूं ?" यह आखिरी 'हूं' ऐसी भयंकर गुर्राहट से भरी थी और किसी ऐसे विदेशी के मुंह से निकली प्रतीत होती थी, जो भाषा नहीं जानता था। उसने उसे कभी-कभी बड़ा प्रभावकारी पाया था।

बूढ़ा स्पष्टतः घबरा गया था, किन्तु बुढ़िया मुस्कराती हुई उसकी मदद पर आ गई। "कप्तान, सूअर सचमुच ही बेचा जा चुका है। अभी वह इतना बड़ा नहीं हुआ था कि अच्छे दाम उठते, पर हम उसे बेचे बगर गुजारा भी नहीं चला सकते थे। हमें चावल चाहिए था। जब हम उसे बाजार ले गये तो मैं रो पड़ी। हम देहाती लोगों की हालत सचमुच दयनीय है, कप्तान !"

"लो उसकी बात सुनो जरा !" अधेड़ सैनिक ने चिढ़कर मुस्कराते हुए कहा।

उसका साथी, लाल चेहरे वाला एक लड़का, जिसने अपनी बगल में एक मुर्गी दबाई हुई थी, बूढ़े को धमकाता-सा आगे बढ़ा "ठीक-ठीक बताओ !" अपनी राइफल का कुन्दा ऊपर उठाते हुए उसने चिल्लाकर कहा। इसी समय पंखों की फड़फड़ाहट और उत्तेजित कुड़-कुड़ की आवाजों से हवा में सनसनाहट आ गई। एक मुर्गी छूट गई थी और दरवाजे की ऊंची चौखट पार कर भीतर भाग गई थी। सारे फर्श पर उसके बारीक पंख बिखरे हुए थे।

"—इसकी दादी !" नौजवान सिपाही ने गाली दी और हंसता हुआ उसके पीछे भागा। मुर्गी उड़कर एक मेज पर जा बैठी और बर्तन व बोतलें खन्न से फर्श पर गिर पड़ीं।

आर लोग भी उसके पीछे भीतर गये और उसे मुर्गी के साथ जूझते देख कर हंसते और अपनी राइफलों का सहारा लेकर इर्दगिर्द खड़े हो गये।

"इसकी गर्दन मरोड़ दो," चेचक के दागों वाले ने सलाह दी, "अगर अपनी वर्दी बीठों से खराब नहीं होने देना चाहते तो उसकी जान निकाल दो।"

अधेड़ सैनिक ने दरवाजे पर पड़ा रुईदार नीला पर्दा उठाया और अन्दर के कमरे में झांकने लगा। बुढ़िया तुरन्त उसकी बगल में आ गई और मुस्कराकर आजिजी से कहने लगी, "अन्दर एक बीमार पड़ा है, कप्तान। वह कमरा सड़ा पड़ा है। इधर आ बैठो कप्तान, इधर।"

उसकी बात की उपेक्षा कर सिपाही भीतर चला गया, बाकी दोनों भी उसके पीछे पीछे अन्दर गये। बुढ़िया भी उनके पीछे-पीछे कमरे में गई और गिड़गिड़ा कर कहने लगी, "बहुत ज्यादा बीमार है। तेज बुखार चढ़ा हुआ है। उसे ठंडी हवा नहीं लगनी चाहिए। अगर इस हालत में ठण्ड लग जाय तो मौत का डर है।" बिस्तर पर एक उड़ती नजर डाल कर ही उसे भरोसा हो गया कि वह उसे जिस हालत में छोड़ गई थी, अभी तक वह उसी हालत में है।

सिपाही कमरे में इधर-उधर चीजें टटोलने लगे।

"अच्छा, देख लो, अच्छी तरह देख लो," बुढ़िया ने निराश होकर मुस्कराते हुए कहा, "गरीब आदमी के घर में देखने को है ही क्या?" अभी ये शब्द उसके मुंह से निकले ही थे कि रजाई को हिलता देखकर उसका कलेजा धक से रह गया सुअर उसके भीतर बेचैन हो उठा था।

बड़ी मौसी तुरन्त बिस्तर के सिरहाने के पास गई और रजाई पकड़ कर सांस लेने के लिए बाहर निकलती हुई बड़ी-सी थूथन को कसकर दबा दिया। "बेवकूफ, ठण्ड लग जायगी। मरना है क्या?" उसने डांटते हुए कहा, "अब भले आदमी की तरह पड़े रहो। सिर ढक लो और सारे बदन में पसीना

आने दो, ताकि जल्दी अच्छे हो जाओ। जरा धीरज रखो। पसीना सूखने तक बदन में जरा भी ठण्डी हवा न लगने दो, समझे ?"

उसने रजाई को उसके चारों ओर दवा दिया और यह देखकर आश्चर्य हुआ कि सुअर ने हिलना वन्द कर दिया।

अधेड़ सिपाही की अनुभवी आंखें कमरे के चारों ओर घूम रही थीं और कच्चे फर्श पर ताजी खोदी हुई मिट्टी या गारे की दीवार पर निशानों की खोज कर रही थी जिनसे गाड़ी या छिपायी हुई कीमती चीजों का पता लग सके। वाकी दोनों ने, और कोई काम की चीज न मिलने के कारण मुर्गी पकाने के तरीके पर वातें शुरू कर दी थीं।

"एक को थोड़े पानी में पकाओ और दूसरी को उबालो," नौजवान सिपाही ने कहा।

"अव ये इतनी वड़ी हो गई हैं कि पकाने से तो स्वादिष्ट नहीं वनेंगी," चेचक के दागों वाले ने कहा।

अधेड़ सिपाही ज्योंही विछौने की ओर गया वड़ी मौसी का दिल धक से रह गया। वह नीचे झुका और खाट के नीचे ट्रंकों और जमीन पर सन्दिग्ध निशानों की खोज करने लगा। इसके वाद वह सीधा खड़ा हो गया और लौटने ही वाला था कि उसकी आँखें विछौने के सामने पड़े जूतों पर जा पड़ीं। वे घर के वने नीले कपड़े के जूते थे जिसमें रखने के पीछे से एक तनी आगे आती थी। ये अवश्य किसी युवती के होंगे—लोहे के जूतों में जकड़े पावों वाली वूढ़ी स्त्री के लिए तो ये वहुत वड़े हैं।

वड़ी मौसी ने ज्यों ही उसकी आंखों में एकाएक चमक देखी कि प्रसन्न संकट की आशंका से उनका दम-सा निकल गया।

"ए, चेचक के दागों वाले !" वह हंसता हुआ चिल्लाकर वोला, "लो, वहां एक फूल जैसी युवता है।"

चेचक के दागों वाला आदमी बिछौने की ओर दौड़ा और उसने झट से रजाई खींच कर उतार दी। क्षण भर वे चुप खड़े रहे, मानों उन्हें अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ और उसके बाद सबके सब जोर ठहाका मार कर हंस पड़े और अश्लील गालियां देने लगे।

"उसकी मां" चेचक के दागों वाले सैनिक ने चिल्ला कर कहा, "उन्होंने यह बात सोची कैसे ! सुअर बिस्तर में छिपा दिया ।"

अधेड़ सैनिक बूढ़ी के पीछे-पीछे गया और बन्दूक के कुन्दे से उसे धमकाता हुआ बोला, "अपमे बाप को ठगती हो ? क्यों, क्या जान भारी हो रही है ?"

चीखता-चिल्लाता सुअर जमीन पर कूद पड़ा और दरवाज़े की ओर भागने लगा। उसकी पीछे की टांग पकड़ने की कोशिश में नौजवान सिपाही से दोनों मुर्गियां छूट गई और व्याकुलता से कमरे के चारो ओर कुड़-कुड़ करते हुए उनके चक्कर लगाने से हल्ला-गुल्ला और हलचल और भी बढ़ गई।

"अरे कोई इधर आओ, मेरी मदद करो," लड़का चिल्लाया "वहां खड़े-खड़े देखते मत रहो। ए, दरवाजा बन्द करो ।"

चेचक के दागों वाले ने उसे सुअर पकड़ने में सहायता दी। थोड़ी देर में ही लड़के ने सुअर पीठ पर उठा लिया और अनुभव किया कि वह उसके लिए बहुत भारी है। जब उसके पांव लड़खड़ाने लगे तो चेचक के दागों वाला ऊपर-नीचे उछलने, हंसने और अपनी जांघें थपथपाने लगा।

"देखो, देखो!" वह चिल्लाया, "विजय कुमार ली अपनी मां को पीठ पर उठाये ला रहा है।"

गुस्से से लाल होकर विजय कुमार ली ने सुअर को ढीला छोड़ दिया और उसकी पीठ से फिसल कर वह एक जोर दार धम्म की आवाज से जमीन पर आ गिरा। और वह झपट कर चेचक के दागों वाले से गुथ गया । अब अधेड़ सैनिक की सुअर को पकड़ने की बारी थी।

"वहां मुर्दे की तरह खड़ी मत रह, बूढ़िया" उसने चिढ़कर कहा, "एक रस्सा लाकर इसे बांध और बंहगी से लटका दे । नहीं तो हम इसे ले कैसे जाएंगे, इस खड़ जानवर को ?"

बूढ़ा-बूढ़ी एक रस्सा ढूंढ लाए और उससे सुअर को बांध दिया। इसी बीच चेचक के दागों वाले सिपाही ने नौजवान छोकरे से छुट्टी पा ली थी और बिस्तरे के सामने पड़े जोड़े में सें एक जूता उठा लिया था।

"यह कहां है !" उसने बूढ़िया से कहा "यह कह कर मुझे बहकाने की कोशिश मत करना कि ये जूते तुम्हारे हैं। एक भी झूठ बोला कि मैं पीट-पीट कर तुम्हारी जान निकाल दूंगा ।"

"हां यह फूल जैसी सुकुमारी कहां है ?" अधेड़ सिपाही ने पुनः दिलचस्पी लेते हुए कहा ।

"यह फूल जैसी सुकुमारी नहीं है, यह मेरी पतोहू है और वह श्राडू घाटी गांव में अपनी मां से मिलने मायके गई है।"

"फिर झूठ !" चेचक के दागों वाले ने जूते का तला चटाख से उसके गाल पर जमा दिया और उसे वहीं लगाए रखा। "बुढ़िया, सड़ा अण्डा कहीं की। एक लफ्ज़ भी सच नहीं ! अगर आज तेरे बाप ने तुझे पीट-पीट कर मार नहीं डाला तो देखना।"

"नाराज मत होओ, कप्तान" बुढ़िया ने जिसका एक गाल जूते से लाल हो गया था मुस्कराते हुए कहा, "लेकिन जब वह यहां है ही नहीं तो मैं उसे जादू से कैसे पैदा कर दूं। अगर मैं झूठ बोल रही होऊं तो मुझ पर गाज गिरे और मैं मर जाऊं।

"यह काम तो मैं ही कर दूंगा, "चेचक के दागों वाले सिपाही ने कहा।

विजय कुमारी ली और अधेड़ सिपाही बूढ़े की ओर बढ़े। यद्यपि उन्होंने

उसके गाल पर तमाचे जड़े और उस पर संगीन तानी किन्तु फिर भी वह यही बात दोहराता रहा कि उनकी पतोहू अपनी मां के यहां गई है।

"आओ, हम उसे खुद ही तलाश करें," चेचक के दागों वाले ने कहा ।

"और अगर वह यहीं मिल गई," बूढ़े सैनिक ने बूढ़ा-बूढ़ी को धमकाया "तो समझ लो जिन्दा नहीं छोड़ेंगे, तुम्हें ।"

बूढ़ा मुस्कराया और बुढ़िया हंसी और दोनों ने जवाब दिया कि हमें डर काहे का, जब कि सचमुच हमारी पतोहू ६ मील परे आडू घाटी गांव में है।

"अच्छी बात है, भागना मत," उन्होंने बूढ़े-बूढ़ी को अपने साथ लिया और मकान में ढूढ़ खोज करने लगे। वे सुनसान आंगनों और जल्दी में खाली किए गए कमरों में छानबीन करने लगे। अन्त में वे घास के एक ढेर के पास पहुंचे। अधेड़ सैनिक ने घास में अपनी संगीन घुसेड़ी और कई बार चुभाई। उसे लगा उसने एक दबी हुई रोने की आवाज सुनी है ।

"फूल जैसी सुकुमारी यहां है" उसने मुस्कराते हुए कहा ।

"अच्छी बात है, आओ घास खींचकर बिखेर दें। अब इस पर संगीनें मत चलाओ, चेचक के दागों वाले सिपाही ने जल्दी से कहा, "नहीं तो तुम उसे मार डालोगे।"

"फिक्र मत करो" अधेड़ सैनिक ने कहा, "उसे देखो जरा। उसका दिल अभी से दुखने लगा है, क्योंकि उसे चोट लगी है। उसके लिए दीवाना हो गया है, बिना देखे ही ।"

चेचक के दागों वाले ने उसे एक धक्का दिया जिससे वह गिरते-गिरते बचा ।

"बाहर निकलो" अधेड़ सैनिक चिल्लाया, "एकदम बाहर आओ नहीं तो हम गोली मार देंगें ।"

बूढ़ा-बूढ़ी चुपचाप खड़े देखते रहे उसी समय पाजामा पहने एक लात घास से बाहर निकली और उसके बाद दूसरी। शुरु में उन्होंने यह देखकर सन्तोष की सांस ली कि यह उनका पुत्र हिरण्मय था, जो कूद कर जमीन पर आया।

"यह कौन है ?" चेचक के दागों वाले ने निराशा से चिल्ला कर कहा।

"तुम्हारा लड़का है ?" अधेड़ सिपाही ने पूछा ।

"हां, कप्तान," बुढ़िया ने जवाब दिया।

"उसे हमारे साथ ले चलो विजयकुमारी ली," बूढ़े सैनिक ने कहा, "वह सुअर को उठाकर ले चल सकता है।"

"नहीं, नहीं, मेहरबान कप्तानों, बड़ी मौसी ने चिल्ला कर कहा," वह हमारा एकलौता लड़का है। उसका पिता असी बरस का हो गया है और मैं इक्यासी बरस की। अगर तुम उसे ले जाओगे तो हमारे मर जाने पर हमें मिट्टी कौन देगा ?" वह फूटकर रो पड़ी और घुटने टेक कर उनकी टांगें पकड़ ली और अपने पति से भी उसने वैसा ही करने को कहा। "उनसे प्रार्थना करो। वे बड़े दयालु और उदार हैं। वे हम पर तरस खा जाएंगे।

विजय कुमार ली ने हिम्मत की, पीठ पर संगीन तान दी और सुअर उठाने के लिए उसे आगे-आगे लेकर कमरे में गया । हिरण्मय दर्म्याने कद का और अपने पिता की तरह दुबला पतला था। वह एक बार का, कुछ झुककर अपने बाएं कन्धे पर उसने हाथ रखा जहां उसके कपड़ों पर फैला हुआ एक लाल धब्बा था ।

"मर जाने का बहाना करते हुए विजयकुमार ली ने उसे एक लात मारते हुए कहा, "बहने दो इसे, कैम्प में जाकर हम तुम्हें पट्टी बांध देंगे।

बढ़ा-बूढ़ी ने अपने बेटे की झांकी सड़क पर क्रमशः दूर जाती हुई उसकी संकटी पीठ से ही ली। चारों पांव इकट्ठे बांध कर सुअर को उसके कन्धे पर

वांस से लटका दिया गया था और वह गेंद की भांति झूल रहा था। वांस का दूसरा सिरा उसकी बांह में से होकर आगे निकला हुआ था और उसे विजय कुमारी ली ने पकड़ रखा था। डूबते हुए घास के तिनके नजर आ रहे थे।

चेचक के दागों वाले ने तब तक वहां से जाने से इन्कार कर दिया जब तक कि वह औरत नहीं मिल जाती।

"वह यहीं होगी" उसने कहा।

"जल्दी आओ !" अधेड़ सैनिक ने कहा, "अगर तुम जल्दी नहीं करोगे और पीछे रह जाओगे तो सुअर से हाथ धो बैठोगे। एक बार बैरकों में जाने पर सार्जेण्ट अपना हिस्सा मांगेगा; लैफ्टीनेंट अपना और रसोइया अपने दोस्तों और अपनी प्रेमिका के लिए उसके सबसे अच्छे हिस्से रख लेगा। तुम्हारी किस्मत में शायद थोड़ा-सा खून आ जाय जिसे तुम सेम और दही के साथ उबाल सको।"

चेचक के दागों वाला आदमी गुर्राया और उसके साथ चला गया।

सूअर और उनके लड़के को ले जाने के दो दिन बाद पल्टन भोर से पहले ही गांव से कूच कर गई। दूसरी टुकड़ियां आईं और चली गईं। और सिपाहियों द्वारा पकड़ कर ले जाये गये कुछ लोग किसी तरह बच निकले और गांव लौट आये। बड़े मौसा का परिवार हमेशा आशा करता रहा कि हिरण्मय भी ऐसा ही करेगा। तभी एक दिन सुबह उन्होंने गांव के बाहर खुले में सिपाहियों की कवायद की आवाज सुनी। एकाएक कवायद रुकी और उस सन्नाटे में एक चौड़ी, लम्बी, कठोर क्रन्दन ध्वनि फूट पड़ी। थोड़ी-थोड़ी देर बाद चीखों और सन्नाटे का क्रम चलता रहा। इसके बाद गांव में यह काना-फूंसी होने लगी कि ये आवाजें सेना से भगोड़ों की थीं जिन्हें कान काट कर सजा दी जा रही थी। मैदान में खून के बड़े-बड़े धब्बे थे।

जब लोगों ने यह कहानी दूसरों को सुनाई तो वे मुस्कराये बिना नहीं रह

सके। किसी का कान काटने की कल्पना कुछ ऐसी ही मजेदार चीज है। किन्तु बड़े मौसा के परिवार के लिए यह कल्पना मजेदार नहीं थी। वे अपनी कल्पना शक्ति से एकदम अनुभव करने लगते थे कि ठंडी हवा का एक झोंका उनके कानों के पास से वह रहा है और कानों की जगह सिर्फ खून से सने दो छेद रह गये हैं। वड़ी मौसी ने सपने में देखा कि उनका पुत्र अपने कानों पर हाथ रखे घर आया है और वह उसे उन पर से हाथ हटाने और जख्मों की मरहमपट्टी कराने के लिए मना नहीं सकी हैं। वचपन में वह हमेशा वड़ा हठी रहा है। और सपने में उन्होंने देखा कि वह उसके लिए समूर की ऐसी टोपा खरीदने के लिए, जिसके दोनों ओर कानों की जगह कपड़े की कनपटियां लगी हों, पैसे वचाने की तरकीवें निकाल रही हैं, मानों इसी से उसकी समस्या हल हो जायगी। जागने पर वह खूव रोईं।

उन्होंने दूसरों को यह घटना सुनाई, किन्तु पूरी कभी नहीं, क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं इससे लोगों में उनकी पुत्रवधू के सतीत्व के वारे में सन्देह न पैदा हो जाय। लोग अन्दर ही अन्दर यह सन्देह कर सकते हैं कि सिपाहियों ने अन्ततः उसे जरूर तलाश कर लिया होगा, किन्तु परिवार के लोग सिर्फ अपनी लाज रखने के लिए ही कह रहे हैं कि वे उसे ढूंढ़ नहीं पाये।

जैसे-जैसे समय वीतता गया और यह स्पष्ट हो गया कि हिरण्मय अव शायद वापस न आये, उसकी मां के लिए यह विषय एक कोमल मर्मस्थल हो गया और ज्यों ही कोई यह संकेत देता कि शायद वह मर गया हो, वह गुस्से से तमतमा जाती। और अव सात वर्ष वाद जव दूसरा सूअर भी चला गया तो वह अपनी पुत्रवधू पर, जो आंगन में लकड़ी के टव पर झुकी हुई थी और हवा में वैठी इस तरह सिसक रही थी मानों दम रुका जा रहा हो, वरस पड़ी।

"तुम यह अचानक किसके लिए रोने लगी हो," उसने पूछा, "नव वर्ष का दिन इतना नजदीक है, इस वक्त घर में यह रोना-धोना वुरा शकुन है।

तुम्हारे ससुर और मैं बूढ़े जरूर हैं, पर अभी मरे नहीं हैं। हमारे मरने तक इन्तजार करो, फिर जितना जी चाहे रो लेना।"

किन्तु हिरण्मय की बहू ने एक बार भी उनकी ओर ध्यान नहीं दिया और रोती रही।

अन्त में बुढ़िया ने गुस्से से चिल्लाकर कहा, "रोना बन्द करो। अगर वह अभी तक मरा नहीं, तो भी तुम्हारा रोना उसके लिए बुरा शाप होगा और वह मर जायगा। तुम चाहती हो, वह मर जाय ताकि तुम दूसरा विवाह कर सको, यही न ?"

इस आरोप के अन्याय से दिल टूट जाने के कारण हिरण्मय की पत्नी और भी जोर से रोने लगी।

एकाएक बुढ़िया भी फूट पड़ी और रोते-रोते कहने लगी, "मेरे निठुर बेटे ! इतने साल हो गये और एक चिट्ठी तक घर नहीं भेजी ! मेरे निर्मोही लाल ! अगर तुम जल्दी घर नहीं आओगे तो तुम मुझे फिर कभी नहीं देख पाओगे। अब मैं और कितने साल तुम्हारी इन्तजार कर सकती हूं ?"

"अच्छा, अब और मत बोलो," बूढ़े ने कहा। "कामरेड कू आज घर पर ही है," उसने उसे धीमी आवाज में याद दिलाया।

"तुम्हें डर किस बात का है ? हमारे साथ जुल्म हो पिंग कुआन ने किया था। हो पिंग कुआन ने ही हमसे उसे छीना था।"

"हां, लड़ाई खत्म होने पर बहुत से हो पिंग कुआन राष्ट्रवादी सेनायें भर्ती कर लिए गये थे। अगर वह अभी तक जीवित है, तो हो सकता है, वह दूसरे पक्ष की तरफ से लड़ रहा हो।"

एक क्षण के लिए बड़ी मौसी भय से अभिभूत हो गई। इससे तो उनका परिवार क्रांति-विरोधी बन जायगा। किन्तु जल्दी ही उन्होंने अपने आपको

संभाल लिया कठोर होकर बोलीं, "कौन जाने ? हो सकता है साम्यवादियों ने उसे पकड़ लिया हो और वह मुक्ति सेना में सिपाही हो गया हो। तब हमारा परिवार सैनिक का परिवार बन जायगा। और हमें भी आधार सूअर और चालीस केटी नववर्ष के केक मिलेंगे।"

"कैसी पागलों की-सी बात करती हो," बड़े मौसा ने परेशान होकर कहा," सूअर के मांस और नववर्ष के केकों की बात सोच-सोच कर पागल हो गई हो।"

अध्याय १३

सुवह-सुवह सूअर और नववर्ष के केक वंहगियों के साथ लटकी टोकरियों में भर कर गांव के सरकारी दफ्तर में भेज दिये गये। खुद घर ऐसा खाली और सुना हो गया जैसा कि लड़की की शादी के वाद अतिथियों के चले जाने और चहल-पहल खत्म हो जाने पर हो जाता है। चन्द्रगन्धा ने अनुभव किया कि वह अपने रोजमर्रा के काम पर नहीं बैठ सकती। इसलिए वह पास के घर में यह पूछने चली गई कि क्या वड़े मौसा वापस आ गये हैं।

"वे अभी नहीं लौटे," वड़ी मौसी ने उत्तर दिया और आगे झुककर फुसफुसाते हुए उन्होंने कहा, "मैंने उनसे कह दिया है कि जब वे उपहार देने के लिए अपनी बंहगी भीतर ले जायं तो खूब मुस्कराते रहें। उदासी के साथ देंगे, तो चीजें तो जायंगी ही, ऊपर से आलोचना अलग होगी।"

"मुझे आशा है सुवर्णमूल को भी मुस्कराने की वात याद रहेगी," चन्द्रगन्धा ने चिन्ता के साथ कहा।

आदमियों के आने की इन्तजार में बैठी वे वातें करती रहीं।

"ईश्वर करे, उन्होंने अपनी रूईदार जाकट गिरवी न रखी हो और जूआ खेलने न चले गये हों," चन्द्रगन्धा ने कहा, "कुछ दिनों से ..."

अनुभव करते रहे हैं। न हो, मैं चायघर हो आऊं और देख आऊं कि क्या वह वहां हैं।"

"नहीं, खुद उसे तलाश करने मत जाओ। यदि तुमने उसे वहां पकड़ लिया तो इतने सब लोगों के सामने वह बहुत संकोच अनुभव करेगा और फिर तुम्हारी लड़ाई हो जायगी पप्पू को भेज दो।"

चन्द्रगन्धा ने पप्पू को ऊंची आवाज से पुकारा और सब जगह उसे ढूंढा किन्तु उसका कहीं पता नहीं था।

"शैतान छोकरी," चन्द्रगन्धा ने कहा, "मैंने उसे अपने पिता की बंहगी के पीछे-पीछे जाते देखा था। जरूर उन चावल के केकों के पीछे-पीछे मंदिर तक गई होगी।"

वे अभी आंगन में बातें कर ही रहे थे कि बड़े मौसा उत्तेजित होकर भागते हुए भीतर आये।

"दरवाजा बन्द कर लो!" उन्होंने कहा, "ज़ल्दी कुंडी लगा दो! आओ, जल्दी! बच्चे कहां हैं? सब घर में हैं? तुम लोग एकदम भीतर चले जाओ।"

"हो क्या गया है?" बड़ी मौसी ने पूछा।

दरवाजे में कुंडा लगाना बन्द कर बड़े मौसा घूमे और फुसफुसाकर बोले, "वे लोग झगड़ा कर रहे हैं।"

"कौन लोग?"

"सुवर्णमूल कहां है?" चन्द्रगन्धा ने बीच में ही रोका।

"मेरे आगे सुवर्णमूल का नाम मत लो! बदमिजाज़ कहीं का! मैं हमेशा कहता रहा हूं कि एक दिन वह जरूर भारी मुसीबत में पड़ेगा। अभी [illegible] ...क तोले जा रहे थे तो कामरेड वोंग ने कहा कि उसका हिस्सा [illegible] है। बस वह चीखने-चिल्लाने लगा। औरों का वजन

भी कम था—उन सबने भी उसका साथ दिया। और अब वे जब इस बात पर खूब झगड़ा कर रहे हैं। किस्मत से मैं तो तेजी से भाग आया, हालांकि मेरा बांस और टोकरियां वहीं रह गई।

चन्द्रगन्धा बड़ी उद्विग्न हुई। बोली, "बड़े मौसा, क्या तुमने पप्पू को देखा है।"

बड़े मौसा का जैसे खून जम गया और फिर एकाएक उसकी ओर उंगली से इशारा कर बोले, "ए, जल्दी करो! जाओ उसे लेकर आओ। अपने बाप के पीछे-पीछे मंदिर तक गई थी।"

इसके बाद वह गुस्से से बड़बड़ाने लगा कि लो, अब पहले इसके जाने के लिए दरवाजा खोलना पड़ेगा और फिर लौटने पर भीतर आने के लिए।

चन्द्रगन्धा जितना तेज भाग सकती थी, मंदिर की ओर भागी। उसे लगा जैसे उसका हृदय बिल्कुल हल्का और खाली हो, मानों हवा में कोई खाली चीज लटक रही हो। दूर से ही उसे गुलाबी दीवारें दिखाई दे रही थीं और चिल्लाने का धुंधला-सा शोर सुनाई दे रहा था। वह सीधा मंदिर के दरवाजे के भीतर चली गई। विशाल आंगन में, जो बिल्कुल खाली था, उजली धूप चमक रही थी। चिड़ियां सायबान के नीचे चहचहा रही थीं। किन्तु एकाएक एक फौजी आदमी पूर्व की तरफ के कमरों से एक हाथ में एक पुराना भाला लिए बांह आगे की तरफ फैलाए बाहर निकला। भाले के फलक के नीचे लाल बालों का एक गुच्छा हवा में हिल रहा था। ऐसा प्रतीत होता था, मानों स्वप्न की भांति एक हास्यास्पद दृश्य रंगमंच से उतार कर दोपहरिया की इस धूप में ढकेल दिया गया हो। चन्द्रगन्धा वहीं खड़ी की खड़ी रह गई और वह आदमी उसके पास से तेजी से भागता हुआ दरवाजे से बाहर गायब हो गया।

वह पत्थर की सीढ़ियों से ऊपर चढ़ी और ऊंची छत वाले मुख्य भवन के अन्धेरे में झांकने लगी। वहां कोई दिखाई नहीं पड़ा। वह मुड़ी और मंदिर से बाहर भागी। इस बार वह पहचान गई कि भीड़ का क्रुद्ध शोर शेन ता लकड़ी कम्पनी की तरफ से आ रहा है जिसे सरकार ने अपने कब्जे में ले लिया था और जो अब सरकारी गोदाम का काम देती थी। वह "पप्पू! पप्पू ?" चिल्लाती उधर भागी।

लकड़ी कम्पनी की इमारत नीची थी और किसी समय सफेद दीवार पर आठ या नौ फुट की ऊंचाई पर ही बड़े-बड़े काले अक्षरों में उसका नाम लिखा था। सरकार का कब्जा होने के बाद अक्षर मिटा दिये गये, सिर्फ बड़े-बड़े मैले निशान रह गये। एक भारी भीड़ दरवाज़े के पास खड़ी और दूर से सघनता के कारण काली-सी मालूम पड़ती थी।

"पप्पू घर चलो! घर चलो, पप्पू के पिता!" उसने चिल्लाकर कहा।

मिलीशिया के दो आदमियों ने भी लाल बालों के गुच्छों वाले भाले भीड़ के अगले भाग की ओर घुमाते हुए चिल्ला कर कहा, "घर जाओ! अब सब लोग घर जाओ!"

"हम नववर्ष के लिए कुछ चावल उधार लेना चाहते हैं!" किसी ने चिल्लाकर कहा।

"फसल भी अच्छी हुई है और फिर भी हम नववर्ष का दिन खाली पेट बिताएं!"

"चावल उधार लेना कानूनके खिलाफ नहीं है!"

"उधार लेना! उधार क्यों? यह हमारा अपना अनाज है!"

आवाजों के इस तेज उतार-चढ़ाव में वह यह नहीं पहचान सकी कि उसके पति की आवाज कौन-सी है। एक विचित्र उत्तेजना उस पर छा गई

जिसमें उसकी सारी चिन्ता एक तरह से डूब गई और उसे "घर चलो, पप्पू के पिता" कहने में शर्म आने लगी।

"साथियों" कामरेड वोंग की आवाज इस शोर के ऊपर गूंज उठी, "तुम्हें जो कुछ कहना है उस पर हम बातचीत कर सकते हैं। तुम्हारी जो समस्याएं हैं, उन्हें हम इकट्ठे बैठकर निबटा सकते हैं। पहले हरेक आदमी घर चला जाय और मैं यकीन दिलाता हूं......।" उसके बाकी शब्द बंहगी के बांसों के दरवाजे पर ठकठकाने से उठी आवाज में खो गये।

एक बच्चा डर से चिल्ला पड़ा और चन्द्रगन्धा "पप्पू !" चिल्लाती भीड़ के बीच में घुस गई।

"अम्मां ! अम्मां !" पप्पू चिल्लाई।

मलीशिया के आदमियों ने अपने भाले और डंडे भीड़ में घुसेड़ने शुरु किये और कहीं कोई आदमी दर्द के साथ गाली देता हुआ चिल्लाया, "उसकी मां मरे ! कोई न कोई मर कर रहेगा !" मानों उसे इस कल्पना पर स्वयं आश्चर्य हो उठा हो।

बहंगियों के बांस दरवाजे पर खटखटाते रहे। वह तड़तड़ाया और उसके बाद एक झटके के साथ खुल गया।

"साथियो ! सब शान्त रहो। यह जनता की सम्पत्ति है। जनता की सम्पत्ति को हाथ नहीं लगाया जा सकता।" वोंग कर्कश आवाज में चिल्लाया "हम सबको जनता की सम्पत्ति की रक्षा करनी चाहिए !"

एक बांस उसके सिर के पिछले भाग पर पड़ा। तभी मिलीशिया के तीन आदमियों ने, जो राइफलें लिये हुए थे, अपनी बन्दूकें भीड़ पर तान दीं। तान बन्दूकों में से एक ने एक बन्दूक पकड़ने की कोशिश की और मिलीशिया के आदमी ने उसके पेट में गोली मार दी। मिलीशिया के दूसरे आदमियों ने भी गोलियां चलाई और सारी भीड़ में सन्नाटा छा गया। इस

के बाद मिलीशिया के आदमी अपनी बन्दूकें फिर भरने के लिए उन्हें खोलते हुए पीछे हटे और भीड़ गुर्रा कर उनकी तरफ बढ़ी।

"छत पर चढ़ जाओ, बेवकूफों !" वोंग ने जिसे छापामार लड़ाई का कुछ अनुभव था, चिल्लाया, "छत पर से गोलियां चलाओ।"

"अम्मां ! अम्मां" पप्पू लगातार चिल्लाती रही और उसकी रुदनध्वनि में जरा भी फर्क नहीं आया।

"पप्पू ! पप्पू ! वह बहुत दूर नहीं थी किन्तु चन्द्रगन्धा भीड़ में बुरी तरह फंसकर उसकी ओर एक कदम भी नहीं बढ़ सकी। दुःस्वप्न के से उस एक क्षण में ऐसा लगता था, मानों वे दोनों अनादि काल से एक दूसरे को पुकार रहे है।

कामरेड वोंग ने अपने भयभीत अर्दली से छोटे चांग की बन्दूक छीन ली और बन्दूक को अपनी जाँघ पर रख कर टूटे हुए दरवाजे से भीतर घुसती भीड़ पर बिना कुछ देखे गोली चला दी। उसने बन्दूक भरी और फिर चलाई। उसके गोली चलने से भीड़ छटने पर जो रास्ता बन गया था, निराश होकर वह उसमें घुस पड़ा। लोगों ने हाथ बढ़ा कर उसके कपड़े पकड़ लिए किन्तु राइफल को आगे पीछे घुमा कर उसने उन्हें छुड़ा लिया। उसका शरीर बुरी तरह छिल गया था। मुंह पर खून के धब्बे थे और वह भय से दुगुना पीला हो गया था, उसके कपड़े फट गये थे और टोपी भी खो गई थी। ऐसी हालत में ही वह मंदिर के पश्चिमी भाग में अपने कमरे की ओर भागा। कू उसके कमरे में था। जिस समय दंगा शुरु हुआ वह "यशस्वी परिवार" के बारे में एक पोस्टर तैयार कर रहा था। अब वह मेज के पीछे खड़ा था, मानों जाल में फंस गया हो।

"उन्हें बन्दूकें कहां से मिलीं ?" उसने कांपते हुए पूछा।

वोंग ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह अपनी राइफल अपने घुटनों पर रखे

और अपनी ठोड़ी अपनी वर्दी की चिकनी छाती पर टिका कर कुर्सी पर बैठ गया।

"तुम्हें चोट लगी है, कामरेड ?" कू ने कुछ विलम्बित चिन्ता के साथ कहा।

"मैं ठीक हूं," वोंग ने उदासी के साथ उत्तर दिया।

"उनके पास बन्दूक हैं" कू ने फुसफुसा कर कहा।

"वे तो हमारे मिलीशिया के आदमियों ने चलाई थी, जो गोदाम की रक्षा कर रहे थे, वोंग ने चिढ़कर कहा।

"ओह" कू ने कुछ हड़बड़ाकर कहा।

दूर का वह शोर अब विलीन हो गया था किन्तु उन्हें इधर-उधर रह-रह कर गोलियां चलने की आवाज अब भी सुनाई पड़ रही थी। वोंग ने अपने कमरबन्द के पीछे से गोलियां निकाल कर अपने मुंह और गर्दन से पसीना पोंछा।

"हम असफल हो गये" वोंग ने भारीपन के साथ कहा और फिर इस ढंग से, मानों पहली ही बार कर रहा हो, बोला "हम असफल रहे, हमें अपने आदमियों पर गोलियां चलानी पड़ीं।"

कू ने उस पर से नजर दूर रखने की चेष्टा की। इस उत्तेजना की हालत में वोंग ने शायद यह महसूस नहीं किया कि इस दुर्बलता और अविश्वास के क्षण में उसका असफलता स्वीकार कर लेना एक तरह से पार्टी के साथ विश्वास घात है और पार्टी के सदस्यों की छटनी के समय उसके विरुद्ध अभियोग के तौर पर इसे पेश किया जा सकता है। किन्तु देर-सबेर एक दिन उसे यह ख्याल आ गया। अब उस समय पर उसके लिए स्वाभाविक ही होगा कि वह अपने इस जुर्म के एकमात्र साक्षी को कहीं ठिकाने लगा देना चाहे। उसका

दर्जा चाहे कितना भी छोटा हो इस गांव के भीतर उसकी सत्ता अखंड थी। और इस गोली कांड में उसकी इस सत्ता से अधिक क्षति और किसे पहुंचती थी ?

वोंग एकाएक उठ खड़ा हुआ और ज्यों ही उसकी गोद में पड़ी राइफल खन्न से नीचे गिरी कू उछल पड़ा ।

"इसके पीछे जरूर जासूसों का हाथ है वोंग ने कहा। उसने अपना उत्तेजित और जोश से भरा चेहरा और शून्य आंखें कू की तरफ फेरी और बोला, "जासूस जरूर होंगे। नहीं तो लोग इस तरह बगावत नहीं कर सकते । हम इसकी तहतक जाना ही होगा।"

अध्याय १४

जिले के दफ्तर में सूचना देने के लिए जाते हुए मिलीशिया के आदमी रास्ते में चोऊ गांव के कान पू को एक संदेश देने के लिए वहां रुके । इसके बाद कान पू ने सारे गांव का चक्कर लगाया और लोगों से कहा कि वे सतर्क रहें और ज्यों ही आस पास किसी सन्दिग्ध बदमाश को पायें, फौरन उसकी सूचना दें। उसने कहा कुछ क्रान्ति विरोधी लोग छूट कर निकल भागे हैं और संभव है, वे इस तरफ आये हों।

उसने इतना ही कहा किन्तु जल्दी ही लोगों को यह बात मालूम हो गई कि तान गांव में एक उपद्रव हो गया है। स्वर्णपुष्प इस समाचार से बहुत चिन्तित हुई। वह सोचने लगा कि आखिर हुआ क्या होगा और कहीं उसके भी किसी रिश्तेदार पर तो उसका असर नहीं पड़ा ।

सांझ के झुटपुटे में वह पानी लाने गई। कन्धे पर बंहगी रखे वह अन्य मनस्क भाव से नदी की ओर जाने वाली सीढ़ियां उतारने लगी, फिर भी उसकी आंखें नदी के उस किनारे की ओर लगी हुई थीं जहां उसका अपना गांव था। कन्धे को जरा-सा हिलाकर उसने एक बाल्टी धारा में डाल दी और फिर उसके भर जाने पर अपना बदन सिकोड़ कर उसे ऊपर उठा लिया। क्रमशः अन्धकारमय होता आकाश और भी अन्धेरी पहाड़ी और कुंजों

पर आहिस्ता-आहिस्ता उतर रहा था। सिर्फ पानी सफ़ेद चमक रहा था, मानों चमकीले सलेटी रंग की एक चौड़ी सट्टी हो।

एक कंकड़ी उसकी पीठ पर लगी।

"शैतान कहीं के !" उसने बिना मुड़े ही गुनगुना कर कहा। गांव में अभी तक लोग उसे दुलहिन ही कहते थे और बच्चे अकसर चिढ़ाते हुए उसका पीछा किया करते थे।

एक और कंकड़ उसके कन्धे पर से होकर छपाक से नदी में गिरा। दूसरा बाल्टी भर जाने पर उसने बांस कन्धे से उतार दिया और हाथ पीछे की ओर किये वह शरारत करने वाले को देखने के लिए घूमी किन्तु कोई नजर नहीं आया।

"बहन ! बहन ! स्वर्णपुष्प !" किसी की मृदुल आवाज आई।

उसने अपनी गर्दन हिलाई। पल भर में ही वह बांस की सहायता से ऊपर चढ़कर आ गई। बांस के कुंज में वह अपनी भाभी के सामने जा खड़ी हुई, जो अपनी रूईदार पतलून के ऊपर सिर्फ एक सफ़ेद कमीज पहने बिखरे और चेहरे पर लटके हुए बालों से एक भूत-सी लग रही थी।

"क्या बात है ?" अटकते हुए स्वर्णपुष्प ने कहा।

चन्द्रगन्धा ने जब बोलना शुरू किया तो उसके दांत जाड़े से बजने लगे, जिससे वह भी अटकने लगी। इससे उसे अपने ऊपर क्रोध आया क्योंकि इससे ऐसा प्रतीत होता था कि वह बहुत डरी है।

"तुम्हारी रूईदार जाकट कहां है ?" स्वर्णपुष्प ने पूछा।

"सुवर्णमूल के पास है। खून बहने से उन्हें बेहद कमजोरी आ गई है, इसलिए मैंने वह उनके कन्धों पर उढ़ा दी है।"

"उन्हें क्या हुआ ?" स्वर्णमूल ने चिल्लाकर कहा।

"वे ठीक हैं" चन्द्रगन्धा ने सफाई-सी देते हुए कहा, "उन लोगों ने गोलियां चलानी शुरू कर दी थीं जिससे उनकी टांग में चोट लगी। भगवान ने बचा लिया, नहीं तो और भी बुरा हो सकता था।"

"अब वह कहां हैं ?"

"वहां ऊपर पहाड़ी पर।"

"मुझे उनके पास देखने ले चलो।"

चन्द्रगन्धा हिचकिचाई। "तुम अपनी बाल्टियां यहां छोड़कर नहीं जा सकतीं। अगर कोई आकर उन्हें वहां पड़ी देख ले, तो ?"

"किन्तु उन्होंने उन पर गोली चलाई क्यों ?" उसने फिर पूछा।

"गोदाम में कुछ गड़बड़ी हो गई थी। लोग नववर्ष के लिए चावल उधार लेना चाहते थे। इस पर उन्होंने गोलियां चलानी शुरू कर दीं।" इसके बाद उसने जल्दी से और बड़े हल्केपन से, स्वर्णपुष्प की ओर उजले चेहरे से देखते हुए कहा, "पप्पू अब नहीं रही। वह भीड़ में कुचल कर मर गई।"

"क्या ?" स्वर्णपुष्प ने अविश्वास के-से स्वर कहा।

"हमें भी इस पर विश्वास नहीं हुआ था। हम उसे अपने साथ उठा कर पहाड़ी पर ले गये। किन्तु वह मर चुकी थी।"

उसने उसे बताया कि किस प्रकार गोली चली और किस प्रकार भगदड़ मचाती भीड़ के साथ जूझ कर अपने आप को मुक्त करते ही वह पप्पू की तलाश में गोदाम की तरफ भागी। जब वह सामने से आती भीड़ से टक्कर ले रही थी, बार-बार लड़खड़ा रही थी, तभी किसी ने उसकी कलाई पकड़ ली और घसीटता हुआ तेजी से भगा ले चला। वह सुवर्णमूल था जिसने कन्धे पर पप्पू को डाला हुआ था। जब वे बन्दूकों की आवाज और तीखे शब्द के साथ पास से गुजरती गोलियों के बीच से तेजी से चल रहे थे, उसे अपने शरीर का जो नंगा था और किसी भी समय प्रहार का शिकार हो सकता

था, जैसा भान हुआ वैसा इससे पहले कभी नहीं हुआ था। किन्तु उसने अनुभव किया कि जब वे खेल में बच्चों की भांति एक दूसरे का हाथ पकड़े दौड़ रहे हैं, तो वस्तुतः ही कोई गम्भीर बात नहीं होगी।

जब वह एकदम सामने की ओर औंधा होकर गिरा तो पहले-पहल उसने समझा कि शायद वह गोली से बचने के लिए लेटा है। किन्तु जब उसे मालूम हुआ कि वह घायल हो गया है तो उसने पप्पू की छोटी-सी लाश उससे ले ली और उसे अपने कन्धे पर डालकर उसे सहायता देने लगी। "अब हम घर के करीब ही पहुंच गये हैं," उसने हिम्मत बंधाते हुए कहा।

"नहीं, हम घर नहीं जायंगे," उसने कहा, "हम घर नहीं जा सकते। हम कहीं और चले जायंगे और कुछ दिन छिपे रहेंगे, और उस समय तक इन्तजार करेंगे जब तक कि मामला ठंडा नहीं पड़ जाता।"

उसने अपनी मां के यहां जाने का विचार किया किन्तु वह बहुत दूर है, वह वहां तक चल नहीं सकेगा। इसलिए उन्होंने चोऊ गांव जाने का फैसला किया। उन्होंने पहाड़ी की तरफ से एक छोटा रास्ता चुना, क्योंकि उधर लोगों का नजर पड़ने का कम भय था।

यह एक ऐसा ठण्डा और धूप रहित तीसरे पहर का समय था जब कि पहाड़ी के वृक्ष जमीन पर अपनी लम्बी सफेद पांवों की उंगलियां चौड़ी किये इस तरह सीधे खड़े होते हैं, मानों वहां की उदासी से विरक्त होकर एकदम सीधे गांव के भीतर घुस जायंगे। पहाड़ सीढ़ियों की भांति क्रमशः ऊपर उठता चला गया था, मानों उनके उपयोग के लिए ही यह सीढ़ियां बनाई गई थीं। चन्द्रगन्धा उन सीढ़ियों पर, जो आदमी के लिहाज से बहुत ऊंची थी, सुवर्णमूल को खींचती हुई मेहनत से ऊपर चढ़ रही थी। उसे बहुत पहले ही पता लग गया था कि उसकी बांहों में यह जो ढुलमुल कुचली हुई बच्ची है, वह मर चुकी है अन्त में सिर्फ थकावट ने उसे छोड़ देने के लिए उसे मजबूर किया और इसके लिए शोक करने का समय नहीं था। उन्होंने

लाश को एक पेड़ के तले छिपा दिया इस आशा से कि जब तक वे दूर नहीं पहुंच जाते, किसी को उसका पता नहीं लगेगा।

सफर की समाप्ति पर, जब उन्हें पुल पार करना पड़ा, तब पहली बार उसे सचमुच भय मालूम हुआ। गोधूलि वेला समीप ही थी। संकरा पैदल रास्ते का पुल नदी के रूपहले सफेद रंग पर काले दीख पड़ने वाले लकड़ी के खम्भों पर खड़ा था। जाड़ों में पानी उतर जाता है तो लचीले खम्भे पानी से तीस फुट ऊंचे नजर आते हैं। जिस किसी तरह उसने सुवर्णमूल के लड़खड़ाते बोझ को, जिसके बारे में यह नहीं जाना जा सकता था कि वह कब किधर झुक जाय, पुल के तख्तों को, जो पांवों के नीचे झुलते थे दो कतारों पर चौड़ाई में एक ओर से दूसरी ओर तक फैला दिया। खाली हवा की अपरिसीम कोमलता में गद्दे की भांति झूलना बड़ा डरावना लगता था। और नीचे पानी का चौड़ा पाट सफेद और दूर हटा हुआ था और उनसे काफी परे बह रहा था।

उसे अब इस बात की खुशी थी कि दिन भर में जितनी भी विचित्र घटनाएं घटी थीं, उन्हें वह किसी को सुना तो पा रही है। किन्तु जब वह अपनी कहानी सुना चुकी तो उसने देखा कि यद्यपि सुवर्णमूल ने फर्ज़ समझकर अपने चेहरे पर भय और क्रोध का भाव धारण कर लिया है, फिर भी वास्तव में वह सारी बात समझ नहीं सकी है। उन दोनों के बीच में वास्तविक अनुभूति दीवार बन कर खड़ी है। वे दोनों क्रमशः बढ़ते हुए अन्धकार में गूंगों की तरह एक दूसरे को देख रही थीं और सायं-सायं करते बांसों का बर्फ की तरह ठंडा सांस उनकी गर्दनों के पास से बह रहा था।

"तो वे लोग तुम्हारे पीछे पड़े हैं," एकाएक कुछ अनुभव कर स्वर्णपुष्प ने कहा। उसकी आवाज धीमी होकर एकदम कानाफूसी में बदल गई।

"वे लोग कहते थे क्रांति-विरोधी।"

"क्रांति-विरोधी !" चन्द्रगन्धा ने आश्चर्य से कहा, "हम क्रान्ति विरोधी कैसे हो सकते हैं ?" किन्तु विरोध प्रकट करने पर भी वह "क्रान्ति विरोधी शब्द के अर्थ के बारे में कोई निश्चय नहीं कर सकी, सर्वप्रथम तो वह शब्द ही उसके सामने स्पष्ट नहीं हुआ।

"हमें यहां से दूर चले जाना पड़ेगा। हम शंघाई चले जायंगे। शंघाई में हम छिप सकते हैं," उसने मानों अन्तिम फैसला करते हुए कहा, "किन्तु अभी नहीं—अभी तो वह चल भी नहीं सकते कुछ दिन के लिए उन्हें तुम्हारे घर में रहना पड़ेगा।"

स्वर्णमूल के आगे के दांत अंधकार में उसके खुले होठों में चमकने लगे। कोशिश करके उसने थूक निगलने के लिए अपना मुंह बन्द किया। "पर हम उन्हें छिपा कहां सकते हैं ? मेरी जेठानियां और उनके बच्चे सारे घर में फिरते रहते हैं।

"उन्हें अपने कमरे से दूर रखने का कोई न कोई उपाय तुम्हें करना ही होगा।"

"बच्चों को रोकना मुशकिल नहीं। वे हर वक्त भीतर-बाहर आते-जाते रहते हैं।"

चन्द्रगन्धा चुप हो गई, किन्तु ज्यादा देर के लिए नहीं। "मैं जानती हूं," उसने कहा, "तुम कह सकती हो कि तुम्हारा गर्भपात हो गया है, तब वे तुम्हारे कमरे को अपवित्र समझकर महीनों तक उसके पास नहीं फटकेंगे। और यह भरोसा रखो, वे अपने बच्चों को भी उससे दूर रखेंगे।"

"किन्तु उन्हें मालूम है कि मैं गर्भवती नहीं हूं।"

"तुम ऐसा दिखाना कि तुमने शर्म के मारे ही किसी को यह बात नहीं बताई," चन्द्रगन्धा ने कहा।

स्वर्णपुष्प ने समझ लिया कि यह योजना अमल में लाई जा सकती है। दूसरा कोई उपाय प्रतीत ही नहीं होता था। यह भयंकर घटना, जो घट चुकी है, उसके रोजमर्रा के संसार में भी प्रवेश कर रही है। इस संसार में उसके कुछ कर्त्तव्य हैं। वह पत्नी और पुत्रवधु के रूप में अपनी नई स्थिति को बड़ी गंभीरता से लेती थी। जो कुछ भी वह करती उसमें उसे सावधान रहना पड़ता था, नहीं तो वह अपने चिर-जागरूक शत्रुओं अर्थात् अपनी जेठानियों के सामने सिर नहीं उठा सकती थी। वह बचपन को बहुत पीछे छोड़ आई है। और उसी तरह उसके भाई का भी बचपन बहुत पीछे रह गया है जैसा कि उसके उस दिन के व्यवहार से स्पष्ट था, जब कि वह उसके यहां पैसा उधार मांगने गई थी। वह उसके प्रति अपने बचपन के लगाव से बहुत बढ़ चुका था।

एक लम्बे हरे बांस की बांह पर चिन्तातुर होकर ऊपर-नीचे हाथ फेरते हुए उसका मन बहुत-सी बातों में भटक रहा था। उसे सिर्फ उस बांस की ठंडी और चिकनी लम्बाई तथा उसकी गांठें ही अनुभव हो रही थीं, जो बांस की उस बांह पर बाजूबन्द की भांति थीं।

"बहन स्वर्णपुष्प," चन्द्रगन्धा ने गर्मी से उसका हाथ पकड़ते हुए कहा, "मैं जानती हूं यह तुम्हारे लिए बहुत मुश्किल है, किन्तु अगर तुम्हारा भाई सारी रात बाहर पड़ा रहा तो उसकी मृत्यु हो जायगी। वह मर जायगा।"

"किन्तु क्या तुम यह नही समझती कि उनके लिए गांव में आना खतरनाक है," स्वर्णपुष्प ने कुछ नाराजगी के साथ कहा, "वहां जरूर उन पर नजर रखने वाले निकल आयेंगे।"

"अब अन्धेरा हो गया है। वह तुम्हारा सहारा लेते हुए, तुम पर झुक कर चलेंगे और तुम यह बहाना कर सकती हो कि यह तुम्हारा पति है जो शराब में धुत्त होकर घर आ रहा है।"

स्वर्णपुष्प अपने पति का नाम सुनकर जरा सख्त पड़ गई "यह कहने से कोई लाभ नहीं होगा कि यह मेरे पति हैं," उसने कठोर आवाज में कहा, "वह सारे दिन घर पर ही रहे हैं। हर कोई यह बात जानता है।"

"तो फिर उन्हीं को भेजो कि वह तुम्हारे भाई को ले जायं। हां, यह बेहतर है कि तुम्हारे बजाय वही आयें। कुत्ते उन्हें अच्छी तरह पहचानते हैं, इसलिए वे उतना नहीं भोकेंगे। उनसे एक रजाई लाने को भी कह देना। वह तुम्हारे भाई को सिर से पांव तक ढक दें और कहें कि यह तुम हो और वह तुम्हें अभी-अभी नदी से निकाल कर लाये हैं। वह कहें कि तुम नदी में कूद पड़ी थी, क्योंकि तुमने यह सुना था कि तुम्हारा सारा परिवार दंगे में मारा गया है।"

स्वर्णपुष्प सिर्फ उदास आंखों से उसकी ओर देखती रही. कुछ बोली नहीं।

"हां, यह ज्यादा अच्छा है," चन्द्रगन्वा ने कुछ देर सोच कर कहा, "कोई भी रजाई को छेड़े-छाड़ेगा नहीं, जब उसे पता लगेगा कि इसके भीतर कोई स्त्री लिपटी हुई है। नहीं तो लोग उसके भीतर देखना चाहेंगे।"

कुछ देर तक खामोशी रही। उसके बाद स्वर्णपुष्प ने कहा, "नहीं, इससे काम नहीं चलेगा। वे जरूर अपनी मां से कह देंगे।"

"नहीं, तुम उन्हें हर किसी को यह बात मत बताने देना।"

"मैं उन्हें नहीं रोक सकती। वह डर जायंगे। यदि वह पकड़े गये तो लोग उन्हें भी क्रान्ति द्रोही समझेंगे," उसने कातर होकर कहा।

चन्द्रगन्वा ने उसे एक हल्का-सा धक्का देते हुए कानाफूंसी के स्वर में कहा, "तुम उनसे बात तो करो, पगली लड़की। उनसे समझदारी से प्रेम के साथ बात करो। अभी तुम्हारी शादी हुए दो ही तो महीने हुए हैं, अभी तुम उनसे चाहे जो काम करा सकती हो।"

"जी हां, पागल लड़की नहीं तो और क्या ?" स्वर्णपुष्प ने चिढ़कर मन ही मन कहा। उसकी भाभी सचमुच ही उसे इतना मूर्ख समझती है कि वह अपने पति से ऐसा करायेगी, यानी उसे लुभाकर मौत की ओर ले जायगी। क्या चन्द्रगन्धा ने सोचा है कि वह उससे क्या करने को कह रही है ? शायद वह नहीं जानती कि पति के प्रति प्यार किसे कहते हैं। चन्द्रगन्धा हमेशा ही कठोर और रुपये-पैसे से सब चीजों का मूल्य आंकने वाली रही है।

उसका भाई स्वयं उससे इस तरह का काम करने को कभी न कहता। वह उसकी स्थिति को समझता। उसका उसके प्रति कितना अच्छा और सदव्यवहार रहा है, इसकी स्मृति ने एकाएक उसे आक्रान्त कर लिया। और उसे याद आया कि इन सब वर्षों में वे दोनों परस्पर एक दूसरे के लिए क्या थे। वह फिर एक बार अकेला पन अनुभव करने लगी, ऐसा अकेलापन जिसमें वे दोनों एक-दूसरे के सिवाय किसी और का आश्रय नहीं ले सकते।

इसके सिवाय उपाय ही क्या है—उसके लिए जो कुछ बन पड़े वह उसे करना ही पड़ेगा। उसने झटके के साथ अपना हाथ चन्द्रगन्धा से छुड़ा लिया और यह कहती हुई घूमी, "तुम यहीं इन्तजार करो।"

चन्द्रगन्धा एक कदम उसके पीछे-पीछे आई और फिर रुक गई। "बहन स्वर्णपुष्प" उसने घबराए स्वर में कहा।

स्वर्णपुष्प यह ख्याल करके कि चन्द्रगन्धा शायद यह सोच रही है कि मैं भाग रही हूं, शर्म से लाल हो गई। "चिन्ता मत करो," उसने बिना मुड़े ही कहा, "मुझे लौटने में ज्यादा देर नहीं होगी।"

"बहनोई जी से रजाई लाने के लिए कहने की बात याद रखना," चन्द्रगन्धा ने कहा, "लो, तुम अपनी बहंगी का बांस तो भूल ही गई।" वह उसे बांस पकड़ने के लिए ढाल से नीचे झुकती हुई तेजी से उसके पीछे गई।

"मुझे सिर्फ भाई के लिए डर लग रहा है," स्वर्णपुष्प ने उसकी ओर देखे बिना धीमी आवाज में कहा।

उसके चले जाने पर चन्द्रगन्धा कुछ ऊपर चली गई जहां झाड़ियां अधिक घनी थीं। उसे स्वर्णपुष्प पर पूरा भरोसा नही था। "अब उसे पता लगगा—जिसे अपनी बहन का इतना चाव था," वह बड़े तीखेपन से सोचने लगी, "अब उसे मालूम होगा कि यह पुरानी कहावत ही सही है कि 'दूसरे घर ब्याही लड़की और जमीन पर बिखरा पानी एक ही बराबर हैं'—वह अब नहीं लौटने की। वह रोते-रोते घर आ सकती है और अपने ससुराल वालों की शिकायत कर सकती हैं। किन्तु इस तरह के मौकों पर वह पहले अपने पति के परिवार का ही ख्याल करती है।"

फिर वह सोचने लगी कि क्या यह संभव है कि वे स्वयं ही कुत्तों के भौंकने का खतरा उठायें और अपने आप छिपकर गांव में चले जायं। एक बार सुवर्णमूल चोऊ लोगों के घर में घुस जाय, फिर वे उन्हें अधिक अच्छी तरह से काबू में कर सकेंगे। चोऊ लोग यह समझ लेंगे कि सुवर्णमूल के उन के यहां आ जाने से ही एक तरह से इस मामले में वे फंस तो गये ही हैं, इसलिए उन्हें भय के कारण ही इस रहस्य को छिपाये रखने में सहायता देनी पड़ेगी।

बर्फ की भांति ठंडी हवा में वह बिल्कुल सिकुड़ कर खड़ी हो गई। जबान की तरह के असंख्य बांस के पत्ते ऐसा शुष्क, डरावना सायं-सायं का शब्द कर रहे थे जो संसार में सबसे अधिक सर्द शब्द हैं। इस भयंकर जाड़े में एक जगह खड़े रहना बड़ा कठिन था, किन्तु उसे अपने बदन में गर्मी लाने के लिए इधर-उधर घूमने या पांव पटकने में भी डर लगता था।

गांव में प्रकाश के बिन्दुओं की भांति जगह-जगह रोशनी थी। और दूसरी ओर शाम के झुटपुटे में विशाल काला मैदान फैला हुआ था। उसकी

तिवन्धता एक ऐसे हल्के और दबे हुए मर्मर शब्द से भरी हुई था, मानों कोई आदमी जाड़े के कारण सो न पा रहा हो और अपनी रजाई के अन्दर नाक सुर-सुर कर रहा हो और करवटें ले रहा हो ।

पयली वार चन्द्रगन्धा इस गांव में उस समय आई थी जवकि स्वर्णपुष्प और इस चोऊ लड़के की सगाई की वातचात चल रही थी । चोऊ लोगो ने देवताओं के वार्षिक पूजन के मेले में स्वर्णपुष्प को भीड़ में अच्छी तरह देख लिया था । किन्तु तान लोगों ने लड़के को कभी नहीं देखा था और यह तय किया गया था कि वे एक दिन ऐसे समय जव कि लड़का खेत पर काम कर रहा हो चोऊ गांव आयें । वे स्वर्णपुष्प को भी अपने साथ ले गये और उसे लड़के को अच्छी तरह देख लेने के लिए कहा, किन्तु जव वे धान के खेत के पास से गुजरने लगे तो स्वर्णपुष्प ने लापरवाही से उस तरफ से सिर फेर लिया । और फिर भी वाद में जव किसी ने कहा कि लड़का देखने में वहुत अच्छा है तो उसने घृणा के साथ कहा कि वालियां पहने हुए वह जनाना-सा लगता है ।" उनके परिवार में हमेशा इस वात को ले कर मजाक चलता रहा कि वह उसकी ओर नजर उठाये विना उसे देख कैसे सकी । जव वह वच्चा था तभी उसके माता-पिता ने उसके कान विंधवा दिये थे और उसे चांदी की वालियां पहना दी थीं ताकि वह लड़की-सा लगे और ईर्ष्यालु देवताओं को धोखा दे सके ।

उस दिन वे चोऊ गांव में यह वहाना करके आये थे कि वे मेले में अपना मेमना और मुर्गियां वेचने के लिए शहर जा रहे हैं । वजन वढ़ाने के लिए मेमने को रवाना होने से पूर्व ही उन्होंने खूव खिला-पिला दिया था । उसका पेट इतना फूल गया था कि सहसा विश्वास भी कठिन था । वह पत्थर के गोले की तरह सख्त था और नीचे की ओर लटक रहा था और हर कदम के साथ झूले की तरह लचने लगता था । किन्तु इससे भी उसके उछल-उछल कर उनसे आगे चलने में कोई फर्क नहीं पड़ा । मुर्गियां और वत्तखें एक

टोकरी में थीं जिसे एक बांस से बांधकर सुवर्णमूल ने कन्धे पर लटकाया हुआ था। बांस के दूसरे सिरे पर एक टोकरी में पप्पू थी, जो उस समय इतनी छोटी बच्ची थी कि उसे अकेली घर पर नहीं छोड़ा जा सकता था। आगे झुककर और टोकरी के सिरों पर हाथ टिका कर वह अपनी उज्जल और निश्चल आंखों से दुनियां को देख रही थी।

वह दिन याद कर चन्द्रगन्धा सिसकने लगी और कोशिश करने लगी कि उसके मुंह से रूदन की आवाज न निकले। रूलाई का आवेग अन्त में खत्म हो गया। रात के कोलाहल और गांव की क्रमशः बुझती रोशनियों से वह यह समझ सकती थी कि अब देरी होती जा रही है। स्वर्णपुष्प के बारे में उस की व्याकुलता अब भय में परिणत होती जा रही थी।

अब एक तरह से घोर अन्धकार हो गया था। चौंक कर उसने नीचे देखा जहां पानी की चमक के आगे उसे एक चलती हुई मानव-मूर्त्ति दीख पड़ी। सिर के पीछे बालों का छोटा जूड़ा देखकर क्षण भर बाद ही वह समझ गई कि यह कोई बड़ी उम्र की स्त्री है। यह देख कर उसका हृदय बैठने लगा कि स्वर्णपुष्प की सास बिना लालटेन लिए उसकी ओर चली आ रही है।

स्वर्णपुष्प ने अवश्य ही गलती से या जान-बूझ कर यह रहस्य प्रकट कर मेरी दिया होगा, उसने सोचा।

"निकम्मी गुलाम लड़की !" उसने मन ही मन गाली दी; "सड़ी हुई, गुलाम छोकर !"

उसे यह निश्चित करने में कुछ समय लगा कि क्या अपने आपको प्रकट कर देना उसके लिए अक्लमंदी होगी।

नीचे अन्धियारे में खड़खड़ाहट "सुवर्ण की बहू," स्त्री ने फुसफुसा कर पुकारा, "सुवर्णमूल की बहू।"

"मौसी, हमारी रक्षा करो," चन्द्रगन्धा ने उसकी बगल में आकर धीमे से उत्तर दिया।

आओ, सुवर्णमूल की बहू," स्त्री ने अंधेरे में उसके हाथ टटोलते हुए प्रेम से कहा, "यह अच्छा हुआ कि मुझे वक्त पर इसकी खबर मिल गई ! तुम जानती हो स्वर्णपुष्प बिलकुल बच्ची है। और मेरा वह लड़का सचमुच दोनों ही बच्चे हैं। यदि तुम उन पर सहायता के लिए निर्भर करती तो बहुत मुसीबत होती।"

चन्द्रगन्धा ने समझ लिया कि उसे इस बात के लिए उलाहना दिया जा रहा है कि उसने उनके यहां आश्रय लेने का साहस किया। "हम लाचार थे, मौसी," उसने गिड़गिड़ा कर कहा, "हमारा और है कौन जिसके पास जायं ? मुझे हमेशा से यही विश्वास रहा है कि आप का हृदय बड़ा दयार्द्र है।"

"यह खुश किस्मती की बात है कि मुझे वक्त पर ही पता लग गया," स्त्री ने फिर कहा, "नहीं तो तुम्हारा सब काम तमाम हो गया होता। हमारी जगह इतनी छोटी है और वहां इतनी भीड़भाड़ है और परिवार में इतने ज्यादा आदमी हैं। 'बोतल का मुंह बन्द किया जा सकता है, इन्सान का नहीं।"

"औरों के मत्थे दोष मत मढ़ो। तुम खुद सबसे पहले हमारे खिलाफ शिकायत करोगी," चन्द्रगन्धा ने सोचा।

"तुम जानती हो कि सामान्य अवस्था में भी यदि कोई रिश्तेदार आकर रात को हमारे यहां ठहरता है तो हमें उसकी सूचना देनी पड़ती है। और अब तुम जानती हो कि उसके चेतावनी देने के बाद यह कितना खतरनाक होगा। क्रान्ति द्रोही शब्द से किसका कलेजा नहीं कांपता ?

"किन्तु हम वह नहीं है, मौसी—हमने ऐसा कुछ भी नहीं किया है।

उसने चन्द्रगन्धा के इस विरोध की उपेक्षा कर दी। "हां, हमसे कहा गया है, यदि तुम उनका पता ठिकाना जानते हो और फिर भी नहीं बताते तो तम भी उनके साथ शामिल समझे जाओगे। तुम्हें रस्से बांधकर जिले के सदर

मुक़ाम में भेज दिया जायगा। यह तो फरार जमींदारों को आश्रय देने से भी ज्यादा खतरनाक है।

चन्द्रगन्धा ने फिर समझाने की कोशिश की किन्तु उसने सुना ही नहीं। अब जब हालत यहां तक पहुंच गई है तो तुम्हारे बचाव की एक ही सूरत है कि तुम कस्बे में चली जाओ और वहां से नौका पकड़ लो। यह भी अच्छी बात है कि तुम खूब घूमी हुई हो और शहर का रास्ता जानती हो।" उसने चन्द्रगन्धा के हाथ में एक छोटी-सी पोटली थमा दी, "लो, मैं तुम्हारे लिए खाने को कुछ लायी हूं। अब मैं चलती हूं। मैं ज्यादा देर नहीं ठहर सकती। यह मेरे और तुम्हारे दोनों के लिए खतरनाक होगा।"

चन्द्रगन्धा उसकी आस्तीनें पकड़कर चिपट गई। "मौसी, मैं तुम्हारे पांवों पड़ती हूं।" इस घृणित स्त्री के सामने लज्जित होने और निराशा के कारण अभिभूत होकर सिसकती हुई वह उसके आगे झुक गई।

"नहीं, नहीं, सुवर्णमूल की बहू, ऐसा मत करो!" प्रौढ़ा स्त्री ने उसे खड़ा करने की चेष्टा की और असफल होने पर वह भी नीचे झुक गई। इस विषय का उत्तर विनय से देकर उसने यह जाहिर किया कि वह उसे स्वीकार नहीं करती और दूसरे की विनय से अपने ऊपर कोई दायित्व नहीं समझती। "यह मत समझो कि मैं तुम्हारी सहायता नहीं करना चाहती। यह सब तो तुम्हारी अपनी भलाई के लिए है—जाओ जितना तेज जा सकती हो। यहां भी सुरक्षा नहीं है। हमारे सब पड़ोसियों को भी सचेत कर दिया गया है।"

"वह तो चल नहीं सकते, मौसी। शायद हम कुछ दिन पहाड़ पर ही छिपे रह सकें, यदि आप स्वर्णमूल से हमें समय-समय पर कुछ भोजन भेज देने को कह दें।"

स्त्री ने गुस्से से जवाब दिया, "इस बदन को जमा देने वाले जाड़े में तुम खुले में रात कैसे बिता सकते हो? और दिन में लकड़हारे तुम्हें देख लेंगे।"

सावधानी से खोज करने के लिए मुड़ी । उसे बहुत देर हो गई थी । क्या उन्होंने उन्हें पकड़ लिया है ? या उन्होंने कोई ऐसी चीज देख या सुन ली है जिससे डर कर वह स्वयं कहीं छिप गये हैं ? यह दूसरा विचार बुरी तरह छा गया ।

"तुम कहां हो ?" इधर-उधर टटोलते हुए उसने धीमे से कहा, "पप्पू के पिता, तुम कहां हो ?"

खुला शून्य स्थान चारों ओर से उसे घेरता आ रहा था । अत्यधिक फुसफुसाने के कारण सूजा हुआ उसका गला दर्द करने लगा, मानों किसी ने मोटा लोहे का छल्ला उस पर कस दिया हो ।

तब क्या यह भेड़ियों का काम है ! खून की गन्ध ने अवश्य ही उन्हें पहाड़ी से यहां नीचे आकृष्ट कर लिया होगा । आम तौर पर वे इतना नीचे नहीं आते किन्तु ऐसे मौकों पर वे आ भी सकते हैं । बिना किसी तर्क के उसने यह मान लिया कि इन्सानों की भांति भेड़िये भी मनुष्यों के पैदा किये दुर्भिक्ष के शिकार हो रहे हैं ।

किन्तु फिर उसने एक डरावनी व्यावहारिकता की दृष्टि से तर्क किया कि यदि भेड़ियों का ही यह काम है तो वे अवश्य ही कुछ-न-कुछ छोड़ गये होंगे—कोई जूता या हाथ । उनकी आदत सब कुछ चट कर जाने की नहीं है । उसने आसपास हर जगह ढूंढ़ा । तब उस की नजर नदी के किनारे एक पेड़ पर पड़ी । पानी के हल्के सफेद रंग के सामने वह छोटा पेड़ कुछ अजीब लगता था । उसकी दो शाखाओं के सन्धि स्थल पर एक पक्षी का घोंसला-सा नजर आता था, किन्तु वह इतना बड़ा और इतना नीचा था कि अवश्य ही वस्तुतः वह घोंसला नहीं होगा ।

वह उतार पर से भागती हुई नीचे गई। वर्फ की भांति ठण्डे और सुन्न हाथ उसके वृक्ष पर बड़ी पोटली की ओर बढ़ाए। यह सुवर्णमूल की रूईदार जाकट थी, जसकी आस्तीनें वांध कर एक पोटली-सी वना दी गई थी। उसके भीतर उसकी अपनी रूईदार जाकट सावधानी से लिपटी हुई थी। क्षण भर में ही वह सव कुछ समझ गई, मानों ख़ुद उसी ने उसे सव बातें वताई हों।

सफेद चमकदार धारा उसके पांवों के पास वह रही थी। वह अपनी फटी और लून से सनी और वचाये रखने के अयोग्य पतलून अपने साथ ही ले गया था। किन्तु उसकी जाकट पुरानी हो जाने पर भी अभी काम के लायक थी, इसलिए उसे वह उसके लिए छोड़ गया था।

वह चाहता था कि चन्द्रगन्धा को वचकर निकल भागने के लिए एक अच्छा अवसर मिल जाय। वह जानता होगा कि उसका घाव उससे कहीं अधिक गम्भीर है जितना कि वह स्वीकार करना चाहता था। उसने उसके वारे में कुछ भी नहीं कहा था। किन्तु अव जव वह पिछली बातों को सोचने लगी तो उसे याद आया कि जव वह उसे पेड़ के नीचे छोड़ कर चलने लगी थी और यह देखकर कि वह अच्छी तरह लेट गया है या नहीं उठी ही थी, कि तभी उसने अनुभव किया कि उसने वच्चों के से आग्रह से अपनी उंगलियों से उसका रखना पकड़ लिया और उससे ऐसे चिपट गया मानों चाहता हो कि वह न जाय। अव उसने अनुभव किया कि वह उसका अनिश्चय का क्षण होगा। रखने पर उसकी उंगलियों का स्पर्श इतना वास्तविक और इतना ठोस था और वह क्षण इतना सन्निकट था, किन्तु फिर भी अव वह पकड़ के वाहर हो चुका है, इस विचार ने उसे एक तरह से पागल वना दिया।

काफी समय बाद अन्त में वह फिर हिली-डुली, उसने अपनी जाकट पहनी और बटन बंद किये। सुवर्णमूल की जाकट उसने ढीली-ढाली अपने ऊपर ओढ़ ली और उसकी आस्तीनें अपनी ठोढी के नीचे बांध ली। घिस जाने के कारण पतली और सख्त हो जाने से रूईदार जाकट उसके कानों के पास अकड़ कर उभर गई।

पहले आहिस्ता से, और फिर तेज कदमों से, वह घर की ओर रवाना हो गई।

अध्याय १५

वड़े मौसा के यहां लोगों ने रात को दीया तक जलाने की हिम्मत नहीं की थी। वे लोग फुसफुसा कर बात करते, हालांकि वड़े मौसा जब इधर-उधर चलते-फिरते तो इस भय से खांसकर संकेत दे देते कि कहीं वे अपनी पुत्र वधू से न टकरा जायं और इस प्रकार उपहास का पात्र न बनें।

"क्या मैं हमेशा यह नहीं कहा करता था कि एक दिन ये लोग जरूर किसी बड़ी मुसीवत में पड़ेंगे," उन्होंने आहिस्ता से गुनगुना कर कहा।

बड़ी मौसी ने अपनी पुत्रवधू को धीमी आवाज में फटकारा, "सारे दिन सुवर्णमूल की पत्नी से कानों-कानों में बातें करना, लोगों की आंख चूकी कि वहां भाग जाना! अब देख रही हो तमाशा! हो सकता है, वे लोग आकर तुम्हें भी पकड़ ले जायं। और यदि एक बार भी वे तुम्हें 'क्रान्ति-द्रोही' कह दें तो तुम जिन्दा रहने की आशा करती हो? तुम सोचती हो, वे सिर्फ मजाक में ही कहते हैं?"

हिरण्मय की पत्नी भय के मारे रोने लगी।

"जब वे लोग यहां घर की तलाशी लेने के लिए आये, तो इस का अर्थ यह है कि वे दोनों शायद अब भी जिन्दा हैं और कहीं छिपे हुए हैं," वड़े मौसा ने पक्के समझदार आदमी की भांति अटकल लगाई, "मुमकिन है, कस्बे चले गये हों और वहां उन्होंने नाव पकड़ ली हो।"

"विना अनुमति पत्र के वे नौका पर कैसे सवार हो सकते हैं ? क्या तुमने सुना नहीं था, जब वह यहां लौटी थी तो उसने क्या कहा था ? नौका के घाट पर वे कितने सवाल पूछते हैं !"

मिलीशिया के आदमी शाम को फिर आये। अन्धेरे घर में लालटेन से झांकते हुए बूढ़ा-बूढ़ी ने उन्हें लालटेनें हाथ में लिए भीतर घुसते देखा। इसके वाद वे कू का सामान एक वंहगी पर रखकर फिर वाहर निकले। हो सकता है, कू सुरक्षा के लिए रात कामरेड वोंग के यहां विता रहा हो।

मिलीशिया के आदमियों के सुवर्णमूल के कमरे की कुंडी कस कर वन्द करने का खास ख्याल नहीं किया। सारी रात वह हवा में इस कदर खड़खड़ाता रहा कि वड़ी मौसी सो नहीं सकीं और उन्होंने अपनी पुत्रवधू को आवाज दी कि वह उठ कर जाय और उसे कस कर वन्द कर दे।

"नहीं, हमें उसे हाथ नहीं लगाना चाहिए—कतई नहीं छूना चाहिए," वड़े मौसा ने घवरा कर कहा, "अगर लोगों को इसका पता चल गया तो वे समझेंगे कि हमने उन कमरों से कुछ निकाला है। और फिर जव उनको सव चीज़ें ज़ब्त कर ली गई हैं तो यदि एक भी चीज गायव पाई गई तो सारा दोष हमारे ही सिर पड़ेगा।"

दरवाज़ा भयंकरता से वजता रहा।

वड़ी मौसी उसकी आवाज सुनती-सुनती वहुत देर तक जागती रहीं। तव उन्होंने अपने पति से काना-फूंसी करते हुए कहा, "मुझे लगता है यह हवा नहीं है, जान पड़ता है वे दोनों वापस आ गये हैं।"

"वावलों की-सी वात मत करो !" वड़े मौसा ने कहा, जो खूद भी यहा सोच रहे थे।

बड़ी मौसी ने अनुभव किया कि उसने उनके बारे में ऐसे बात की है, मानों वे अभी से भूत बन गये हों। हो सकता है, वे अभी जीवित हों और तब उसका यह स्थान अभिशाप की तरह उनके लिए दुर्भाग्य का कारण बन जायगा। पश्चात्ताप से व्यथित होकर वह उनकी सारी अच्छाइयों और उनकी जवानी की बातें सोचने लगी। और सरकण्डे के सफेद फूलों से भरे नीले कपड़े के कठोर, पुराने और चपटे तकिये पर उनके आंसू गिरने लगे।

अध्याय १६

मंदिर में वोंग का कमरा एक वीरान एकान्त स्थान था, किन्तु कू को, किसानों के साथ इतने दिन रहने के बाद, वहां के साक्षरता के वातावरण के कारण वह घर जैसा लगा। कमरा लम्बा और बहुत बड़ा था, पहले वह किसी छोटे देवता का आयतन था। वेदिकाएं और मूर्त्तियां वहां से हटा ली गई थीं किन्तु युगों पुरानी धूल और मकड़ी के जाले अभी वैसे के वैसे मौजूद थे। उसका एक मात्र सुसज्जित कोना, जिसे एक बिछौने, एक बिखरे सामान से लदी मेज और कुछ कुर्सियां एवं बचों ने सोने के कमरे और दफ्तर का सम्मिलित रूप दे रखा था एक तेल के दिये से रोशन था। इस छोटे-से भाग में अकेलापन, धूल और आम उपेक्षा के कारण एक ऐसी दुर्गन्ध फैली हुई थी, जिसे देहाती लोग "बूढ़े विधुर की गन्ध" कहते हैं। रात के सघन शीत में वह और भी भारी मालूम होती थी।

कू घबराया हुआ बिछौने पर बैठा था और अपने ऊपर के होंठ पर से बाल खींच रहा था। बाहर मंदिर के विशाल भवन उपद्रव के कारण गिरफ्तार किये गये लोगों को यातनाएं दी जा रही थीं।

"हाय, हाय" की व्यथित लयबद्ध चीख-पुकार सुन पड़ रही थी। "हा...य..." करके आवाज पहले धीमी हो कर विलीन होती और उसके बाद एकाएक लम्बे और पशुओं के से प्रचण्ड क्रन्दनो में परिणत हो जाती।

यह कभी सच नहीं हो सकता, कू ने सोचा। उसे लगने लगा मानो वह भूतों की एक कहानी का यात्री पात्र है और रात में एक मंदिर के दरवाजे के वाहर सायवान में उसे डाले पड़ा है। एकाएक वह कहानी पात्र मृतक व्यक्तियों के वारे में फैसला करने के लिए देवताओं के एक न्यायालय की आवाज़ से चौंक पड़ता है और प्रकाश से आलोकित उस दृश्य में झांक कर देखता है तो अपने एक मृत आत्मीय को पहचान लेता है जिसे यातनाएं दी जा रही हैं। वह चिल्ला पड़ता है और उसी क्षण सब कुछ लुप्त हो जाता है। और मंदिर में निस्तब्धता छा जाती है।

वह भी चिल्ला पड़े तो शायद यह सारा दृश्य लुप्त हो जाय। शहर में हमेशा यह कहा जाता रहा है कि साम्यवादी कभी यातनाओं का उपयोग नहीं करते। जमींदारों और सन्दिग्ध जासूसों को यातनाएं देने की सब कहानियां शत्रु के एजेण्टों द्वारा फैलाई गई झूठी खबरें हैं।

किन्तु जिस वात को ग्रहण करने में उसे सबसे अधिक कठिनाई प्रतीत हो रही थी, वह यह थी कि यातनाएं देने के इस स्टूल पर वैठे ये लोग विशुद्ध किसान माने थे। वह जानता था कि वोंग को यह पूरा विश्वास है कि ये लोग जासूसों और विध्वंसकारियों की कठपुतलियां नहीं हो सकते, जैसा कि गांव के लोगों ने उसे वताया था। इसमें शक नहीं कि रिपोर्ट में इस घटना को उस रूप में लिख देना वेहतर होगा और उसे वोंग को शर्मिंदगी से छुटकारा मिल जायगा। किन्तु यदि वोंग इन मामलों में सच-झूठ और माया-ममता की वला से इतना ऊपर है तो वेहतर होगा कि कू अपनी जिन्दगी की अभी से फिक्र करने लगे।

"खामख्वाह की कल्पनाएं मत करो," उसने अपने आप से कहा। उसे इस समय सवसे अधिक आवश्यकता वोंग पर और जो कुछ वह मानता है इस पर विश्वास करने की है। साम्यवादियों के आगमन के वाद हजारवीं दफा कू ने अपने आप से कहा, "विश्वास करो—इसी में तुम्हारा भला है।"

वुद्धिजीवियों के लिए यह विश्वास एक तरह का अफीम का नशा वन गया है जो उन्हें अत्याचार और यन्त्रणाओं को हंसते-हंसते सहने की शक्ति देता है, समस्त अशान्तिदायक विचारों और अनुभूतियों को निर्जीव और चेतना का शून्य कर देता और सामान्यतः जीवन को सह्य वना देता है।

"मैं एक कड़ी परीक्षा में से गुजर रहा हूं," उसने अपने आप से कहा। उसे अपनी मध्यवित्त वर्जुआ वर्ग की कोमल भावुकता का परित्याग करना होगा। निःसन्देह भूखे किसानों का यह उपद्रव एक आकस्मिक घटना मात्र है देश की आम तस्वीर में उसकी कोई जगह नहीं है। उसे उसके तमाम व्यथा-दायक पहलुओं के साथ पेश करना सरकारी प्रतिष्ठा के लिए हानिकर होगा और अन्ततः जनता की भलाई के भी विरुद्ध होगा। इसलिए जनता को यह वताना अत्यन्त आवश्यक है कि शत्रु के एजेंटों की साजिश से ही छटी यह एक सामान्य घटना मात्र है। उसे उपद्रवियों के मुंह से किसी न किसी तरह का एक किस्सा कवूल कराना होगा और उसे जिले के सदर मुकाम में भेजने से पूर्व ऐसा इन्तजाम करना होगा कि उसे एक निश्चित रूप दे दिया जाय और सभी लोग लगभग एक ही जैसी वात कहें।

किन्तु जव उसे चन्द्रगन्वा का खयाल आया तो उसके लिए इस प्रकार का तर्क करना मुश्किल हो गया। वह उसके भविष्य के वारे में चिन्ता अनु-भव किये विना नहीं रह सका। यदि वह पकड़ ली गई होगी और इस समय दूसरों के साथ यन्त्रणाएं भोगती हुई रो रही होगी तो, उसे सन्देह होने लगा कि वह अपने होश-हवास में रह सकेगा।

दिये की रोशनी की पहुंच से परे, कमरे के परले किनारे पर, करकराहट की आवाज से दरवाजा खुला। कू ने उचक कर उस ओर देखा, उसके मन में एक धुंधली सी आशा उठी कि शायद चन्द्रगन्वा रात को विछौना गर्म करने वाली अपनी अंगीठी लिये भीतर आती दीख पड़े, किन्तु इस ख्याल से उसे कुछ सान्त्वना भी मिली और लज्जा भी आई।

यह मिलीशिया का आदमी कामरेड छोटा चांग था और कामरेड वोंग के लिए सिगरेट लेने आया था। वह वोंग के सिरहाने के नीचे उनकी खोज करने लगा।

"जान पड़ता है आज रात कोई सो नहीं सकेगा," उसने उबासी लेते हुए शिकायत की, "कामरेड वोंग बड़ी कड़ी मेहनत करते हैं।"

"हां, उन्हें सचमुच आराम करना चाहिए," कू ने नम्रता से मुस्कराते हुए कहा, "खास तौर से जब कि उन्हें चोट लगी है।"

"उन्हें सचमुच ही आराम करना चाहिए। बस उन्हें रात भर के लिए उल्टे लटका देना चाहिए। कल वे सीधे से बातें करने लग जायंगे।"

कू ने यों ही उससे पूछा कि क्या सुवर्णमूल तान और उसकी पत्नी भी पकड़ लिये गये हैं। छोटे चांग ने कहा कि उसने अभी ऐसी कोई बात नहीं सुनी।

वोंग जब भीतर आया, उस समय बहुत देरी हो चुकी होगी। अर्धनिद्रित अवस्था में कू को पलंग तख्तों की चरमराहट और थूकने की आवाज सुनाई दी। रोशनी बुझ गई। उसके बाद खुर्राटों ने उसे कतई जगा दिया। वह आदमी ऐसा लग रहा था, मानों वह घनी काली रात को बड़े-बड़े घूंटों में पीकर गले के नीचे उतार रहा है और बीच-बीच में रुक कर एक छोटी आराम की सांस लेता है।

कू को यद्यपि अनुभव नहीं हुआ, किन्तु अवश्य ही उसे फिर किसी तरह नींद आ गई होगी, क्योंकि वह एकाएक चौंक कर उठ बैठा। पहाड़ियों पर कानों को बहरा कर देने वाली गोलियों की बौछाड़ की आवाज अब भी आ रही थी। दूसरी जो चीज उसने देखी वह यह थी कि कामरेड छोटा चांग हाथ में तेल का दिया लिये भीतर आया है।

"गोदाम में आग लग गई है, कामरेड वोंग !" छोटे चांग ने चिल्लाकर कहा।

अपनी रूईदार मोटी वर्दी में जूझते हुए वोंग ने उपट कर कहा, "दीया वुझाओ !"

किन्तु छोटे चांग को लड़ाई का कोई अनुभव नहीं था, इसलिए उसे इसे आदेश का कोई अर्थ समझ में नहीं आया और वह निश्चय नहीं कर सका कि क्या उसने ठीक-ठीक सुना है। इस गड़वड़ में कू को पट्टी से वंधे माथे के नीचे वोंग का नींद से फूला हुआ मुंह देखने की याद आई। कांपती हुई दीये के रोशनी में उस पर नारंगी रंग की एक चमक दिखाई दे रही थी। और उसे लगा कि उसने वोंग की आंखों में एक चमक देखी है जो लगभग खुशी की चमक-सी है। अवश्य ही यह सोचकर उसकी अन्तरात्मा पर से वोझ उतर गया हो कि अवश्य ही ये गुप्त राष्ट्रवादी हैं, जिनका इन सब के पीछे हाथ है।

वोंग के भागकर वाहर जाने से पूर्व ही किसी कारण से गोलियों की आवाज़ ख़त्म हो गई थी। किन्तु कुत्ते भौंक रहे थे और मिलीशिया के आदमी गांव के एक छोर से दूसरे छोर तक भाग-भाग कर घंटे वजाकर लोगों को आग की सूचना दे रहे थे। दूरी पर उन्हें "आग, आग ! आग वुझाने में सहायता दो !" की चिल्लाहट सुनाई दे रही थी।

वोंग अपना पट्टियों से वंधा सिर लिये इधर से उधर भाग रहा था और "भाइयों ! हरेक आदमी आग वुझाने में मदद देने के लिए आये ! गोदाम को वचाओ ! यह जनता का अनाज है !" की चिल्लाहट से उसका गला वैठ गया था।

किन्तु कुछ ही देर पहले की वन्दूकों की आवाज से घवड़ाई हुई भीड़ पीछे ही रुकी रही। तभी किसी ने एकाएक चिल्लाकर कहा, "अरे यह तो गोदाम में रखे पटाखे थे ! पटाखों में आग लगने से ही धमाका हुआ था !"

फौरन यह बात फैल गई और जब मंदिर के भीतर कू तक पहुंची तो उसे कुछ हौसला हुआ और वह भी आग बुझाने में मदद देने के लिए बाहर निकला।

लोग बाल्टियां तथा सभी तरह के बर्त्तन लिए नदी की ओर भागे। कुछ बड़े अध्यवसाय से काम कर रहे थे। उन्हें उस चावल से, जो उनकी अपनी मेहनत का फल था, एक निर्व्यक्तिक और स्वाभाविक प्रेम था और इस विशाल भंडार को जलते देख कर किसी कंजूस से भी अधिक उनके हृदय को पीड़ा पहुंची थी। कुछ लोग इस अप्रत्याशित घटनाचक्र पर प्रसन्न थे क्योंकि इससे दंगे में मारे गये उनके अपने आदमियों का बदला चुक गया था। फिर भी उन्होंने उत्साह का विश्वसनीय ढोंग किया, वे दूसरों को आग बुझाने के लिए पुकारते, पानी लाने के लिए नदी के किनारे की ओर भागते किन्तु अधिकतर पानी रास्ते में ही बिखेर देते।

बिखरे हुए पानी के तत्काल जम जाने से जमीन बहुत फिसलनी हो गई थी। कू लबालब भरी एक बाल्टी लाते हुए फिसल कर गिर पड़ा और बर्फ के समान ठण्डा सारा पानी एक लड़खड़ा देने वाली चोट के साथ उसी के ऊपर आ गिरा। उसकी ठोढ़ी रूई भरी एक कठोर वस्तु के कपड़े से ढके ऊपर के तलन में जा घुसी और एक क्षण तक यह समझकर कि यह उसकी अपनी टांग है, वह घबरा गया। तभी यह देखकर उसके भय का ठिकाना नहीं रहा कि वह एक लाश पर जा गिरा है, जो किसी ने वहां पड़ी रहने दी थी। ज्यों ही वह उठकर खड़ा हुआ उसके हाथ आपसे आप चश्में को ढूंढ़ने और सीधा करने के लिए अपने मुंह की ओर गये। कहीं ऐसा न हो कि वह टूट गया हो और यह आखिरी ख्याल आते ही उसकी रही-सही हिम्मत भी जाती रही। वह घटनास्थल से हटकर सिर्फ दर्शक बन कर खड़ा हो गया और पानी से सारी जाकट तरबतर हो जाने के कारण कांपने लगा।

घंटे अभी तक बज रहे थे। घंटों की अनवरत ध्वनि से पुराने जमाने जैसा आतंक फिर से जाग उठा, मानों गांव पर डाकूओं ने हमला कर दिया हो।

घने लाल रंग के प्रकाश से भरे मैदान के पार मिलिशिया के आदमी अपने लाल गुच्छे वाले भाले लिये हुए भागे। उनमें से एक ने दावा किया कि जब आग पहले-पहल लगी तो उसने एक स्त्री को छिपकर भागते हुए देखा था और उसके पीछा करने पर वह आग में घुस गई।

यह सब देखते-देखते घंटो की ध्वनि और धू-धू करती लपटों ने कू के मन में एक प्रकार का वहशियाना और आदि युगीन उल्लास जगा दिया था। "किन्तु इसी की तो मुझे तलाश है," उसने सोचा, "अपनी फिल्म के सबसे अधिक सनसनीपूर्ण रोमांचक क्षणों के लिए एक जबर्दस्त और हृदय को हिला देने वाले दृश्य की। बस कहानी को कुछ वर्ष पीछे ले जाना होगा। दिखाना होगा कि किस प्रकार पिछले शासन में भूख की ज्वाला की ताड़नाएं किसान गोदामों को लूटते और उनमें आग लगाते थे।"

तभी उसे याद आया कि साहित्यिकों के लिए प्रकाशित प्रमुख पत्रिका में स्पष्ट हिदायतें हैं कि लेखक अप्रिय अतीत का इस ढंग से चित्रण न करे कि मानों उन्हें उसमें स्वाद आता है, बल्कि उज्ज्वल नये रचनात्मक पहलू का चित्रण करें। "अन्धकार को कोसने के बजाये आलोक की प्रशंसा करें।"

जो हो, बुझती हुई आग को देखकर उसने गाली दी। गोदाम जलकर राख हो गया था। लपटों की उज्ज्वल सफेद रोशनी में उसका ढांचा स्पष्ट ड़ा था। कड़ियों पर जली हुई लकड़ी के बड़े-बड़े काले टुकड़े पक्षियों की भांति खड़े थे। ये अशुभ पक्षी, जिनका "आग के कबूतर और आग के कौए" नाम उचित था, क्रमशः मन्द होती सुनहरी रोशनी में भयानक शान्ति के साथ अपने सिर इधर-उधर फेर रहे थे।

अध्याय १७

सरकारी सुरक्षा कार्यालय से जाते हुए स्वर्णपुष्प ने अपने पति विपुलेश चौऊ से कहा, "एक मिनट ठहरो।" उसके एक कपड़े के जूते का फीता खुल गया था। उसका बटन बन्द करने के लिए वह एक पांव पर खड़ी हो गई और गिरने से बचने के लिए एक हाथ से उसकी बांह पकड़ ली।

स्वर्णपुष्प को नदी में पाई गई एक लाश की शिनाख्त के लिए कस्बे में बुलाया गया था। हो सकता है वह ऊपर से धारा में बह कर आ गई हो। उसका हुलिया सुवर्णमूल के हुलिये से हुबहू मिलता था, किन्तु सरकारी अधिकारी इसकी स्वर्णपुष्प से पुष्टि कराना चाहते थे।

विपुलेश ने अपने आप से कहा, आज का दिन उसके लिए बड़ा कठिन रहा है। नदी के साथ-साथ कस्बे तक का लम्बा सफर और पुलिस वालों के चलते हुए रास्ते में किसानों का घूर कर उन्हें देखना। और उसके बाद थाने के पिछवाड़े टीन के छप्पर के नीचे एक अकेली बिजली की बत्ती की रोशनी में एक कठोर पायेदार चौखटे के ऊपर रखी उस लाश का बीभत्स दृश्य। विपुलेश को मालूम था कि पुलिस की आंखें यह देखने के लिए उन पर लगी हैं कि लाश को देख कर उनमें किसी तरह का भाव परिवर्तन तो नहीं होता। विपुलेश अपने साले की लाश की ओर देखा और उसे आश्चर्य हुआ कि उस समय उसमें पहले से अधिक कोई नई भावना पैदा नहीं हुई। उसने अपनी पत्नी को शान्ति से कहते सुना, "मेरा भाई।"

यह पहला मौका था जबकि उसने गोली का छेद देखा था। जांघ की मांस पेशी में हुआ जख्म धुलकर बिल्कुल साफ हो गया था और छेद के ऊपर का दोनों ओर का मांस बिल्कुल रक्तहीन था। पुलिस वाले जिरह करने के लिए उन्हें बाहर ले गये। अन्त में एक कामरेड को पूरी तसल्ली हो गई और उसने उन्हें कुछ कागजों पर जो उन्होंने पढ़े नहीं थे, हस्ताक्षर करने को कहा और छुट्टी दे दी। लाश को ठिकाने लगाने के बारे में अन्तिम प्रश्न करते हुए कामरेड ने अर्थ-पूर्ण शब्दों में कहा, "अगर तुम्हारी कोई और योजना हुई तो हम बात को संभाले रखेंगे।" विपुलेश सिर हिला कर अपनी सहमति जताई उसने सोचा कि अच्छा होगा कि वे सुवर्णमूल की लाश का अपने गांव न ले जायं।

जिस समय स्वर्णपुष्प अपने जूते का बटन बन्द करने के लिए उस पर झुकी हुई थी तो वह आहिस्ता से सिर घुमाकर अपने मुंह के नजदीक ले गया। वह उसकी तरफ देख नहीं रहा था, किन्तु वह उसके इस सहानुभूति प्रदर्शन पर सचेत हो गई थी और उसका चेहरा एक ऐसी तन्मय अन्तर्दृष्टि में डूब कर और भी अधिक भावना शून्य हो गया था, जिसने उसकी भावनाओं को, बल्कि भावनाहीनता को ढंक दिया था।

अपने भाई की लाश देख कर यदि उसे कोई आघात लगा भी होगा तो सब ओर फैली विचित्रता से आच्छन्न होने के कारण उसने उसे संभाल लिया। सबसे बढ़ कर अभूत था सायंकाल के समय कस्बे में अपने पति के साथ ही घूमना। वे शायद ही कभी इकट्ठे बाहर जाते हों। अभी-अभी गांव से कस्बे को आते हुए लम्बे सफर में साथ आने वाले दो पुलिस कर्मचारियों की अनुभव उपस्थिति उन पर एक जुल्म की तरह छाई हुई थी, किन्तु अब वे दोनों बिल्कुल अकेले थे। विपुलेश ने इस बात का ध्यान रखा कि जो आनन्द वह अनुभव कर रहा है कहीं वह छलक कर बाहर प्रकट न हो जाय। यदि वह

यह जान पाता कि उसके इस आनन्द का कोई और भी साथी है तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहता।

वे घाट पर पहुंचे, जहां नीचे प्रकाश से आलोकित सब नावें धुंधली रोशनी वाले अन्धकार में झिल-मिल झिल-मिल नाच रही थी। एक नाव के सुनहरे रंग के अन्दरूनी भाग में उन्होंने चटाई की दीवारों के भीतर गड़ा एक बांस का डंडा देखा जिस पर लाल रंग की मीनाकारी की भोजन खाने की तीलियों का एक गुच्छा लटक रहा था। एक ओर किश्ती में कपड़े सुखाने की रस्सियों के बीच से तेल के दिये की रोशनी नजर आ रही थी। एक नाव अन्धेरा था, उसके किनारे एक छाया-मूर्ति खड़ी नदी में पेशाब कर रही थी।

बंहगियों पर सामान और असबाब लादे कुली चौड़ी, उथली और अस्थिर सफेद पत्थर की सीढ़ियों पर, जो पीली बिजली की रोशनी के नीचे स्वप्न की भांति प्रतीत होने वाला पत्थरों का एक प्राचीन ढेर थीं, सावधानी से बचकर कदम रख रहे थे। राइफलधारी मिलीशिया के सैनिक नदी के उस पार से चिल्लाकर तरह-तरह के सवाल पूछते थे। नावों के मालिक, जो देखने में लुटेरे-से मालूम होते थे, रूईदार जाकटें पहने, जिनके आगे के बटन खुले होते और अपने चमड़े के स्लीपरों से छपाक-छपाक करते अकड़ते हुए सीढ़ियों से नीचे उतरते।

घाट के बाद नदी का तट अन्धेरा और निर्जन था। नव वर्ष के कारण दूकानें अब भी बन्द थीं। किन्तु कुछ और नीचे कुछ हो रहा प्रतीत होता था और उसके इर्द-गिर्द भीड़ जमा थी। स्वर्णपुष्प और उसका पति देखने के लिए खड़े हो गये। वहीं खड़े एक आदमी ने समझाया, "यह मांझी है, जो नव वर्ष दिवस से पहले दिन शाम को शराब में धुत्त होकर नदी में जा गिरा। अजीब मौके पर उसकी मौत हुई, ठीक नव वर्ष की पूर्व सन्ध्या को। इसलिए ये लोग यहां नदी के किनारे शोक मना रहे हैं।

करीव सात या आठ शोक मनाने वाले आदमी एक पंक्ति में आगे झुके हुए थे हरेक ने अपने से अगले आदमी की कमर पकड़ी हुई थी। शोक मनाने वाला मुख्य व्यक्ति जो सबसे आगे झुका हुआ था, सम्भवतः डूबे आदमी का लड़का था। एक सफ़ेद रस्सी पर्दा शोक मानने वालों के ऊपर लिपटा हुआ था और लड़के के माथे पर उसकी गांठ लगी हुई थी। रोना-धोना अवश्य ही काफी देर से चल रहा होगा। आदमियों के गले रोने से वैठ गए थे और स्त्रियां भी सिर्फ हल्की आवाज में रो रही थीं। किन्तु उनमें से एक व्यक्ति रह रह कर पुकारने के ढंग की अजीव ऊंची आवाज में चीख उठता और चीख उनके सिरों के उपर से होती हुई उदास और खिन्न हवा में विलीन हो जाती। लड़के का सिर क्रन्दन के आवेग के साथ एक लय में आगे झुकता और क्रमशः अधिकाधिक नीचे-नीचे होता जाता। उसके आगे जमीन पर मृत व्यक्ति की अस्थियों को टोकरी पड़ी थी जिसमें धूप और अगर वत्तियां भी रखी थीं।

कुछ दूर एक चौकी पर और भी वहुत सी धूप और अगर वत्तियां रखी थीं। और एक जोड़ा वड़ी सफेद मोमवत्तियां जल रही थीं। दो आदमी, जो न वौद्ध भिक्षु थे और न शिनतो धर्म के पुजारी, चौकी के सिरे पर पास-पास वैठे थे। ये प्रसिद्ध वौद्ध मन्त्र पढ़ने वाले थे। दोनों की उम्र तीस वर्ष के लगभग थी और अपने भद्दे लम्बे चोगों में वे दूकानों के गुमाश्ते प्रतीत होते थे। वे दोनों मिलकर मन्त्रोच्चारण कर रहे थे और जोर-जोर से पढ़ने वाले स्कूल के वच्चों की भाँति उनके शरीर इधर-उधर घूम रहे थे। ये लम्बी और असम्वद्ध अर्थप्रार्थनाएं संस्कृत के वजाय चीनी भाषा में थीं, किन्तु स्वर्णपुष्प कहीं-कहीं एकाध पंक्ति ही समझ पाती थी। उसमें मृत व्यक्ति का, उसके निवासस्थान का, उसकी आयु और उसकी पत्नी के परिवार की जाति का और उनकी सन्तानों व उनके लिंग का उल्लेख था। इन सवका पूर्ण सन्तोष साथ वर्णन करने के वाद उसमें प्रार्थना की गई थी कि दिवंगत व्यक्ति जल्दी ही मानव योनि में फिर से जन्म ग्रहण करे और अच्छा हो कि वह भी पुरुष के रूप में।

"मैं भी अपने भाई के लिए यही अनुष्ठान कराऊंगी," स्वर्णपुष्प ने एकाएक अपने मन में कहा, 'अभी नहीं, बाद में जब कि यह 'क्रान्ति-विरोधी' की चर्चा खत्म हो जायगी।" उसने अनुभव किया कि इससे वह उन असाधारण दुःखद परिस्थितियों से मुक्ति पा जायगा, जिन में कि उसकी मृत्यु हुई थी और इस प्रकार वह और सामान्य लोगों के समान ही हो जायगा। प्रार्थना का ही वह प्रभाव प्रतीत होता था। अन्धकार से आवृत तट पर कांपती हुई मोमबत्ती की रोशनी के पास जैसे-जैसे वह एक-रस मन्त्रोच्चारण चल रहा था वैसे मृत व्यक्ति पुनः आहिस्ता-आहिस्ता मानव सागर में उतरता जा रहा था।

उसने भाई की आत्मा से तत्काल वहीं प्रतिज्ञा की कि वह भी इस प्रार्थना का प्रबन्ध करेगी और उसका मातम उचित रीति से करने के लिए उसके उत्तराधिकारी के रूप में एक लड़के को दत्तक बनाने का इन्तजाम करेगी। वह लड़के का पालन करेगी और बाद में उसका विवाह भी करेगी ताकि उसके वंश की भाई की शाखा कहीं निर्मूल न हो जाय। चोऊओं की भांति तान परिवार के प्रति भी वह अपने कर्त्तव्य का पालन करेगी। अपने भाई के लिए जो कुछ वह करेगी उसका ख्याल ही उसकी आंखें आंसुओं से डबडबा आईं। उस पर विपत्ति आने के बाद पहली बार इस समय सचमुच उसे उसके लिए दुःख हुआ।

उत्तराधिकारी के तौर पर गोद लिया जाने वाला बच्चा भी तान ही होना चाहिए। उसने सोचा, शायद बड़ी मौसी अपना एक पोता देने के लिए राजी हो जायं क्योंकि उनके अनेक पोते हैं।

अभी बरफ पड़ी ही थी। बड़ी मौसी सुबह ही सुबह अपनी शरीर सेंकने वाली अंगीठी लिए, जिसमें राख के नीचे जलते हुए कोयले दबे थे खेत में चली गई। गांव के दरवाजे पर, जहां दिन-रात पहरा रहता था, क्योंकि अभी आतंक खत्म नहीं हुआ था, किशोर आयु का एक मिलीशिया

का सिपाही तैनात था। उनकी अंगीठी देखकर धीमी आवाज में मजाक करते हुए उसने कहा,

"फिर गोदाम को आग लगाने चली हो, बड़ी मौसी ?"

"बेकार मत बको," बड़ी मौसी ने घबराकर इधर-उधर देखते हुए कहा, "मेरा पोता इतना अधिक बीमार है और तुम्हें मजाक की सूझी है।"

यह उनका सबसे छोटा पोता था। हर कोई कहता था, उसे किसी ने कुछ कर दिया है, या उसने किसी भूत-प्रेत का रास्ता काटा है और उसके क्रोध का शिकार हो गया है। गांव में इतनी अधिक संख्या में मौतें देखते हुए इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं थी।

किन्तु बड़ी मौसी ठीक-ठीक जानती थी कि असल बात क्या है।

अग्निकांड से अगले दिन, जब गांव के लोगों का मलवा हटाने का काम सौंपा गया था तो गोदाम की दो दीवारों के जलकर भीतर की ओर झुक जाने और आपस में मिलने से बनी गुफा-सी के भीतर एक लाश पाई गई थी। वह लाश बैठी हुई मुद्रा में थी, और ऊपर से नीचे तक चिकनी गुलाबी लाल रंग की थी। जलकर काले पड़ गये मलवे के बीच में उसका रंग खूब निखरा हुआ प्रतीत होता था। बड़ी मौसी को ऐसा लगा, दर असल उन सभी को जो वहां थे ऐसा ही लगा, कि यह बैठी हुई लाश उन गंजे छरहरे अर्हतों की मूर्तियों में से किसी की याद दिलाती थी, जो मंदिर के दोनों ओर कतार में रखी थीं। वह उससे बुरी तरह घबरा और डर गई थी। उन्हें यह भी याद था कि बौद्ध भिक्षुओं को मरने के बाद एक बड़े मटके में बैठी मुद्रा में दफनाया जाता है। यह बात बड़ा अजीब थी और मानों कह रही थी कि सुवर्णमूल की पत्नी का सम्बन्ध किसी दिव्य आत्मा से था—क्योंकि यह लाश एक स्त्री की थी और वह जानती थी कि यह उसी की है। यह चन्द्रगन्धा अवश्य ही अपने पिछले जन्म में एक सिद्ध भिक्षुक रही होगी।

उन्होंने जान लिया था कि यह चन्द्रगन्धा है, किन्तु और सब लोगों की भांति, उन्होंने अपनी ज़बान बन्द रखी। दंगे में भाग लेना और बात थी और गोदाम में आग लगाना और। यदि आमतौर पर यही सन्देह किया जा रहा है कि जिसने यह काम किया था, वह उन्हीं में से कोई था तो भी सबसे अच्छा यही था कि मामले को अस्पष्ट ही रहने दिया जाय। कौन जानता है कि किस शक्ल में इसकी सजा भोगनी पड़े। हो सकता है कि जापानियों के जमाने की भांति सारा गांव ही तहस-नहस कर दिया जाय।

यहां तक कि किसान संघ के सभापति तक ने कह दिया था कि उसके लिए यह कह सकना मुश्किल है कि यह कौन है। तभी कामरेड वोंग घटना स्थल पर पहुंचा और जोर देकर बोला कि यह चन्द्रगन्धा ही है। पिछला रात गोदाम पर पहरे के लिये तैनात मिलीशिया के आदमी ने भी वहां आकर जोश के साथ अपना वही किस्सा दोहराया कि उसने गोदाम के आस पास संदिग्ध परिस्थितियों में चक्कर लगाते किसी व्यक्ति का पीछा किया था और वह डर कर जलती हुई इमारत में ही घुस गया।

"कोई आश्चर्य नहीं, यह सुवर्णमूल तान की पत्नी ही हो" किसान संघ के सभापति ने अन्त में स्वीकार करते हुए कहा, "वह तीन वर्ष तक शहर में काम करती रही है। कौन जाने वह किसी बुरी संगत में पड़ गई हो, जासूसों की या क्वोमिन्तांग एजेंटों की? अभी उसे आये मुश्किल से एक ही महीना हुआ था कि घटना घट गई। जरूर किसी खास उद्देश्य से वह यहां भेजी गई होगी"

तभी बड़ी मौसी बीच में बोल उठी, "मैं किसी की मरने के बाद बुराई नहीं करती, पर वह तो सचमुच लोमड़ी थी लोमड़ी, अपने मर्द को तबाह करने वाली। मैं हमेशा ही कहती रही हूं कि शहर में अकेली छोड़ देनें पर उसका भरोसा नहीं किया जा सकता। जरा किसी बदमाश के, किसी क्रांति-द्रोही के

चक्कर में पड़ गई होगी। बेचारा सुवर्णमूल—उसे वह कैसा नकेल पकड़ कर रखती थी। उसके वापस आने के बाद, देखा, वह कितना बदल गया और पहले कैसा भला और प्रगतिशील था। कामरेड वोंग से पूछकर देखा। और किस बुरी तरह उसने अपनी लड़की को पीटा! जैसे सौतेली मां हो! काम-रेड कू से पूछ लो। वे खूब जानते हैं और जब हमारा झगड़ा हुआ तब उसने मुझे जो-जो बातें कहीं, राम रे राम! मैं तो उसके बाद कभी उससे एक लफ्ज़ भी नहीं। कभी भी नहीं। किसी से पूछ लो।"

उसके बाद जब वह घर लौटी तो उन्होंने देखा कि उनका पोता बुखार में पड़ा है। उन्होंने अपनी पुत्रवधू हिरण्मय की पत्नी से कुछ भी नहीं कहा, वह उसे डराना नहीं चाहती थी। किन्तु अपने हृदय में उन्होंने तुरन्त ही चन्द्रगन्धा को लक्ष्य कर कहा, "अब नाराज मत होओ, सुवर्णमूल की बहू। जब तुम जीवित थी तो मानवी थी मृत्यु के बाद तुम देवी हो गई हो।" तुम इतनी छोटी नहीं बनोगी कि किसी बच्चे को पीड़ित करो। और वह भी अपने ही भतीजे को।"

बच्चे का ज्वर रात को और भी बढ़ गया था। आज सुबह बड़ी मौसी चन्द्रगन्धा की कब्र पर धूप-दीप जलाकर उसके आराधन का दृढ़ संकल्प लेकर निकली थी, चाहे कोई उन्हें ऐसा करता देख ही ले।

"वह तुम्हारा भतीजा है, याद रखो," वह चन्द्रगन्धा को लक्ष्य कर गुनगुनाती रही, "हो सकता है, मैंने कभी तुम्हें पीड़ा पहुंचाई हो, परन्तु इसकी मां ने कभी नहीं पहुंचाई। तुम दोनों बड़ी घनिष्ट सहेलियां थी क्या तुम्हें याद नहीं? बच्चे को बख्श दो और जब वह बड़ा होगा तो नव वर्ष के दिन और सभी त्यौहार पर तुम्हारी कब्र पर धूप-दीप जलायेगा। वह तुम्हारे बेटे की तरह रहेगा।"

नहीं ? बच्चे को बख्श दो और जब वह बड़ा होगा तो नव वर्ष के दिन और सभी व्यौहारों पर तुम्हारी कब्र पर धूप-दीप जलायेगा। वह तुम्हारे बेटे की तरह रहेगा।

रास्ते के किनारे बरफ से लदे बांसों में घने मोटे सफेद पत्ते थे। हवा का झोंका आने पर इन पत्तों का नीचे का हरा भाग उस सफ़ेदी में बुनती-जैसा दिखाई देता। उनकी अंगीठी की राख उड़कर उनके मुंह पर आ पड़ी वह जलते हुए कोयले से धूप-दीप जलायेगी। कड़कड़ाते जाड़े से उनकी आंखें और नाक दोनों बह रहे थे। अपनी रुईदार जाकट के नीचे जिस बांह में उन्होंने रुपहले कागज की लम्बी बल लटकाई थी, वह थक गई। उन्हें बेलकर कुछ ऊपर उठाकर और अपने शरीर से दूर रखना पड़ रहा था ताकि वह न तो किसी को नजर आये और न ही कुचली जाय। भूखे पक्षियों की चहचहाहट रुई के समान बर्फ से ढके चारों ओर की निस्तब्धता में आश्चर्यजनक रुप से प्रतीत होती थी। उनकी आंखें चन्द्रगन्धा की कब्र की खोज के लिए सारे खेत पर घूम रही थी। वह जानती थी कि इस कब्र को खोज निकालना होगा। उसकी लाश को एक चटाई में लपेटकर एक कम गहरे गढ़े में दबा दी गई थी। उसे सिर्फ मिट्टी से ढक दिया गया था, उस पर कोई चबूतरा नहीं बनाया गया था।

जहां दो पगडंडियां फटती थीं, वहां कुछ दूरी पर उन्हें एक पीला-सा जमीन का टुकड़ा नजर आया। "क्या यही वह है ?" उन्होंने सोचा, "यह बर्फ के बीच में से दीख पड़ने वाली जमीन नहीं हो सकती। क्या ऐसा हो सकता है ? उसकी कब्र पर बर्फ नहीं पड़ी!" भय से उनके घुटने जवाब देने लगे।

गुर्राते हुए कुत्तों की आवाज, हल्की किन्तु बिलकुल स्पष्ट, सुनाई पड़ रही थी। उन्होंने अपनी आंखें पोंछीं और देखा कि वह उभरा हुआ पीला टुकड़ा दरअसल कब्र के ऊपर आपस में लड़ते कुत्तों का एक झुंड था।

उन्होंने अवश्य ही कब्र खोद ली होगी और अपने पंजों से उन्हें खोल लिया होगा। उन्हें लगा जैसे उन कुत्तों के झुंड के बीच से चटाई का एक कोना दीख पड़ा हो।

"यह पाप है। यह पाप है।" बड़ी मौसी वहां से हटती हुई चिल्लाईं और उन पर बड़े सन्तोष का एक भाव छा गया। "वह निश्चय ही किसी को कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकती" उन्होंने सोचा, "वह तो अपनी हड्डियों तक की रक्षा नहीं कर सकती।

कू हर रोज कामरेड वोंग के सामने डेस्क पर बैठता। वोंग को, जिसकी पट्टियां अब मैली होती जा रही थीं, बहुत-सी रिपोर्ट लिखनी थीं और कू भी अपनी फिल्म की चित्र कथा लिखने में व्यस्त था। उसने आखिरकार अपनी बांध की कहानी में अग्निकांड को किसी न किसी तरह घुसेड़ ही दिया था। यह कोई मामूली बात नहीं थी, क्योंकि बांध जल ही कैसे सकता है?

कहानी का रूप अब इस प्रकार था; एक इंजीनियर और किसानों ने अपनी हर बरस की बाढ़ की समस्या का हल निकालने के लिए नदी पर बांध बनाकर परस्पर सहयोग किया। किन्तु इसी गांव में एक जमीदार रहता था जो भूमि सुधार के बाद भी सरकार की उदारता के फलस्वरूप बचा रह गया था। और सब लोगों की भांति उसे भी अपनी जमीन का टुकड़ा दे दिया गया था। किन्तु अब तक वह किसी युक्ति से दूसरों की अपेक्षा अच्छी अवस्था में रहता था। वह छिप-छिपकर खूब दावतें उड़ाता और जब कोई अधिकारी एकाएक बुलाता तो वह झटपट तश्तरियां वहां से हटा देता। और वह मोटी तोंद वाला पुराना आदमी अभी तक एक सुन्दर कन्या के सहवास का उपयोग कर रहा था, जो सम्भवतः उसकी रखेल होगी। किन्तु उन दोनों के आपसी सम्बन्धों पर जोर न देना ही अधिक अच्छा है क्योंकि जनवादी शासन में रखैल वृत्ति नहीं जारी रखनी चाहिए। उसका मुख्य काम था टिमटिमाते

दिये की रोशनी में शोभा बढ़ाने के लिए मेज के पास बैठना और अधिकार-च्युत जमींदार को विविध राजद्रोहात्मक प्रवृत्तियों के लिए वातावरण बनाना। वह कुछ-कुछ चन्द्रगंधा के समान दीख पड़ेगी। अग्निकांड के बाद गोदाम म पाई गई लाश को देखने के लिए कू नहीं गया था, इसलिए चन्द्रगन्धा की स्मृति उसके दिमाग में विकृत नहीं हुई थी। फिल्म में गर्मी का मौसम दिखाया जायगा और लड़की ने एक धारीदार सूती समर की कमीज पहनी होगी। वह सजावट में थैले जैसी होगी, किन्तु धारियों से उसमें आश्चर्यजनक खूबसूरती आ जायगी।

जमींदार के पास एक जासूस आया और उसने उसे एक जनरल का पद देकर राष्ट्रवादी सेना के लिए उसकी सेवाएं प्राप्त कीं। अपनी रखैल के साथ जमींदार एक रात बांध को बम से उड़ाने के लिए घर से बाहर निकल पड़ा। एक सतर्क मिलीशिया के सिपाही ने उन्हें ठीक समय पर देख लिया, किन्तु वे उनकी पहचान में आये बिना किसी तरह निकल गये।

जब जासूस ने उस पर जोर डाला कि वह कुछ करके दिखाये तो निरुपाय होकर जमींदार ने सरकारी गोदाम में आग लगा दी। वह रंगे हाथों पकड़ा गया, उसके साथ ही उसकी रखैल भी थी जो एक छोटी पोटली लिए उसके पीछे-पीछे भाग रही थी। वे शायद यह काम करके देश से बाहर भाग जाने की सोच रहे थे। पोटली में और कीमती चीजों के साथ-साथ राष्ट्रवादी सेना के जनरल के रूप में उसके कीमती प्रमाण पत्र भी थे।

कू इस कहानी पर बड़ा खुश था। यह एक सुन्दर कृति थी। किन्तु आग बहुत मामूली होनी चाहिए। अभी एक दो बोरी चावल ही जला होगा कि एक पहरेदार "आग! आग! षड्यन्त्रकारी!" चिल्लाता हुआ वहां पहुंच जाय। अन्यथा स्थानीय मिलीशिया की कार्य कुशलता पर यह बहुत बड़ा कलंक होगा। क्रुद्ध अखबार उसकी आलोचना करते हुए कहेंगे कि "खुद जनता

के अपने संगठन पर व्यंग्य के इस अस्त्र का विना विचारे अन्धाधुंध इस्तेमाल किया गया है... ..रचनात्मक आलोचना की सीमा का उल्लंघन किया गया है।" उस दशा में फिल्म पर प्रतिबन्ध तो नहीं लगाया जायगा, क्योंकि उससे जनता का ध्यान बहुत ज्यादा आकृष्ट हो जायगा, किन्तु उसे एकाएक प्रदर्शन के बीच में बन्द कर वापस ले लिया जायगा और उसके साथ ही अपना नाम करने की उसकी सम्भावना हमेशा के लिए खत्म हो जायगी।

सैनिकों के परिवारों के यहां जाकर उन्हें उपहार भट करने का कार्य-क्रम स्थगित कर दिया गया था। क्योंकि पटाखे आग में ही नष्ट हो गये थे और अब इतनी देरी हो चुकी थी कि एकदम उनकी जगह नये पटाखे लाना असम्भव था। पहले मास की पांचवी तारीख के बाद जब दुकानें नव वर्ष की छुट्टी के उपरान्त फिर खुलीं तो कामरेड वोंग ने किसानों से फिर पैसा जमा किया और नये पटाखे खरीदने के लिए खास तौर से कस्बे में गया।

दूसरे दिन सुबह ही लोग गांव के सरकारी दफ्तर के सामने इकट्ठे हुए। परेड करने वाले कतार बांधे खड़े हो गए। सबसे आगे "धान के अंकुरों का गीत" गाने वाला दल चला। उसके बाद चले उपहार वाहक। घंटे और थालियां बजने लगीं। नर्त्तकों के दल ने अपने बंधे हुए रोजमर्रा के अभ्यस्त करम उठाने शुरू किये, पुरुष और स्त्री नर्तकों की दो अलग-अलग कतारें अगल-बगल थीं। ठंडे और हलके प्रभात कालीन प्रकाश में उनके रंग से पुते गाल अत्यधिक लाल दीख पड़ते थे। उपहारवाहक अपने बंहगियों के भार से झुककर चल रहे थे और फिर रह-रहकर अपनी कमर सीधी करते थे। लम्बाई में बीचों बीच से कटे हुए पीले और फूले हुए सुअरों के टुकड़े बंहगियों के सिरों पर बंधे हुए हिल-डुल रहे थे। सुअरों के सिर काटकर थालों में रखे हुए थे और उनके कानों में गुलाबी कागज के फूल फैशनेबुल तरीके से खोंसे हुए थे। दूसरे थालों में नववर्ष के केक थे, ईंटों की तरह कड़े और एक के ऊपर एक सजा कर रखे हुए।

कामरेड वोंग ने देखा कि दंगे में लोगों के मारे जाने से नर्तकों की

दोनों कतारें बहुत छिदुरी और विरल प्रतीत हो रही हैं। उसने कामरेड छोटे चांग को इशारा किया और वह इर्द-गिर्द खड़े होकर समाहरो को देखने वाले वयोवृद्ध लोगों के पास गया और उनसे कुछ बातचीत की। तुरन्त ही बूढ़े-बूढ़ियों का दल असहाय भाव से मुस्कराते और एक दूसरे को धक्के देता हुआ डरता झिझकता नर्तकों के दल के पास जा पहुंचा। बड़े मौसा और बड़ी मौसी भी उनमें थे। उनके चेहरों पर उनकी आयतन अर्ध-क्रोध और अर्ध-स्मित की मुद्रा से झुर्रियां पड़ रही थीं और उन्होंने अपनी बांहें कड़कड़ाहट के साथ आगे पीछे फेंकते हुए "धान के अंकुरों के गीत" का नाच नाचना शुरू कर दिया।

कामरेड वोंग ने घमकर देखा कि कू उसकी बगल में खड़ा है। बड़ी मौसी जब नाचती हुई उसके पास से गुजरीं तो उसने अपना सिर झटके से हिलाया। "सड़सठ बरस की हो गई, इस साल, "उसने मुस्कराते हुए कहा "और फिर भी इतना उत्साह है।"

"इस नव वर्ष से अड़सठ वर्ष," बड़ी मौसी ने मानों कुछ नाराज होकर उत्साह से उसकी भूल का सुधार किया।

"अड़सठ वर्ष," वोंग ने अभिमान से कू की ओर देखकर दोहराया।

ज्यों ही वे लोग खुले मैदान में घुसे, नाच उस समय तक के लिए बन्द कर दिया गया जब तक कि वे पड़ोसी गांव के पास न पहुंच जायं। किन्तु उपहारवाहक अपनी बंहगियों से लटकती सूअरों की लाशों के साथ ताल देते हुए अपनी नजाकत भरी चाल चलते रहे। पीले भूरे मैदान के आर-पार जाने वाली टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडी पर वे मंद गति से चलते रहे। घंटे और थालियां जोरों से बजते रहे।

"चोंग, चोंग,! ची चोंग ची !
चोंग, चोंग ! ची चोंग ची" !

किन्तु उस अनन्त खुले आकाश के नीचे वह शब्द दबा हुआ और आश्चर्यजनक रूप से हल्का था।